

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

४१/२

ओहनिज्जुत्ति
बीइअं मूलसूत्तं/२

डो. मुनिश्री दीपरत्तसागर

M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुतमहर्षि

Date: --/--/2012

Jain Aagam Online Series-41/2

ओहनिज्जुत्ति-गंथाणुक्कमो

कमंको	विसय	सुत्तं	गाहा			अणुक्कम	पिट्ठं
			निज्जुत्ति	मास	पक्खेव		
१	मंगल, पत्थावणा	—	१-३	१-१४	४-२५	१-२०	२-३
२	पडिलेहण-द्वार	—	४-३३०	१५-१९१	२६-२७	२१-५४६	३-२९
३	पिंड-दार	—	३३१-६६६	१९१-	२७-३०	५४७-१००६	२९-५१
४	उवहिपमाण-दार	—	६६७-७६१	—	—	१००७-१११४	५१-५६
५	अणाययणवज्जं-	—	७६२-७८६	—	—	१११५-११३९	५६-५७
६	पडिसेवण-दारं	—	७८७-७८९	—	—	११४०-११४२	५७-
७	आलोअण-दारं	—	७९०-७९३	—	—	११४३-११४६	५७-
८	विसोहि-दारं	—	७९४-८०७	—	—	११४७-११६०	५७-५८
९	उवसंहार	—	८०८-८१२	—	—	११६१-११६५	५८-

४१/२

ओहनिज्जुत्ति

- गाथा-[१] प्र** दुविहोवक्कमकालो सामायारी अहायं चेव ।
सामायारी तिविहा ओहे दसहा पयविभागे ॥
- गाथा-[२] प्र** नवमयपच्चक्खाणाभिहाणपुव्वस्स तइयवत्थूओ ।
वीसइमपाहुडाओ तओ इहानीणिया जइया ॥
- गाथा-[३] प्र** सो उ उवक्कमकालो तयत्थनिव्विग्घसिक्खणत्थं च ।
आईय कयं चय पुणो मंगलमारंभये तं च ॥
- गाथा-[४] नि** अरहंते वंदित्ता चउदसपुव्वी तहेव दसपुव्वी ।
एकारसंगसुत्तत्थधारए सव्वसाहू य ॥
- गाथा-[५] नि** ओहेण उ निज्जुत्तिं वुच्छं चरणकरणाणुओगाओ ।
अप्पक्खरं महत्थं अनुग्गहत्थं सुविहियाणं ॥
- गाथा-[६] भा** जुम्मं ओहे पिंड समासे संखेवे चेव होंति एगट्ठा ।
निज्जुत्तित्ति अत्था जं बद्धा तेण निज्जुत्ती ॥
- गाथा-[७] भा** वय समणधम्म संजम वेयावच्चं च बंभुत्तीओ ।
नाणाइतियं तव कोहनिग्गहाई चरणमेयं ॥
- गाथा-[८] भा** पिंडविसोही सभिई भावण पडिमा य इंदियनिरोहो ।
पडिलेहण गत्तीओ अभिग्गहा चेव करणं तु ॥
- गाथा-[९] भा** चोदगवयणं छट्ठी संबंधे कीस न हलइ विभत्ती ।
तो पंचमी उ भणिया किमत्थि अन्नत्थि अनुओगा ॥
- गाथा-[१०] भा** चत्तारि उ अनुओगा चरणे धम्म गणियाणुओगे य ।
दवियाणुजोगे य तहा अहक्कमं ते महिङ्गीया ॥
- गाथा-[११] भा** संविसयबलवत्तं पुण जुज्जइ तहविअ महिङ्खिअं चरणं ।
चारित्तरक्खणट्ठा जेणिअरे तिन्नि अनुओगा ॥
- गाथा-[१२] भा** चरणपडिवतिहेउं धम्मकहाकालदिक्खमाईआ ।
दविए दंसणसुद्धी दंसणसुद्धस्स चरणं तु ॥
- गाथा-[१३] भा** जहं रण्णो विसएसुं वयरे कणगे अ रयय लोहे अ ।
चत्तारि आगरा खलु चउण्ह पुत्ताण ते दिन्ना ॥
- गाथा-[१४] भा** विंता लोहागरिए पडिसेहं सो उ कुणइ लोहस्स ।
वयरआईहि अ गहणं करिंति लोहस्स तिन्नियरे ॥
- गाथा-[१५] भा** एवं चरणंमि ठिओ करेइ गहणं विहीइ इयरेसिं ।
एएण कारणेणं हवइ उ चरणं महङ्गीअं ॥
- गाथा-[१६] भा** अप्पक्खरं महत्थं महक्खरऽप्पत्थ दोसुऽवि महत्थं ।
दोसुऽवि अप्पं च तहा भणिअं चउविगप्पं ॥
- गाथा-[१७] भा** सामायारी ओहे नायज्झयणा य दिट्ठिवाओ य ।
लोइयअकप्पासाई अनुक्कमा कारणा चउरो ॥
- गाथा-[१८] भा** बालाईणऽणुकंपा संखडिकरणंमि होअगारीणं ।
ओमे य बीयभत्तं रण्णा दिन्नं जणवयस्स ॥

- गाथा-[१९] भा** एवं थेरेहिं इमा अपावमाणाण पयविभागं तु ।
साहूणऽणुंकपट्ठा उवइट्ठा ओहनिज्जुत्ती ॥
- गाथा-[२०] नि** पडिलेहणं च पिंडं उवहिपमाणं अणाययणवज्जं ।
पडिसेवण मालोअण जह य विसोही सुविहियाणं ॥
- गाथा-[२१] नि** आभोग मगगण गवेसणा य ईहा अपोह पडिलेहा ।
पेक्खण निरिक्खणाविय आलोय पलोयणेगट्ठा ॥
- गाथा-[२२] नि** पडिलेहओ य पडिलेहणा य पडिलेहियव्वयं चेव ।
कुंभाइसु जह तिवं परूवणा एवमिहयंपि ॥
- गाथा-[२३] नि** एगो व अणेगो वा दुविहा पडिलेहणा समासेणं ।
ते दुविहा नायव्वा निक्कारिणा य कारिणा ॥
- गाथा-[२४] नि** असिवाई कारिणा निक्कारिणा य चक्कथूभाई ।
तत्थेगं कारिणं वोच्छं ठप्पा उ तिनियरे ॥
- गाथा-[२५] नि** असिवे ओमोयरिए रायभए खुहिअ उत्तमट्ठे आ ।
फिडिअ गिलाणाइसए देवया चेव आयरिए ॥
- गाथा-[२६] भा** संवच्छरबारसएण होही असिवंति ते तओ णिति ।
सुत्तत्थं कुव्वंता अइसयमाईहि नाऊण ॥
- गाथा-[२७] भा** अइसेस देवया वा निमित्तगहणं सयं व सीसो वा ।
परिहाणि जाव पत्तं निग्गमणि गिलाणपडिबंधो ॥
- गाथा-[२८] भा** संजयगिहितदुभयभट्ठिआ य तह तदुभयस्सवि अ पंता ।
चउवज्जण वीसुं उवस्सए य तिपरंपराभत्तं ॥
- गाथा-[२९] भा** असिवे सदसं वत्थं लोहं लोणं च तहय विगईओ ।
एयाइं वज्जिज्जा चउवज्जणयंति जं भणिअं ॥
- गाथा-[३०] भा** उवत्तण निल्लेवण हीहंते अणभिओगऽभीरू य ।
अगहिअकुलेसु भत्तं गहिए दिट्ठिं परिहरिज्जा ॥
- गाथा-[३१] भा** पुव्वाभिग्गहवुट्ठी विवेग संभोइएसु निक्खिवणं ।
तेऽविय पडिबंधिआ इयरेसु बला सगारदुगं ॥
- गाथा-[३२] भा** कूयंते अब्भत्थण समत्थभिक्खुस्स निच्छ तद्विसं ।
जइ विंदधाइभेओ ति दु वेगो जाव लाउवमा ॥
- गाथा-[३३] भा** संगारो रायणिए आलोयण पुव्व पत्त पच्छा वा ।
सोममुहिकालरत्तच्छऽनंतरे एक्को दो विसए ॥
- गाथा-[३४] भा** एमेव य ओमम्मिवि भेओ उ अलंभि गोणिदिट्ठतो ।
रायमयं च चउद्धा वरिमदुगे होइ गणमेओ ॥
- गाथा-[३५] भा** निव्विसऊत्तिय पढमो बिइओ मा देह भत्तपाणं तु ।
तइओ उवगरणहरो जीवचरित्तस्स वा भेओ ॥
- गाथा-[३६] भा** अहिमर अणिट्ठ दरिसणवुग्गाहणया तहा अणयारे ।
अवहरण दिक्खणाए व आणालोवे व कुप्पिज्जा ॥
- गाथा-[३७] भा** अंतोउरप्पवेसो वायनिमित्तं व सो पउस्सेज्जा ।
खुभिए मालुज्जेणी पलायणं जो तओ तुरियं ॥
- गाथा-[३८] भा** तस्स पंडियमाणिस्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो ।
मुद्धं पाएण अक्कम्म वाई वाउरिवागओ ॥
- गाथा-[३९] भा** निज्जवगस्स सगासं असई एगाणिओ व गच्छिज्जा ।
सुतत्थपुच्छगो वा गच्छे अहवाऽवि पडिअरिउं ॥

- गाथा-[४०] भा** फिडिओ व परिरएणं मंदगई वावि जाव न मिलिज्जा ।
सोऊणं व गिलाणं ओसहकज्जे असई एगो ॥
- गाथा-[४१] भा** अइसेसिओ व सेहं असई एगाणियं पठावेज्जा ।
देवय कलिंग रुवणा पारणए खीर रुहिरं व ॥
- गाथा-[४२] भा** घरिमाए संदिट्ठो ओगाहेऊण मत्तए गंठी ।
इहरा कयउस्सगो परिच्छ आमंतिआ सगणं ॥
- गाथा-[४३] भा** गच्छेज्जा को णु सव्वेऽवऽणुगगो कारणाणि दीविंता ।
अमुओ एत्थ समत्थो अनुगगो उमय किइकम्मं ॥
- गाथा-[४४] नि** पोरिसिकरणं अहवावि अकरणं दोच्चऽपुच्छणे दोसा ।
सरण सुय साहु संति अंतो बहि अवभावेणं ॥
- गाथा-[४५] नि** बोहण अप्पडिबुद्धे गुरुवंदण घट्टणा अपडिबुद्धे ।
निच्चलणिसण्णझाई दट्ठुं चिट्ठे चलं पुच्छे ॥
- गाथा-[४६] नि** अप्पाहि अनुत्ताओ ससहाओ नीइ जा पहायंति ।
उवओगं आसन्ने करेइ गामस्स सो उभए ॥
- गाथा-[४७] नि** हिमतेणसावयमया दारा पिहिया पहं अयाणंतो ।
अच्छइ जाव पभायं वासियमतं च से वसभा ॥
- गाथा-[४८] नि** ठवणकुल संखडीए अणहिंडंते सिणेहपयवज्जं ।
भत्तट्ठिअस्स गमणं अपरिणए गाउयं वहइ ॥
- गाथा-[४९] नि** अत्थंडिलसंकमणे चलवक्खित्तऽणुवउत्तसागरिए ।
पडिवक्खेसु उ भयणा इयरेण विलंबणं लोगं ॥
- गाथा-[५०] नि** पुच्छाए तिण्णि तिआ छक्के पढम जयणा तिपंचविहा ।
आउम्मि दुविह तिविहा तिविहा सेसेसु काएसु ॥
- गाथा-[५१] नि** पुरिसो इत्थि नपुंसगं एक्केक्को थेरं मज्झिमो तरुणो ।
साहम्मिअन्नधम्मिअगिहत्थदुग अप्पणा तइओ ॥
- गाथा-[५२] नि** साहम्मिअपुरिसासइ मज्झिमपुरिसं अनुण्णविअ पुच्छे ।
सेसेसु होंति दोसा सविसेसा संजईवग्गे ॥
- गाथा-[५३] नि** थेरो पहं न याणइ बालो पवंचे न याणई वावि ।
पंडित्थिमज्झ संका इयरे न याणंति संका य ॥
- गाथा-[५४] नि** पासट्ठिओ य पुच्छेज्ज वंदमाणं अवंदमाणं वा ।
अनुवइऊण व पुच्छे तुण्हिक्कं मा य पुच्छेज्जा ।
- गाथा-[५५] नि** पंथब्भासे य ठिओ गोवाई मा य दूरि पुच्छेज्जा ।
संकाईया दोसा विराहणा होइ दुविहा उ ॥
- गाथा-[५६] नि** असई मज्झिमथेरो दढस्सुई भद्दओ य जो तरुणो ।
एमेव इत्थिवग्गे नपुंसवग्गे य संजोगा ॥
- गाथा-[५७] नि** एत्थं पुण संजोगा होंति अनेगा विहाणसंगुणिआ ।
पुरिसित्थिनपुंसेसुं मज्झिम तह वेर तरुणेसुं ॥
- गाथा-[५८] नि** तिविहो पुढविवकाओ सच्चित्तो मीसओ अ अच्चित्तो ।
एक्केक्को पंचविहो अच्चित्तेणं तु गंतव्वं ॥
- गाथा-[५९] नि** सुक्कोल्ल उल्लगमणे विराहणा दुविह सिगखुप्पंते ।
सुक्कोवि य धूलीए ते दोसा भट्टिए गमणं ॥
- गाथा-[६०] भा** तिविहो उ होइ उल्लो महुसित्थो पिंडओ य चिक्खल्लो ।
लत्तपहलित्त उड्डुअ खुप्पिज्जइ जत्थ चिक्खल्लो ॥

- गाथा-[६१] नि** पच्चावाया वालाइ सावया तेण कंटगा मेच्छा ।
अक्कंतमनक्कंते सपच्चवाएयरे चेव ॥
- गाथा-[६२] नि** तस्सासइ धूलीए अक्कंत निरच्चएण गंतव्वं ।
मीसगसच्चित्तेसुऽवि एस गमो सुक्कउल्लाई ॥
- गाथा-[६३] नि** उडुबद्धे रयहरणं वासावासासु पायलेहणिआ ।
वड उंबरे पिलंखू तस्स अलंभंमि चिंचिणिआ ॥
- गाथा-[६४] नि** बारसअंगुलदीहा अंगुलमेगं तु होइ विच्छिन्ना ।
घणमसिणनिव्वणाविअ पुरिसे पुरिसे य पत्तेयं ॥
- गाथा-[६५] नि** उभओ नहसंठाणा सच्चित्ताचित्तकारणा मसिणा ।
आउक्काओ दुविहो भोमो तह अंतलिक्खो य ॥
- गाथा-[६६] नि** महिआवासं तह अंतरिक्खअं दट्ठु तं न निगच्छे ।
आसन्नाओ नियत्तइ दूरगओ घरं च रुक्खं वा ॥
- गाथा-[६७] नि** सभए वासत्ताण अच्चुदए सुक्खरुक्खचडणं वा ।
नइकोप्परवरणेणं भोमे पडिपुच्छिआ गमणं ॥
- गाथा-[६८] नि** नेगंगिपरंपर चलधिर पारिसाडिसालंबवज्जिए सभए ।
पडिवक्खेण उ गमणं तज्जाइयरे व संडेवा ॥
- गाथा-[६९] नि** चलमाणमणक्कंते सभए परिहरिअ गच्छ इयरेणं ।
दगसंघट्टणलेवो पमज्ज पाए अदूरंमि ॥
- गाथा-[७०] नि** पाहाणे महुसित्थे वालुए तह कद्दमे य संजोगा ।
अक्कंतमनक्कंते सपच्चवाएयरे चेव ॥
- गाथा-[७१] नि** जंघद्धा संघट्टो नाभी लेवो परेण लेवुरिं ।
एगो जले थलेगो निप्पगले तीरमुस्सगो ॥
- गाथा-[७२] भा** निभएऽगारित्थीणं तु मग्गओ चोलपट्टमुस्सारे ।
सभए अत्थग्घे वा ओइण्णेसुं घणं पट्टं ॥
- गाथा-[७३] नि** दगतीरे ता चिट्ठे निप्पगलो जाव चोलपट्टो उ ।
सभए पलंबमाणं गच्छइ काएण अफुसंतो ॥
- गाथा-[७४] नि** असइ गिहि नालियाए आणक्खेउं पुणोऽवि पडियरणं ।
एगाभोग पडिग्गह केई सव्वाणि न य पुरओ ॥
- गाथा-[७५] नि** सागारं संवरणं ठाणतिअं परिहरित्तुऽनाबाहे ।
ठाइ नमोक्कारपरो तीरे जयणा इमा होइ ॥
- गाथा-[७६] नि** नवि पुरओ नवि मग्गओ मज्झे उस्सग्ग पन्नवीसाउ ।
दइउडु यंतुंबेसु अ एस विही होइ संतरणे ॥
- गाथा-[७७] नि** वोलीणे अनुलोमे पडिलोमऽद्देसु ठाइ तणरहिए ।
असई य गत्तिणंतगउल्लतलिगाइ डेवणया ॥
- गाथा-[७८] नि** जह अंतरिक्खमुदए नवरि निअंबे य वणनिगुंजे य ।
ठाणं सभए पाउण घणक्कपमलंबमाणं तु ॥
- गाथा-[७९] नि** तिविहो वणस्सई खलु परित्तऽनंतो थिराथिरेक्केक्को ।
संजोगा जह हेट्ठा अक्कंताई तहेव इह ॥
- गाथा-[८०] नि** तिविहा बेइंदिय खलु थिरसंघयणेयरा पुणो दुविहा ।
अक्कंताई य गमो जाव उ पंचिंदिआ नेआ ॥
- गाथा-[८१] नि** पुढविदए य पुढविए उदए पुढवि तस्स वाल कंटाय ।
पुढविवणस्सइकाए ते चेव उ पुढविए कमणं ॥

- गाथा-[८२] नि** पुढवितसे तसरहिए निरंतरसेसु पुढविए चेव ।
आउवणस्सइकाए वणेण नियमा वणं उदए ॥
- गाथा-[८३] नि** तेऊवाउविहूणा एवं सेसावि सव्वसंजोगा ।
नच्चा विराहणदुगं वज्जंतो जयसु उवउत्तो ॥
- गाथा-[८४] नि** सव्वत्थ संजमं संजमाउ अप्पाणमेव रक्खिज्जा ।
मुच्चइ अइवायाओ पुणो विसोही न या विरई ॥
- गाथा-[८५] नि** संजपहेउं देहो धारिज्जइ सो कओ उ तदभावे ।
संजमफाइनिमित्तं च देहपरिपालणा इट्ठा ॥
- गाथा-[८६] नि** चिक्खल्लवालसावयसरेणुकंटयतणे बहुजले अ ।
लोगोऽवि नेच्छइ एहे को नु विसेसो मयंतस्स ॥
- गाथा-[८७] नि** जयणमजणयं च गिही सचित्तमीसे परित्तऽनंते य ।
नवि जाणंति न यासिं अवहपइण्णा अह विसेसो ॥
- गाथा-[८८] नि** अविअ जणो मरणमया परिस्समभया व ते विवज्जेइ ।
ते पुण दयापरिणया मोक्खत्थमिसी परिहरंति ॥
- गाथा-[८९] नि** अविसिट्ठमिवि जोगंमि बाहिरे होइ विहुरया इहरा ।
सुद्धस्स उ संपत्ती अफला जं देसिआ समए ॥
- गाथा-[९०] नि** एक्कंमिवि पाणिवहंमि देसिअं सुमहदंतरं समए ।
एमेव निज्जरफला परिणामवसा बहुविहीआ ॥
- गाथा-[९१] नि** जे जत्तिआ य हेऊ मवस्स ते चेव तत्तिआ मुक्खे ।
गणणाईया लोगा दुण्हवि पुण्णा भवे तुल्ला ॥
- गाथा-[९२] नि** इरिआवहमाईआ जे चेव हवंति कम्मबंधाय ।
अजयाणं ते चेव उ जयाण निव्वाणगमणाय ॥
- गाथा-[९३] नि** एगंतेण निसेहो जोगेसु न देसिओ विही वावि ।
दलियं पप्प निसेहो होज्ज विही वा जहा रोगे ॥
- गाथा-[९४] नि** जंमि निसेविज्जंतो अइआरो होज्ज कस्सइ कयाइ ।
तेणेव य तस्स पुणो कयाइ सोही हवोज्जाहि ॥
- गाथा-[९५] नि** अनुमित्तोऽवि न कस्सइ बंधो परवत्थुपच्चओ भणिओ ।
तहविय जयंति जइणो परिणामविसोहिमिच्छंता ॥
- गाथा-[९६] नि** जो पुण हिंसाययणेसु वट्टइ तस्स नणु परीणामो ।
दुट्ठो न य तं लिंगं होइ विसुद्धस्स जोगस्स ॥
- गाथा-[९७] नि** तम्हा सया विसुद्धं परिणामं इच्छया सुविहिणं ।
हिंसाययणा सव्वे परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥
- गाथा-[९८] नि** वज्जेमिति परिणओ संपत्तीए विमुच्चई वेरा ।
अविहंतोऽवि न मुच्चइ किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स ॥
- गाथा-[९९] नि** पढमविइया गिलाणे तइए सण्णी चउत्थ साहम्मी ।
पंचमियंमि य वसही छट्ठे ठाणट्ठिओ होइ ॥
- गाथा-[१००] नि** एहिएपारत्तगणा दुन्नि य पुच्छा दुवे य साहम्मी ।
तत्थेक्केक्का दुविहा चउहा जयणा दुहेक्केक्का ॥
- गाथा-[१०१] नि** पडिदारगाहा इहलोइआ पवित्ती पासणया तेसि संखडी सड्ढो ।
परलोइआ गिलाणे चेइय वाई य पडिणीए ॥
- गाथा-[१०२] नि** अविहीपुच्छा अत्थित्थ संजया नत्थि तत्थ समणीओ ।
समणीसु अता नत्थी संका य किसोरवडवाए ॥

गाथा-[१०३] नि	सद्वदेसु चरिअकामो संकाचारी य होइ सद्धीसुं । चेइयघरं व नत्थिह तम्हा उ विहीइ पुच्छेज्जा ॥
गाथा-[१०४] नि	गामदुवारब्भासे अगडसमीवे महाणमज्झे वा वा । पुच्छेज्ज सयंपक्खा विआलणे तस्स परिहकणा ॥
गाथा-[१०५] नि	निस्संकिअ थूमाइसु काउं गच्छेज्ज चेइअघरं तु । पच्छा साहुसमीवं तेऽवि अ संभोइया तस्स ॥
गाथा-[१०६] नि	निक्खिविउं किइकम्मं दीवणऽणाबाह पुच्छण सहाओ । गेलण्ण विसज्जणया अविमुज्जवएस दावणया ॥
गाथा-[१०७] नि	पुनरवि अयं खुभिज्जा अयाणगा मो स भणिज्ज संचिक्खे । उभओऽवि अयाणंता वेज्जं पुच्छंति जयणाए ॥
गाथा-[१०८] नि	गमणे पमाण उवगरण सउण वावार ठाण उयएसो । आणण गंधुदगाई उट्टमणुट्ठे अ जे दोसा ॥
गाथा-[१०९] नि	पढमावियरजोगं नाउं गच्छे बिइज्जए दिण्णे । एमेय अण्णसंभोइयाण अण्णाइ वसहीए ॥
गाथा-[११०] नि	एगाणि गिलाणंमि उ सिट्ठेतो किं न कीरई वावि । छगमुत्तकहणपाणगधुवणऽत्थर तस्स नियगं वा ॥
गाथा-[१११] नि	सारवणं साहल्लय पागड धुवणे य सुइ समायारा । अइर्बिमले समाही सहस्स आसास पडिअरणं ॥
गाथा-[११२] नि	सयमेव दिट्ठपाढी करेइ पुच्छइ अयाणओ वेज्जं । दीवण दव्वाइमि अ उवएसो जाव लंभो उ ॥
गाथा-[११३] नि	कारणिअ हट्ठ पेसे गमणऽणुलोमेण तेण सह गच्छे । निक्कारणिअ खरंटण बिइज्ज संघाडए गमणं ॥
गाथा-[११४] नि	समणिपवेसि निसीहिअ दुवारवज्जण अदिट्ठ परिकहणं । थेरीतरुणिविभासा निमंतऽणाबाहपुच्छा य ॥
गाथा-[११५] नि	सिट्ठंमि सहू पडिणीयनिग्गहं अहव अण्णहिं पेसे । उवएसो दावणया गेलन्ने वेज्जपुच्छा अ ॥
गाथा-[११६] नि	तह चेव दीवण चउक्कएण अन्नत्थ वसहि जा पढमा । तह वेवेगाणीए आगाढे चिलिमिली नवरं ॥
गाथा-[११७] नि	निक्कारणिअं चमढण कारणिअं नेइ अहय अप्पाहे । गमणित्थि मीससंबंधिवज्जिए असइ एगागी ॥
गाथा-[११८] नि	एगबहू समणुण्णाण वसहीए जो य एग अमणुन्नो । अमणुन्नसंजईण य अण्णहिं एक्कं चिलिमिलीए ॥
गाथा-[११९] नि	विहिपुच्छाए पवेसो सण्णिकुले चेइ पुच्छ साहम्मी । अन्नत्थ अत्थि इह ते गिलाणकज्जे अहिवडंति ॥
गाथा-[१२०] नि	सव्वंपि न घेत्तव्वं निमंतणे जं तहिं गिलाणस्स । कारणि तस्स य तुज्झ य वउलं दव्वं तु पाउगं ॥
गाथा-[१२१] नि	जाए दिसाए गिलाणो ताए दिसाए उ होइ पडियरणा । पुव्वभणिअं गिलाणो पंचण्हदि होइ जयणाए ॥
गाथा-[१२२] भा	तेसि पडिच्छण पुच्छण सुट्ठकवं अत्थि नत्थि वा लंभो । खगूडे विलओलणदाणमणिच्छे तहिं नक्खणं ॥
गाथा-[१२३] भा	पंतं असहू करित्ता निवेयण गहण अहवा समणुन्ना । खगूड देहिं तं चिअ कमढग तस्सप्पणो पाए ॥

- गाथा-[१२४] भा** किं कीरउ जं जाणसि अतरंति सढेत्ति वच्च तं भंते ।
निद्धम्मा न करेती करणमणनलोइय सहाओ ॥
- गाथा-[१२५] भा** उभओ निद्धम्मेसुं फासुपडोआर इयरपडिसेहो ।
परिमि अदाण विसज्जण सच्छंदोद्धंसण गमणं ॥
- गाथा-[१२६] भा** एस गमो पंचणहवि होइ नियाइण गिलाणपडियरणे ।
फासुअकरण निकायण कहण पडिक्कामणा गमणं ॥
- गाथा-[१२७] भा** सभावणेऽविसद्दो देउलिअखरंट जयण उवएसो ।
अविसेस निणहगाणवि न एस अम्हं तओ गमणं ॥
- गाथा-[१२८] भा** तारेहि जयणकरणे अमुगं आणेहऽकप्प जणपुरओ ।
नवि एरिसया समणा जणयाए तओ अवक्कमणं ॥
- गाथा-[१२९] भा** चोअगवयणं आणा आयरिआणं तु फेडिआ तेणं ।
साहम्मिअकज्जबहुत्तया य सुचिरेणवि न गच्छे ॥
- गाथा-[१३०] भा** तित्थगराणा चोयग दिट्ठंतो भोइएण नरवइणा ।
जत्तुगय मोइअदंडिए अ घरदार पुव्वकए ॥
- गाथा-[१३१] भा** रण्णो तणघरकरणं सचित्तकम्मं तु गामसामिस्स ।
दोण्हंपि दंडकरणं विवरीयऽण्णेणुवणओ उ ॥
- गाथा-[१३२] भा** जह नरवइणो आणं अइक्कमंता पमायदोसेणं ।
पावंति बंधवहरोहछिज्जमरणावसाणाइं ॥
- गाथा-[१३३] भा** तह जिणवराण आणं अइक्कमंता पमायदोसेणं ।
पावंति दुग्गइपहे विणिवायसहस्सकोडीओ ॥
- गाथा-[१३४] भा** तित्थगरवयणकरणे आयरिआणं कयं पए होइ ।
कुज्जा गिलाणगस्स उ पढमालिय जाव बहिगमणं ॥
- गाथा-[१३५] भा** जह ता पासत्थोसण्णकुसीलनिणहवगाणंपि देसिअं करणं ।
चरणकरणासणं सव्भावपरंमुहाणं च ॥
- गाथा-[१३६] भा** किं पुण जयणाकरणुज्जयाणं दंतिंदिआण गुत्ताणं ।
संविग्गविहारीणं सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥
- गाथा-[१३७] नि** एवं गेलन्नट्ठा वावाओ अह इयाणि भिक्खट्ठा ।
वइयगामे संखडि सन्नी दाणे य मद्दे य ॥
- गाथा-[१३८] नि** उव्वत्तणमप्पत्तं च पडिच्छे खीरगहण पहगमणे ।
वोसिरणे छक्काया धरणे मरणं दवविरोहो ॥
- गाथा-[१३९] नि** खद्धादाणिअगामे संखडि आइन्न खद्ध गेलन्ने ।
सण्णी दाणे भद्दे अप्पत्तमहानिनादेसु ॥
- गाथा-[१४०] नि** पडुच्छिखीर सतरं घयाइ तक्कस्स गिण्हणे दीहं ।
गेहि विगिंचणियभया निसट्ठ सुवणे य परिहाणी ॥
- गाथा-[१४१] नि** गामे परितलिअगमाइमगणे संखडी छणे विरूवा ।
सण्णी दाणे मद्दे जेमण विगई गहण दीहं ॥
- गाथा-[१४२] नि** अह जग्गइ गेलन्नं अस्संजयकरणं जीववायाओ ।
इच्छमणिच्छे मरणं गुरुआणा छड्डेण काया ॥
- गाथा-[१४३] नि** तक्कोयणाण गहणे गिलाण आणा बाला इया जढा होंति ।
अप्पतं व पडिच्छे सोच्चा अहवा सयं नाउं ॥
- गाथा-[१४४] नि** दूरुट्ठिअ खुड्डुलए नव भड अगणी अ एंत पडिणीए ।
अप्पत्तपडिच्छण पुच्छ बाहिं अंतो पविसिअव्वं ॥

गाथा-[१४५] नि	कक्खडखेत्तचुओ वा दुब्बल अद्धाण पविसमाणो वा । खीराइगहण दीहं बहुं च उवमा अयकडिल्ले ॥
गाथा-[१४६] नि	जे चेव पडिच्छणदीहखद्धसुवणेषु वण्णिआ दोसा । ते चेव सपडिवक्खा होंति इहं कारणज्जाए ।
गाथा-[१४७] भा	विहिपुच्छाए सण्णी सोउं पविसे न बाहि संचिक्खे । उग्गमदोसभएणं चोयगवयणं बहिं ठाउं ॥
गाथा-[१४८] भा	सोच्चा दट्ठणं वा बाहिठिअं उग्गमेगयर कुज्जा । अप्पत्त पविट्ठो पुण चोयग दुट्ठं निवारेज्जा ॥
गाथा-[१४९] नि	उग्गमदोसाईणं कहणा उप्पायणेषणाणं च । तत्थ उ नत्थी सुत्ते बाहिं सागार कालदुवे ॥
गाथा-[१५०] भा	फेडेज्ज व सइकालं संखडि घेत्तूण वा पए गच्छे । सुण्णधराइपलोयण चेइय आलोयणाऽबाहं ॥
गाथा-[१५१] भा	उग्गमएसणकहणं न किंचि करणिज्ज अम्ह विहिदाणं । कस्सऽट्ठा आरंभो तुज्झेसो पाहुणा डिंभा ॥
गाथा-[१५२] भा	रसवइपविसण पासण भिअमभिअमुखडे तहा गहणं । पज्जत्ते तत्थेव उ उभएगयरे य ओयविए ॥
गाथा-[१५३] भा	असइ अपज्जत्ते वा सुण्णधराईण बाहिं संसट्ठे । लट्ठीइ दारघट्टण पविसण उस्सग्ग आसत्थे ॥
गाथा-[१५४] भा	आलोअणमालावो अदिट्ठंमिवि तहेव आलावो । किं उल्लावं न देसी अदिट्ठं निस्संकिअं मुंजे ॥
गाथा-[१५५] भा	दिट्ठ असंभम पिंडो तुज्झविय इमोत्ति साह वेउव्वी । सोवि अगारी दोच्चा नीइ पिसाउत्तिकाऊणं ॥
गाथा-[१५६] भा	निव्वेण व मालेण व वाउपवेसेण अहवसढयाए । गमणं च कहणआगम दूरब्भासे विही इणमो ॥
गाथा-[१५७] भा	थोवं भुंजइ बहुअं विगिंचई पउमपत्तपरिगुणणं । पत्तेसु कहिं भिक्खं दिट्ठमदिट्ठे विभासा उ ॥
गाथा-[१५८] भा	अदिट्ठे किं वेला तेसि निबंधंमि दायणे खिंसा । ओहामिओ उ बडुओ वण्णो य पहाविओ तहिअं ॥
गाथा-[१५९] भा	सुण्णघरासइ बाहिं देवकुलाईसु होइ जयणा उ । तेगिच्छिघाउखोभो मरणं अनुकंप पडिअरणं ॥
गाथा-[१६०] भा	इरियाइ पडिक्कंतो परिगुणणं संधिआ भि का गुणिआ । अम्हं एसुवएसो धम्मकहा दुविहपडिवत्ती ॥
गाथा-[१६१] भा	थंडिल्लासइ चीरं निवायसंरक्खणाइ पंचवे । सेसं जा थंडिल्लं असईए अण्णगामंमि ॥
गाथा-[१६२] भा	अपहुप्पंते काले तं चेव दुगाउयं नइक्कामे । गोमुत्तिअट्ठाइसु भुंजइ अहवा पएसेसुं ॥
गाथा-[१६३] नि	दिट्ठमदिट्ठा दुविहा नायगुणा चेव हुंति अन्नाया । अदिट्ठावि य दुविहा सुअमसुअ पसत्थमपसत्था ॥
गाथा-[१६४] नि	दिट्ठा व समोसरणे न य नायगुणा हवेज्ज ते समणा । सुअगुण पसत्थ इयरे समणुन्निअरे य सव्वेवि ॥
गाथा-[१६५] नि	जइ सुद्धा संवासो होइ असुद्धाण दुविह पडिलेहा । अब्भितरबाहिरिआ दुविहा दव्वे य भावे य ॥

- गाथा-[१६६] नि** घट्टाइटलिअदंडग पाउय संलग्गिरी अनुवओगो ।
दिसि पवण गाम सूरिय वितहं अच्छोलणा दव्वे ॥
- गाथा-[१६७] नि** विकहा हसिउग्गाइय भिन्नकहाचक्कवालछलिअकहा ।
माणुसतिरिआवाए दायणआयरण्या भावे ॥
- गाथा-[१६८] नि** बाहिं जइवि असुद्धा तहावि गंतूण गुरूपरिक्खा उ ।
अहव विसुद्धा तहवि उ अंतो दुविहा उ पडिलेहा ॥
- गाथा-[१६९] नि** पविसंत निमित्तमणेसणे व साहइ न एरिसा समणा ।
अम्हंपि ते कहंती कुक्कुडखरियाइठाणं च ॥
- गाथा-[१७०] नि** दव्वंमि ठाणफलाए सेज्जासंधारकायउच्चारं ।
कंदप्पगीयविकहावुग्गहकिड्डा य भावंमि ॥
- गाथा-[१७१] नि** संविगोसु पवेसो संविग्गमणुन्न बाहि किड्कम्मं ।
ठवणकुलापुच्छणया एत्तोच्चिय गच्छ गविसणया ॥
- गाथा-[१७२] नि** समणुण्णेसुं निइयादमणुण्ण अण्णहिं निवेए ।
संनिगिहि इत्थिरहिं सहिए वीसुं घरकुडीए ॥
- गाथा-[१७३] नि** अहणुव्वासिअ सकवाड निब्बिले निच्चले वसइ सुण्णे ।
अनिवेइएयरेसिं गेलन्ने न एस अम्हंति ॥
- गाथा-[१७४] नि** नीयाइअपरिभुत्ते सहिएयर पक्खिए व सज्झाए ।
कालो सेसमकालो वासो पुण कालचारीसु ॥
- गाथा-[१७५] नि** तेणं परं पासत्थाइएसु न वसइयऽकालचारीसु ।
गहिआवासगकरणं ठाणं गहिणऽगहिण ॥
- गाथा-[१७६] नि** निसिअ तुयट्ठण जग्गण विराहणभएण पासि निक्खिवइ ।
पासत्थाईणेवं निइए नवरं अपरिभुत्ते ॥
- गाथा-[१७७] नि** एमेव अहाछंदे पडिहणणा जाण अज्झयण कन्ना ।
ठाणट्ठिओ निसामे सुवणाहरणा य गहिणं ॥
- गाथा-[१७८] नि** असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए नदुट्ठाणे ।
फिडिअगिलाणे कालगवासे ठाणट्ठिओ होइ ॥
- गाथा-[१७९] नि** तत्थेव अंतरा वा असिवादी सोउ परिरयस्सऽसइ ।
संचिक्खे जाव सिवं अहवावी ते तओ फिडिआ ॥
- गाथा-[१८०] नि** पुन्ना व नई चउमासवाहिणी नवि य कोइ उत्तारो ।
तत्थंतरा व देसो व उट्ठिओ न य लब्भइ पवत्ती ॥
- गाथा-[१८१] भा** फिडिएसु जा पवित्ती सयं गिलाणो परं व पडियरइ ।
कालगया व पवती ससंकिए जाव निस्संकं ॥
- गाथा-[१८२] नि** वासासुं उब्भण्णा बीयाई तेण अंतरा चिट्ठे ।
तेगिच्छि भोइ सारक्खणहट्ठे ठाणमिच्छंति ॥
- गाथा-[१८३] नि** संविग्गसंनिभद्दग अहप्पहाणेसु भोइयघरे वा ।
ठवणा आयरियस्सा सामायारी पउंजणया ॥
- गाथा-[१८४] नि** एवं ता कारणिओ दूइज्जइ जुत्त अप्पमाएणं ।
निक्कारणिअं एतो चइओ आहिंदिओ चेव ॥
- गाथा-[१८५] नि** जह सागरंमि मीणा संखोहं सागरस्स असहंता ।
निति तओ सुहकामी निग्गयमित्ता विनस्संति ॥
- गाथा-[१८६] नि** एवं गच्छसमुद्धे सारणवीईहिं चोइया संता ।
निति तओ सुहकामी मीणा व जहा विनस्संति ॥

- गाथा-[१८८] नि** उवएसु अनुवएसो दुविहा आहिंडा समासेण ।
उवएस देसदंसण अनुवएसो इमे होति ॥
- गाथा-[१८९] नि** चक्के थूभे पडिमा जम्मण निक्खमण नाण निव्वाणे ।
संखडि विहार आहार उवहि तह दंसणट्ठाए ॥
- गाथा-[१९०] नि** एते अकारणा संजयस्स असमत्ततदुभयस्स भवे ।
ते चेद कारणा पुण गीयत्थविहारिणो भणिआ ॥
- गाथा-[१९१] नि** गीयत्थो य विहारो बिडो गीयत्थमीसिओ भणिओ ।
एत्तो तइअविहारो नाणुत्ताओ जिणवरेहिं ॥
- गाथा-[१९२] नि** संजमआयविराहण नाणे तह दंसणे चरित्ते य ।
आणालोव जिणाणं कुव्वइ दीहं तु संसारं ॥
- गाथा-[१९३] भा** संजमओ छक्काया आयाकंटऽट्ठिऽजीरगेलन्ने ।
नाणे नाणायारो दंसण चरणाइ वुग्गाहे ॥
- गाथा-[१९४] नि** नेगावि होति दुविहा काणनिक्कारणे दुविहभेओ ।
जं एत्थं नाणत्तं तमहं वोच्छं समासेण ॥
- गाथा-[१९५] प्र** जयमाणा खलु एवं तिविहा उ समासओ समक्खाया ।
विहरंताविय दुविहा गच्छगया निगया चेव ॥
- गाथा-[१९६] नि** जयमाणा विहरंता ओहाणाहिंडगा चउद्धाउ ।
जयमाणा तत्थ तिहा नाणट्ठा दंसणचरित्ते ॥
- गाथा-[१९७] नि** पत्तेयबुद्ध जिणकप्पिया य पडिमासु चेव विहरंता ।
आयरिअच्चेरवसभा भिक्खू खुड्ढा य गच्छंमि ॥
- गाथा-[१९८] नि** ओहावंता दुविहा लिंग विहारे य होति नायव्वा ।
लिंगेणऽगारवासं नियया ओहावण विहारे ॥
- गाथा-[१९९] नि** उवएस अनुवएसो दुविहा आहिडया मुणेयव्वा ।
उवएस देसदंसण थूभाई हुंतिऽणुवएसो ॥
- गाथा-[२००] नि** पुन्नंमि मासकप्पे वासावासासु जयणसंकमणा ।
आमंतणा य भावे सुत्तत्थ न हायई जत्थ ॥
- गाथा-[२०१] नि** अप्पडिलेहियदोसा वसही भिक्खं च दुल्लहं होज्जा ।
बालाइगिलाणाण व पाउगं अहव सज्झाओ ॥
- गाथा-[२०२] नि** तम्हा पुव्वं पडिलेहिऊण पच्छा विहीए संकमणं ।
पेसेइ जइ अणापुच्छिउं गणं तत्थिमे दोसा ॥
- गाथा-[२०३] नि** अइरेगोवहिपडिलेहणाए कत्थवि गयत्ति तो पुच्छे ।
खेत्तो पडिलेहेउं अमुगत्थ गयत्ति तं दुट्ठं ॥
- गाथा-[२०४] नि** तेणा सावय मसगा ओमऽसिवे सेह इत्थि पडिणीए ।
थंडिल्ल अगणि उट्ठाण एवमाई भवे दोसा ॥
- गाथा-[२०५] नि** पच्चंति तावसीओ सावयदुब्धिक्खतेणपउराइं ।
नियगदुट्ठट्ठाणे फेडणहरियाइ हरिहरिय पत्तीए ॥
- गाथा-[२०६] नि** सीसे जइ आमंतइ पडिच्छगा तेण बाहिरं भावं ।
जइ इयरे तो सीसा तेवि समत्तंमि गच्छंति ॥
- गाथा-[२०७] नि** तरुणा बाहिरभावं न य पडिलेहोवही न किइकम्मं ।
मूलयपत्तसरिसया परिभूया वच्चिमो थेरा ॥
- गाथा-[२०८] नि** जुण्णमएहि विहूणं जं जूहं होइ सुट्ठुवि महल्लं ।
तं तरुणरहसपोइयमयगुम्मइअं सुहं हंतुं ॥

- गाथा-[२०९] नि** थुइमंगलमामंतण नागच्छइ जो य पुच्छिओ न कहे ।
तस्सुवरिं ते दोसा तम्हा मिलिएसु पुच्छेज्जा ॥
- गाथा-[२१०] नि** केई भणंति पुव्वं पडिलेहिअ एवमेव गंतव्वं ।
तं च न जुज्जइ वसही फेडण आगंतु पडिणीए ॥
- गाथा-[२११] नि** कयरी दिसा पसत्था अमुई सव्वेसिं अनुमई गमणं ।
चउदिसि ति दु एगं वा सत्तग पणगं तिग जहन्नं ॥
- गाथा-[२१२] नि** अणभिगहिए वावारणा उ तत्थ उ इमे न वावारे ।
बालं वुड्ढमगीअं जोगिं वसहं तहा खमगं ॥
- गाथा-[२१३] भा** हीलेज्ज व खेलेज्ज व कज्जाकज्जं न याणई बालो ।
सो वऽणुकंपणिज्जो न दिंति वा किंचि बालस्स ॥
- गाथा-[२१४] भा** भाष्यं वुड्ढोऽणुकंपणिज्जो चिरेण न य मग्गथंडिले पेहे ।
अहवावि बालबुड्ढा असमत्था गोयरतिस्स ॥
- गाथा-[२१५] भा** पंथं व मासवासं उवस्सयं एच्चिरेण कालेणं ।
एहामोत्ति न याणइ चउव्विहमणुण्ण ठाणं च ।
- गाथा-[२१६] भा** तूरंतो य न पेहे पंथं पादट्ठिओ न चिर हिंडो ।
विगई पडिसेहेइ तम्हा जोगिं न पेसेज्जा ॥
- गाथा-[२१७] भा** ठवणकुलाणि न साहे सिट्ठाणि न देंति जा विराहणया ।
परितावण अनुकंपण तिण्हऽसमत्थो भवे खमगो ॥
- गाथा-[२१८] नि** एए चेव हवेज्जा पडिलोमेणं तुपेसए विहिणा ।
अविही पेसिज्जंते ते चेव तहिं तु पडिलोमं ॥
- गाथा-[२१९] नि** सामायारिमगीए जोगमणागाढ खवग पारावे ।
वेयावच्चे दायण जुयलसमत्थं व सहियं वा ॥
- गाथा-[२२०] नि** पंथुच्चारे उदए ठाणे भिक्खंतारा व वसहीओ ।
तेणा सावय वाला पच्चावाया य जाण विही ॥
- गाथा-[२२१] भा** सो चेव उ निग्गमणे विही उ जो वन्निओ उ एगस्स ।
दव्वे खेत्ते काले भावे पंथं तु पडिलेहे ॥
- गाथा-[२२२] भा** कंटग तेणा वाला पडिणीया सावया य दव्वंमि ।
समविसमउदयथंडिल भिक्खायरि अंतरा खेत्ते ॥
- गाथा-[२२३] भा** दियराउऽपच्चवाए य जाणई सुगमदुग्गमे काले ।
भावे सपक्खपरपक्खपेल्लणा निण्हगाईया ॥
- गाथा-[२२४] नि** सुत्तत्थं अकरिंता भिक्खं काउं अइंति अवरणहे ।
बिइयदिने सज्झाओ पोरिसिअड्ढाइ संघाडो ॥
- गाथा-[२२५] नि** खेत्तं तिहा करेत्ता दोसीणे नीणिअंमि अ वयंति ।
अण्णो लद्धो बहुओ थोवं दे मा य रूसेज्जा ॥
- गाथा-[२२६] नि** अहव न दोसीणं चिअ जायामो देहि दहि घयं खीरं ।
खीरे घयगुलपेज्जा थोवं थोवं च सव्वत्थ ॥
- गाथा-[२२७] नि** मज्झणिहे पउरभिक्खं परिताविअपिज्जजूसपयकढिअं ।
ओमट्ठमणोमट्ठं लब्भइ जं जत्थ पाउगं ॥
- गाथा-[२२८] नि** चरिमे परितावियपेज्जजूस आएस अतरणट्ठाए ।
एक्केक्कगसंजुत्तं भत्तट्ठं एक्कमेक्कस्स ॥
- गाथा-[२२९] नि** ओसह भेसज्जाणि य कालं च कुले य दाणमाईणि ।
सग्गामे पेहित्ता पेहंति ततो परग्गामे ॥

- गाथा-[२३०] नि** चोयगवयणं दीहं पणीयगहणे य नणु भवे दोसा ।
जुज्जइ तं गुरुपाहुणगिलाणगट्ठा न दप्पट्ठा ॥
- गाथा-[२३१] नि** जइ पुण खद्धपणीए अकारणे एक्कसिंपि गिण्हेज्जा ।
तहिअं दोसा तेण उ अकारणे खद्धनिद्धाई ॥
- गाथा-[२३२] नि** एवं-रुइए थंडिल वसही देउलिअसुण्णगेहमाईणि ।
पाओगमणुण्णविणा वियालणे तस्स परिकहणा ॥
- गाथा-[२३३] भा** सिंगक्खोडे कलहो ठाणं पुण नेव होइ चलणेसुं ।
अहिठाणि पोट्ट रोगो पुच्छंमि य फेडणं जाण ॥
- गाथा-[२३४] भा** मुहमूलंमि य चारी सिरे य कउहे य पूयसक्कारो ।
खंधे पट्टीए भरो पोट्टंमि य धावओ वसहो ॥
- गाथा-[२३५] प्र** उद्देसणुपुव्वीए वुच्चत्थं पेहमाणिणो दोसा ।
जे य गुणा पढमाए ते वायायंमि सेसासु ॥
- गाथा-[२३६] प्र** पउरत्र पाण पढमा बीयाए भत्तपाण न लहंति ।
तइआ उवगरणहरी नत्थि चउत्थीइ सज्झाओ ॥
- गाथा-[२३७] प्र** पंचमिआए संखडिछट्ठीइ गणस्स मेयणं जाण ।
सत्तमिआ गेलन्नं मरणं पुण अट्टमी बिंति ॥
- गाथा-[२३८] प्र** बुद्धीए पुव्वमुहं वसहमिओ गंतु उत्तरे पासे ।
एवं पुव्वुत्तरओ वसहिं गिण्हेज्ज निद्दोसं ॥
- गाथा-[२३९] प्र** रुइए महंथंडिल्लं ऐहिज्जा चोयगो मणइ एवं ।
ठायंतच्चिय तुज्झ य अमंगलं कुव्वहा भंते ॥
- गाथा-[२४०] प्र** आहायरिओ लोए नगरनिवेसंमि पढमवत्थुंमि ।
सीयाणं पेहिज्जइ न य दिट्ठं तं अमंगलयं ॥
- गाथा-[२४१] प्र** दिसा अवरदक्खिणा दक्खिणा य अवरा य दक्खिणापुव्वा ।
अवरुत्तरा य पुव्वा उत्तरपुव्वुत्तरा चेव ॥
- गाथा-[२४२] प्र** उद्दिट्ठकमेणासिं पढमं पिलेहिऊण वाघाए ।
बीयं पडिलेहिज्जा एवं उद्देसओऽहाणी ॥
- गाथा-[२४३] भा** दव्वे तणडगलाई अच्छणभाणाइधोवणा खेत्ते ।
काले उच्चाराई भावेण गिलाणकूरुवमा ॥
- गाथा-[२४४] नि** जाव गुरूण य तुज्झ य केवइया तत्थ सागरेणुवमा ।
केवइकालेणेहिह सागार ठवंति अन्नेवि ॥
- गाथा-[२४५] नि** पुव्वुद्दिट्ठे इच्छइ अहव भणिज्जा हवंतु एवइया ।
तत्थ न कप्पइ वासो असई खेत्ताणऽणुन्नाओ ॥
- गाथा-[२४६] नि** सक्कारो सम्माणो भिक्खगहणं च होइ पाहुणए ।
जइ जाणउ वसइ तहिं साहम्मिअवच्छलाऽऽणाई ॥
- गाथा-[२४७] नि** जइ तिन्नि सव्वगमणं एसु न एसुत्ति दोसुविय दोसा ।
अण्णपहेणऽगुणंता निययावासोऽह मा गुरुणो ॥
- गाथा-[२४८] नि** गंतूण गुरुसमीवं आलोएत्ता कहेंति खेत्तगुणा ।
न य सेसकहण मा होज्ज संखइं रत्ति साहेंति ॥
- गाथा-[२४९] नि** पढमाए नत्थि पढमा तत्थ उ घयखीरकूरदहिलंभो ।
बिइयाए बिइ तइयाए दोवि तेसिं च धुवलंभो ॥
- गाथा-[२५०] नि** ओहासिअधुवलंभो पाउग्गाणं चउत्थिए नियमा ।
इहरावि जहिच्छाए तिकालजगोगं च सव्वेसिं ॥

- गाथा-[२५१] नि** मयगहणं आयरिओ कत्थ वया मोत्ति तत्थ आयरिओ ।
खुभिआ मणंति पढमं तं चिअ अनुओगतत्तिल्ला ॥
- गाथा-[२५२] नि** बिइयं च सुत्तगाही उभयगाही अ तइययं खेत्तं ।
आयरिओ अ चउत्थं सो उ पमाणं हवइ तत्थ ॥
- गाथा-[२५३] नि** मोहुब्भवो उ बलिए दुब्बलदेहो न साहए जोए ।
तो मज्झबला साहू दुट्ठस्सेणेत्थ दिट्ठंतो ॥
- गाथा-[२५४] नि** पणपन्नगस्स हाणी आरेणं जेण तेण वा धरइ ।
जइ तरुणा नीरोगा वच्चंति चउत्थगं ताहे ॥
- गाथा-[२५५] नि** अह पुण जुण्णा थेरा रोगविमुक्काय य असहुणो तरुणा ।
ते अनुकूलं खेत्तं पेसंति न यावि खग्गूडे ॥
- गाथा-[२५६] नि** एगपणअद्धमासं सट्ठी सुणमणुयगोणहत्थीणं ।
राइंदिएण उबलं पणगं तो एक्क दो तिन्नि ॥
- गाथा-[२५७] नि** सागारिऽपुच्छगमणे बाहिरा मिच्छ छेय कयनासी ।
गिहि साहू अभिधारण तेणगसंकाइ जं चऽनं ॥
- गाथा-[२५८] नि** अविहीपुच्छा उग्गाहिएण सिज्जातरी उ रोएज्जा ।
सागारियस्स संका कलहे य सेज्जिआ खिंसे ॥
- गाथा-[२५९] प्र** वसहीए वोच्छेओ अभिसंधारितयाण साहूणं ।
पुणरावती होज्ज व पव्वज्जा उज्जुअमईणं ॥
- गाथा-[२६०] नि** हरिअच्छेयण छप्पइय धच्चणं किच्चणं व पोत्ताणं ।
छण्णेरं च पगयं इच्छमणिच्छे य दोसा उ ॥
- गाथा-[२६१] नि** जइया चेव उ खेत्तं गया उ पडिलेहगा तओ पाए ।
सागारियस्स भावं तणुएंति गुरूइमेहिं तु ॥
- गाथा-[२६२] नि** उच्छूवोलिंति बइं तुंबीओ जायपुत्तभंडा य ।
वसमा जायत्थामा गामा पव्वायचिक्खल्ला ॥
- गाथा-[२६३] नि** अप्पोदगा य मग्गा वसुहावि य पक्कमट्ठिआ जाय ।
अण्णकंता पंया साहूणं विहरिउं कालो ॥
- गाथा-[२६४] नि** समणाणं सउणाणं भमरकुलाणं च गोउलाणं च ।
अनियाओ वसहीओ सारइयाणं च मेहाणं ॥
- गाथा-[२६५] नि** आवस्सगकयनियमा कल्लं गच्छाम तो उ आयरिओ ।
सपरिजणं सागरिअ वाहरिउं दिंति अनुसिट्ठि ॥
- गाथा-[२६६] नि** पव्वज्ज सावओ वा दंसण भद्दो जहण्णयं वसहिं ।
जोगंमि वट्ठमाणे अमुगं वेलं गमिस्सामो ॥
- गाथा-[२६७] नि** तदुभयं सुत्तं पडिलेहणा य उगयमणुगए दावि ।
पडिछाहिगरणतेणे नट्टे ट्टे खग्गूड संगारो ॥
- गाथा-[२६८] भा** पडिलेहंतच्चिअ बेंटियाउ काऊण पोरिसि करिंति ।
चरिमा उग्गाहेउं सोच्चा मज्झणिहे वच्चंति ॥
- गाथा-[२६९] भा** तिहिकरणंमि पसत्थे नक्खत्ते अहिवइस्स अनुकूले ।
घेत्तूण निति वसमा अक्खे सउणे परिकखंता ॥
- गाथा-[२७०] भा** वासस्स य आगमणे अवसउणे पट्ठिआ निवत्तंति ।
ओभावणा पवयणे आयरिआ मग्गओ तम्हा ॥
- गाथा-[२७१] भा** मइल कुचेले अब्भंगिएल्लए साण खुज्ज वडभेया ।
एए उ अप्पसत्था हवंति खित्ताउ निंताणं ॥

- गाथा-[२७२] भा** नारी पीवरगब्भा वड्डुकुमारी य कट्टुमारो य ।
कासायवत्थ कुच्चंधरा य कज्जं न साहेति ॥
- गाथा-[२७३] प्र** चक्कयरंमि ममाडो पुक्खामारो य पडुरंगंमि ।
तच्चन्नि रुहिरपडणं बोडियमसिए धुवं मरणं ॥
- गाथा-[२७४] भा** जंबू य वासमऊरे भारद्वाए तहेव नउले य ।
दंसणमेव पसत्थं पयाहिणे सव्वसंपत्ती ॥
- गाथा-[२७५] भा** नंदी तूरं पुत्ररस दंसणं संखपडहसद्दो य ।
भिंंगारछत्तचामरघयप्पडागा पसत्थाइं ॥
- गाथा-[२७६] भा** समणं संजयं दंतं सुमणं मोयगा दहिं ।
मीणं घंटं पडागं च सिद्धमत्थं विआयरे ॥
- गाथा-[२७७] भा** सेज्जतरेऽणुभासइ आयरिओ सेसगा चिलिमिलीए ।
अंतो गिण्हंतुवहिं सारविअ पडिस्सया पुव्विं ॥
- गाथा-[२७८] भा** बालाई उवगरणं जावइयं तरति तत्तिंयं गिण्हे ।
जहणेण जहाजायं सेसं तरुणा विरिचिंति ॥
- गाथा-[२७९] भा** आयरिओवहि बालाइयाण गिण्हंति संघयणजुत्ता ।
दो सोत्ति उण्णिसंथारए य गहणेक्कपासेणं ॥
- गाथा-[२८०] भा** आउज्जोवण वणिए अगणि कुडुंबी कुकम्म कम्मरिए ।
तेणे मालागारे उब्भामग पंथिए जंते ॥
- गाथा-[२८१] नि** संगार बीय वसही तंडए सण्णी चउत्थ साहम्मी ।
पंचमगंमी य वसही छट्ठे ठाणट्ठिओ होंति ॥
- गाथा-[२८२] भा** दारा आओसे संगारो अमुई वेलाए निग्गए ठाणं ।
अमुगत्थ वसहि भिक्खं बीओ खग्गूड संगारो ॥
- गाथा-[२८३] भा** रत्तिं न चेव कप्पइ नीयदुवारे विराहणा दुविहा ।
पन्नवणे बहुयरगुणे अणिच्छ बीओ व उवही वा ॥
- गाथा-[२८४] भा** सुवणे वीसुवघातो पडिबज्झंतो य जो उ न मिलेज्जा ।
जग्गण अप्पडिबज्झण जइवि चिरेणं न उवहम्मे ॥
- गाथा-[२८५] नि** पुरओ मज्झे तह मग्गओ य ठायंति खित्तपडिलेहा ।
दाइंतुच्चारुइं भावासण्णाइरक्खट्ठा ॥
- गाथा-[२८६] नि** डहरे भिक्खग्गामे अंतरगामंमि ठावए तरुणे ।
उवगरणगहण असहू व ठावए जाणगं चेगं ॥
- गाथा-[२८७] नि** दूरुट्ठिअ खुड्डुलए नव मड अगणी य पंत पडिणीए ।
संघाडेगो धुवकम्मिओ व सुण्णे नवरि रिक्खा ॥
- गाथा-[२८८] नि** जाणंतठिए ता एउ वसहीए नत्थि कोइ पडियरइ ।
अण्णाएऽजाणंतंसे वावि संघाड धुवकम्मि ॥
- गाथा-[२८९] नि** जइ अब्भासे गमणं दूरे गंतुं दुगाउयं पेसे ।
तेवि असंयरमाणा इंती अहवा विसज्जंति ॥
- गाथा-[२९०] नि** पढमबियाए गमणं गहणं पडिलेहणा पवेसो उ ।
काले संघाडेगो वऽसंयरंताण तह चेव ॥
- गाथा-[२९१] भा** पढमबितियाए गमणं बाहिं ठाणं च चिलिमिणी दोरे ।
घित्तूण इति वसहा वसहिं पडिलेहिउं पुव्विं ॥
- गाथा-[२९२] नि** वाघाए ऊण्णं मग्गिऊण चिलिमिणि पमज्जणा वसहे ।
पत्ताण भिक्खवेलं संघाडेगो परिणओ वा ॥

- गाथा-[२९३] नि** सव्वे वा हिंडंता वसहिं मग्गंति जह व समुयाणं ।
लद्धे संकलियनिवेयणं हु तत्थेव उ नियट्ठे ॥
- गाथा-[२९४] नि** एक्को धरेइ माणं दोणहवि पवेसए उवहिं ।
सव्वो उवेइ गच्छो सबाल वुड्ढाउलो ताहे ॥
- गाथा-[२९५] नि** चोयगपुच्छा दोसा मंडलिबंधमि होइ आगमणं ।
संजमआयविराहण वियालगहणे य जे दोसा ॥
- गाथा-[२९६] नि** अइभारेण उ इरियं न सोहए कंडगाइ आयाए ।
भत्तट्ठिय वोसिरिया अइंतु एवं जढा दोसा ॥
- गाथा-[२९७] नि** आयरियवयण दोसा दुविहा नियमा उ संजमायाए ।
वच्चह न तुज्झ सामी असंखडं मंडलीए वा ॥
- गाथा-[२९८] नि** कोऊहल आगमणं संखोभेणं अकंठ गमणाइं ।
ते चेव संखडाइं वसहिं व न दंति जं वऽन्नं ॥
- गाथा-[२९९] नि** भारेण वेयणाए न पेहए वाणुकंठ आयाए ।
इरियाइ संजमंसि य परिगलमाणेण छक्काया ॥
- गाथा-[३००] नि** सावयतेणा दुविहा विराहणा जा य उवहिणा उ विणा ।
तणअग्गिगहणसेवण वियालगमणे इमे दोसा ॥
- गाथा-[३०१] नि** पविसणमगणठाणे वेसिथिदुगुंछिए व बोद्धव्वे ।
सज्झाए संथारे उच्चारे चेव पासवणे ॥
- गाथा-[३०२] नि** सावय तेणा दुविहा विराहणा जा व उवहिणा उ विणा ।
गुम्मियगहणाऽऽहणणा गोणार्इचमढणा चेव ॥
- गाथा-[३०३] नि** फिडिए अण्णोण्णारण तेण य राओ दिया य पंथंमि ।
साणाइ वेसकुत्थिअ तवोवणं पूसिआ जं च ॥
- गाथा-[३०४] नि** अप्पडिलेहिअकंडाविलंभि संयारगंमि आयाए ।
छक्कायसंजमंमि य चिलिणे सेहऽन्नहाभावो ॥
- गाथा-[३०५] नि** कंटगथामुगवालविलंभि जइ वोसिरेज्ज आयाए ।
संजमओ छक्काया गमणे पत्ते अइंते य ॥
- गाथा-[३०६] नि** मुत्तनिरोहे चक्खू वच्चनिरोहेण जीवियं चयइ ।
उड्ढनिरोहे कोड्डं गेलन्नं वा भवे तिसुवि ॥
- गाथा-[३०७] नि** जइ पुण वियाल पत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे ।
सुन्नपरदेउले वा उज्जाणे वा अपरिभोगे ॥
- गाथा-[३०८] नि** आवाय चिलिमिणीए रण्णे वा निब्भए समुद्दिसणं ।
सभए पच्छन्नासइ कमढय कुरुया य संतरिआ ॥
- गाथा-[३०९] नि** कोट्ठग सभा व पुव्विं काले वियाराइभूमिपडिलेहा ।
पच्छा अइंति रत्तिं पत्ता वा ते भवे रत्ति ॥
- गाथा-[३१०] नि** गुम्मियमेसण समणा निब्भय बहिठाण वसहिपडिलेहा ।
सुन्नघर पुव्वभणिअं कंचुग तह दारुदंडेणं ॥
- गाथा-[३११] नि** संथारगभूमितिगं आयरियाणं तु सेसगाणेगा ।
रुंदाए पुप्फइन्ना मंडलिआ आवलीइयरे ॥
- गाथा-[३१२] नि** संथारगहणाए बेंटिअउक्खेवणं तु कायव्वं ।
संथारो घेत्तव्वो मायामयविप्पमुक्केणं ॥
- गाथा-[३१३] नि** पोरिसिआपुच्छणया सामाइय उभय कायपडिलेहा ।
साहणिये दुवे पट्ठे पमज्ज भूमिं जओ पाए ॥

- गाथा-[३१४] नि** अनुजाणह संधारं बाहुवहाणेण वामपासेण ।
कुक्कुडिपायपसारण अतरंतं पमज्जए भूमिं ॥
- गाथा-[३१५] नि** संकोए संडासं उव्वतंतं य कायपडिलेहा ।
दव्वाइउवओगं निस्सासनिरुंभणाऽऽलोयं ॥
- गाथा-[३१६] नि** दारं जा पडिलेहे तेणमए दोण्णि सावए तिण्णि ।
जइ य चिरं तो दारे अण्णं ठावेत्तुं पडिअरइ ॥
- गाथा-[३१७] नि** आगम्म पडिक्कंतो अनुपेहे जाव चोदसवि पुव्वे ।
परिहाणि जा तिगाहा निद्वपमाओ जढो एवं ॥
- गाथा-[३१८] नि** अतरंतो व निवज्जे असंधरंतो य पाउणे एक्कं ।
गद्धभदिट्ठंतेणं दो तिण्णि बहू जह समाही ॥
- गाथा-[३१९] नि** दुविहो य विहरियाविहरिओ उ मयणा उ विहरिए होइ ।
संदिट्ठो जो विहरितो अविहरिअविही इमो होइ ॥
- गाथा-[३२०] भा** अविहरिअ विहरिओ वा जइ सद्धो नत्थि नत्थि उ निओगो ।
नाए जइ ओसण्णा पविसंति तओ य पन्नरस ॥
- गाथा-[३२१] भा** संविग्गमणुण्णाए अइंति अहवा कुले विरंचंति ।
अण्णाउंछं वा सहू एमेव य संजईवग्गे ॥
- गाथा-[३२२] भा** एवं तु अण्णसंभोइयाण संभोइयाण ते चेव ।
जाणित्ता निब्बंधं वत्थव्वेणं स उ पमाणं ॥
- गाथा-[३२३] भा** असइ वसहीए वीसुं राइणिए वसहि भोयणागम्म ।
असहू अपरिणया वा ताहे वीसुं सहूवियरे ॥
- गाथा-[३२४] भा** तिण्हं एक्केण समं मत्तट्ठो अप्पणो अवड्ढं तु ।
पच्छा इयरेण समं आगमणविरेगु सो चेव ॥
- गाथा-[३२५] भा** चेइयवंद निमंतण गुरूहिं संदिट्ठो जो वऽसंदिट्ठो ।
निब्बंधे जोगगहणं निवेय नयणं गुरुसगासे ॥
- गाथा-[३२६] भा** अविहरियमसंदिट्ठो चेइय पाहुडियमेत्त गेण्हंति ।
पाउग्गपउरलंभे नऽम्हे किं वा न भुंजंति ॥
- गाथा-[३२७] भा** गच्छस्स परीमाणं नाउ घेत्तुं तओ निवेयंति ।
गुरुसंघाडग इयरे लद्धं नेयं गुरुसमीवं ॥
- गाथा-[३२८] प्र** मा वट्ठह गिण्ह गुरुजोगं एवइमं वा नियत्तह य भंते ।
अणिवेइए अ गुरुणो हिंढंताणं इमे दो सा ॥
- गाथा-[३२९] प्र** दरहिंडिय वुड्ढाई आगंतु समुद्दिस्संति जं किंचि ।
दव्वविरुद्धं च कयं गुरूहिं जंकिंचि वा भुत्तं ॥
- गाथा-[३३०] भा** एगागिसमुद्दिसगा भुत्ता उ पहेणएण दिट्ठंतो ।
हिंढणदव्वविणासो निद्धं महरं व पुव्वं तु ॥
- गाथा-[३३१] नि** सन्निति भत्तट्ठिय आवस्सग सोहेउं तो अइंति अवरण्हे ।
अब्भुट्ठाणं दंडाइयाण गहणेक्कवयणेणं ॥
- गाथा-[३३२] नि** खुड्डलविगट्ठतेणा उण्हं अवरण्हि तेण उ पएवि ।
पक्खित्तं मोत्तूणं निक्खिवमुक्खित्तमोहेणं ॥
- गाथा-[३३३] नि** अप्पा मूलगुणेषुं विराहणा अप्प उत्तरगुणेषु ।
अप्पा पासत्थाइसु दाणग्गहसंपओगोहा ॥
- गाथा-[३३४] नि** भुंजह मुत्ता अम्हे जो वा इच्छे अमुत्त सह मौज्जं ।
सच्चं त तेसि दाउं अन्नं गेण्हंति वत्थव्वा ॥

- गाथा-[३३५] नि** तिण्णि दिणे पाहुन्नं सव्वेसिं असइ बालवुड्ढाणं ।
जे तरुणा सग्गामे वत्थव्वा बाहिं हिंडंति ॥
- गाथा-[३३६] नि** संघाडगसंजोगो आगंतुगभद्दएयरे बाहिं ।
आगंतुगा व बाहिं वत्थव्वगभद्दए हिंडे ॥
- गाथा-[३३७] नि** वत्थिण्णा खुड्डलिआ पमाणजुत्ता य तिविह वसहीओ ।
पढमबिड्यासु ठाणे तत्थ य दोसा इमे होंति ॥
- गाथा-[३३८] नि** खरकम्मिअ वाणियगा कप्पडिअ सरक्खगा य वंठा य ।
संमीसावासेणं दोसा य हवंति नेगविहा ॥
- गाथा-[३३९] नि** आवासगअहिकरणे तदुमय उच्चारकाइयनिरोहे ।
संजमआयविराहण संका तेणे नपुंसित्थी ॥
- गाथा-[३४०] नि** आवासयं करिंते पवंचए झाणजोगवासाओ ।
असहण अपरिणया वा भायणभेओ य छक्काया ॥
- गाथा-[३४१] नि** सुत्तत्थऽकरण नासो करणे उड्डंवगाइ अहिगरणं ।
पासवणिअरनिरोहे गेलन्नं दिट्ठिउड्डाओ ॥
- गाथा-[३४२] नि** मा दिच्छिहिंति तो अप्पडिलिहिए दूर गंतु वोसिरति ।
संजमआयविराहण गहणं आरक्खित्तेणेहिं ॥
- गाथा-[३४३] नि** ओणयपमज्जमाणं दट्ठं तेणेत्ति आहणे कोई ।
सागारिअसंघट्टण अपुमित्थी गेण्ह साहइ वा ॥
- गाथा-[३४४] नि** ओरालसरीरं वा इत्थि नपुंसा बलावि गेण्हंति ।
सावाहाए ठाणे निंते आवडणपडणाई ॥
- गाथा-[३४५] नि** तेणोत्ति मण्णमाणो इमोवि तेणोत्ति आवडइ जुद्धं ।
संजमआयविराहणमायणेयाइणो दोसा ॥
- गाथा-[३४६] नि** तम्हा पमाणजुत्ता एक्केक्कस्स उ तिहत्थसंथारो ।
भायणसंथारंतर जह वीसं अंगुला हुंति ॥
- गाथा-[३४७] नि** मज्जा रमूसगाइ य नवि वारे नवि य जाणुघट्टणया ।
दो हत्था अबाहा नियमा साहुस्स साहूओ ॥
- गाथा-[३४८] नि** भुत्ताभुत्तसमुत्था भंडणदोसा य वज्जिआ एवं ।
सीसंतेण व कुड्डं तु हत्थं मोत्तूण ठायंति ॥
- गाथा-[३४९] नि** पुव्वुद्धिट्ठो उ विही इहवि वसंताण होइ सो चेव ।
आसज्ज तिन्नि वारे निसन्न आउंटए सेसा ॥
- गाथा-[३५०] नि** आवस्सिअमासज्जं नीइ पमज्जंतु जाव उच्छउन्नं ।
सागारिय तेणुब्भासए य संका तउ परेणं ॥
- गाथा-[३५१] नि** नत्थि उ पमाणजुत्ता खुड्डलिया चेव वसति जयणाए ।
पुरहत्थ पच्छ पाए पमज्ज जयणाए निग्गमणं ॥
- गाथा-[३५२] नि** उस्स भायणाइं मज्झे विसमे अहाकडा उवरिं ।
ओवग्गहिओ दोरो तेण य वेहासि लंबणया ॥
- गाथा-[३५३] नि** खुड्डलियाए असई विच्छिन्नाए उ मालणा भूमी ।
बिलधम्मो चारभडा साहरणेगंतकडपोत्ती ॥
- गाथा-[३५४] नि** असई य चिलिमिलीए मए व पच्छन्न मूएइ लक्खे ।
आहारा नीहारो निग्गमणपवेस वज्जेह ॥
- गाथा-[३५५] नि** पिंडेण सुत्तकरणं आसज्ज निसीहियं च न करिंति ।
कासण न पमज्जणया न य हत्थो जयण वेरत्ति ॥

गाथा-[३५६] नि	वसहिति पत्ताण खेत्त जयणा काऊणावस्सयं तत्तो ठवणा । पहणीयपत्त सम्मत्त मामग भद्दग सद्धे य अचियत्ते ॥
गाथा-[३५७] भा	बाहिरगामे वुच्छा उज्जाणे ठाणवसहिपडिलेहा । इहरा उ गहिअमंडा वसही वाघाय उड्डाहो ॥
गाथा-[३५८] भा	मइल कुचेले अब्भंगिएल्लए साण खुज्ज वडभे या । एए उ अप्पसत्था हवन्ति खित्ताउ नित्ताणं ॥
गाथा-[३५९] भा	नारी पीवरगब्भा वडुकुमारी य कट्टभारो य । कासा यवत्थ कुच्चंधरा य कज्जं न सारहेति ॥
गाथा-[३६०] भा	चक्कयरंमि भमाडो मुखामारो य पंडुरंगमि । तच्चन्नि रुहिरपडणं बोडियमसिए धुवं मरणं ॥
गाथा-[३६१] भा	जंबूअ चास मउरे मारद्दाए तहेव नउले य । दंसणमेव पसत्थं पयाहिणे सव्वसंपत्ती ॥
गाथा-[३६२] भा	नंदी तूरं पुन्नस्स दंसणं संखपडहसद्धो य । भिंंगार छत्त चामर घयप्पडागा पसत्थाइं ॥
गाथा-[३६३] भा	समणं संजयं दंतं सुमणं मोयणा दहिं । मीणं घंटं पडागं च सिद्धमत्थं विआगरे ॥
गाथा-[३६४] भा	तम्हा पडिलेहिअ दीवियंमि पुव्वगय असइ सारविए । फड्डयफड्डपवेसो कहणा न य उट्टइयरेसिं ॥
गाथा-[३६५] भा	आयरियअणुट्ठाणो ओहावण बाहिरा यऽदक्खिण्णा । साहणय वंदणिज्जा अणालवंतेऽवि आलावो ॥
गाथा-[३६६] भा	वुड्ढा निरोवयारा अगगहणमलोगजत्त वोच्छेओ । तम्हा खलु आलवणं सयमेव उ तत्थ धम्मकहा ॥
गाथा-[३६७] भा	वसहिफलं धम्मकहा कहणअलद्धी उ सीस वावारे । पच्छा अइंति वसहिं तत्थ य मुज्जो इमा जयणा ॥
गाथा-[३६८] भा	पडिलेहण संधारग आयरिए तिण्णि सेस उ कमेण । विंतिअउक्खेवणया पविसइ ताहे य धम्मकही ॥
गाथा-[३६९] भा	उच्चारे पासवणे लाउय निल्लेवणे य अच्छणए । पुव्वट्ठिय तेसि कहेऽकहिए आयरणवोच्छेओ ॥
गाथा-[३७०] भा	मत्तट्ठिआ व खवगा अमंगलं चोयए जिणाहरणं । जइ खमगा वंदंता दायंतियरे विहिं वोच्छं ॥
गाथा-[३७१] भा	सव्वे दट्ठुं उग्गाहिएण ओयरिअ भयं समुप्पज्जे । तम्हा ति दु एगो वा उग्गाहिअ चेइए वंदे ॥
गाथा-[३७२] भा	सद्धामंगोऽणुग्गाहियंमि ठवणाइया य दोसा उ । घरचेइअ आयरिए कइवयगमणं च गहणं च ॥
गाथा-[३७३] भा	खेत्तंमि अपुव्वंमी तिट्ठाणट्ठा कहिंति दाणाइं । असई य चेइयाणं हिंडंता चेद दायंति ॥
गाथा-[३७४] भा	दाने अभिगमसद्धे सम्मत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते । मामाए अचियत्ते कुलाइं दायंति गीयत्था ॥
गाथा-[३७५] भा	कयउस्सग्गामंतण पुच्छणया अकहिएगयरदोसा । ठवणकुलाण य ठवणा पविसइ गीयत्थसंघाडो ॥
गाथा-[३७६] भा	गच्छंमि एस कप्पो वासावासे तहेव उडुबुद्धे । ग्रामागरनिगमेसुं अइसेसी ठावए सद्धी ॥

गाथा-[३७७] नि	किं कारणं चमढणा दव्वखओ उग्गमोऽवि न सुज्झे । गच्छंमि निययकज्जे आयरियगिलाणपाहुणए ॥
गाथा-[३७८] भा	पुव्विंपि वीरसुणिया छिक्का छिक्का पहावए तुरियं । सा चमढणाए सि खि न्ना संतंपि न इच्छए घेत्तुं ॥
गाथा-[३७९] भा	एवं सङ्कुलाइं चमढिज्जंतं ताइं अण्णेहिं । निच्छंति किंचि दाउं संतंपि तयं गिलाणस्स ॥
गाथा-[३८०] भा	दव्वक्खएण पंतो इत्थिं धाएज्ज कीस ते दिण्णं । भद्दो हट्ठपहट्ठो करेज्ज अन्नंपि समणट्ठा ॥
गाथा-[३८१] भा	आयरिअनुकंपाए गच्छो अनुकंपिओ महाभागो । गच्छाणुकंपयाए अव्वोच्छित्तीकया तित्थ ॥
गाथा-[३८२] भा	परिहीणं तं दव्व चमढिज्जंतं तु अण्णमण्णेहिं । परिहीणमंमि य दव्वे नत्थि गिलाणस्स जं जोगं ॥
गाथा-[३८३] भा	चत्ता होंति गिलाणा आयरिया बालवुड्ढसेहा य । खमगा पाहुणगाविय मज्जायमइक्कमंतेणं ॥
गाथा-[३८४] भा	सारक्खिया गिलाणा आयरिया बालवुड्ढसेहा य । खमगा पाहुणगाविय मज्झायं ठावयंतेणं ॥
गाथा-[३८५] नि	जड्ढे महिसे वारी आसे गोणे अ तेसि जावसिआ । एएसिं पडिवक्खे चत्तारि उ संजया हुंति ॥
गाथा-[३८६] भा	जड्ढेजं वा तं वा सुकुमारं महिसिओ महुरमासो । गोणो सुगंधदव्वं इच्छइ एमेव साहूवि ॥
गाथा-[३८७] भा	एवं च पुणो ठविए अप्पविसंते भवे इमे दोसो । वीसरण संजयाण विसुक्ख गणे अ आरामो ॥
गाथा-[३८८] भा	अलसं घसिरं सुविरं खमगं कोहमाणमायलोहिल्लं । कोऊहलपडिबद्धं वेयावच्चं न कारिज्जा ॥
गाथा-[३८९] प्र	ता अच्छइ जा फिडिओ सइकालो अलस सोविरे दोसा । गुरुमाई तेण विणा विराहणुस्सक्कठवणाई ॥
गाथा-[३९०] प्र	अप्पत्ते अविलंभो हाणी ओसक्कणाइ अइभद्दे । अण्हिंडंतो अ चिरं न लहइ जंकिंचि वा नेइ ॥
गाथा-[३९१] प्र	गिण्हामि अप्पणो ता पज्जत्तं तो गुरूण पच्छा उ । घित्तूण तेसि पच्छा सीअल ओसक्कमाईओ ॥
गाथा-[३९२] प्र	परिआविज्जइ खवगो अह गिण्हइ अप्पणो इअरहाणी । अविदिन्ने उमपाणाइ बद्धो न उगच्छई पुणो जं च माई भद्दगभोई पंतेण उ अप्पणो छाए ॥
गाथा-[३९३] प्र	ओहासइ खीराई विज्जंतं वा न वाराई लुद्धो । जे अगवेसणदोसा एगस्स य ते उ लुद्धस्स ॥
गाथा-[३९४] प्र	नडमाई पिच्छंतो ता अच्छइ जाव फिट्ठई वेला । सुत्तत्थे पडिबद्धो ओसक्कणुसक्कमाईआ ॥
गाथा-[३९५] भा	एयद्दोसविमुक्कं कडजोगिं नायसीलमायारं । गुरुभत्तिमं विणीयं वेयावच्चं तु कारेज्जा ॥
गाथा-[३९६] भा	साहंति य पिअधम्मा एसणदोसे अभिगहविसेसे । एवं तु विहिगहणे दव्वं वड्ढंति गीयत्था ॥

- गाथा-[३९७] भा** दव्वप्पमाण गणणा खरिअ फोडिअ तहेव अब्धा य ।
संविग्ग एगठाणे अनेगसाहुसु पन्नरस ॥
- गाथा-[३९८] भा** संघाडेगो ठवणाकुलेसु सेसेसु वालवुड्ढाई ।
तरुणा बाहिरगामे पुच्छा दिट्ठंतऽगारीए ॥
- गाथा-[३९९] नि** पुच्छा गिहिणो चिंता दिट्ठंतो तत्थ खुज्जव्वोरीए ।
आपुच्छिऊण गमणं दोसा य इमे अणापुच्छे ॥
- गाथा-[४००] भा** रकिमिअभत्तगदाणे नेहादवहरइ थोवं थोवं तु ।
पाहुण वियाल आगम विसन्न आसासणा दाणं ॥
- गाथा-[४०१] भा** एवं पीइविवुड्ढी विवरीयऽण्णेण होइ दिट्ठंतो ।
लोउत्तरे विसेसो असंचया जेण समणा उ ॥
- गाथा-[४०२] भा** जणलावो परगामे हिंढिंताऽऽणेंति वसइ इह गामे ।
दिज्जइ बालाईणं कारणजाए य सुलभं तु ॥
- गाथा-[४०३] भा** पाहुणविसेसदाने निज्जर किंती य इहर विवरीयं ।
पुव्वं चमढणसिग्गा न देंति संतंपि कज्जेसु ॥
- गाथा-[४०४] भा** गामब्भासे वयरी नीसंदकडुप्फला य खुज्जा य ।
पक्कामालसडिंभा घायंति घरे गया दूरे ॥
- गाथा-[४०५] भा** गामब्भासे वयरी नीसंदकडुप्फला य खुज्जा य ।
पक्कामालसडिंभा खायंतियरे गया दूरं ॥
- गाथा-[४०६] भा** सिग्घयरं आगमणं नेसिऽण्णेसिं च देंति सयमेव ।
खायंती एमेव उ आयपरहिआवहा तरुणा ॥
- गाथा-[४०७] भा** खीरदहिमाइयाणं लंभो सिग्घतरगं च आगमणं ।
पइरिक्क उग्गमाई विजढा अनुकंपिआ इयरे ॥
- गाथा-[४०८] भा** आपुच्छिअ उग्गाहिअ अण्णं गामं वयं तु वच्चामो ।
अण्णं व अपज्जत्ते होंति अपुच्छे इमे दोसा ॥
- गाथा-[४०९] भा** तेणाएसगिलाणे सावय इत्थी नपुसं पुच्छा य ।
आयरिअबालवुड्ढा सेहा खमगा य परिवत्ता ॥
- गाथा-[४१०] नि** आयरिए आपुच्छा तस्संदिट्ठे य तंमि उवसंते ।
चेइयगिलाणकज्जाइएसु गुरुणो य निग्गमणं ॥
- गाथा-[४११] नि** भण्णइ पुव्वनिउत्ते आपुच्छित्ता वयंति ते समणा ।
अणाभोगे आसन्ने काइयउच्चारभोमाई ॥
- गाथा-[४१२] नि** दवमाइनिगयं वा सेज्जायर पाहुणं च अप्पाहे ।
असइं दूरगओऽविय नियत्तं इहराउ ते दोसा ॥
- गाथा-[४१३] नि** अण्णं गाम च वए इमाइं कज्जाइं तत्थ नाऊणं ।
तत्थवि अप्पाहणया नियत्तई वा सईकाले ॥
- गाथा-[४१४] नि** दूरट्ठिअ खुड्डुलए नव भड अगणी य एंत पडिणीए ।
पाओग्गकालऽइक्कम एक्कगलंभो अपज्जत्तं ॥
- गाथा-[४१५] नि** पाउग्गाईणमसई संविगं सण्णिमाइ अप्पाहे ।
जइ य चिरं तो इयरे ठवित्तु साहारणं भुंजे ॥
- गाथा-[४१६] नि** जाए दिसाए उ गया भत्तं घेत्तुं वओ पडियरंति ।
अणपुच्छनिगयाणं चउद्दिसं होइ पडिलेहा ॥
- गाथा-[४१७] नि** पंथेणेगो दो उप्पहेण सद्दं करेंति वच्चंता ।
अक्खरपडिसाडणया पडियरनिअरेसि मग्गेणं ॥

गाथा-[४१८] नि	गामे व गंतुं पुच्छे घरपरिवाडीए जत्थ उ न दिट्ठा । तत्थेव बोलकरणं पिंडियजणसाहणं चेव ॥
गाथा-[४१९] नि	एवं उग्गमदोसा विजढा पइरिक्कया अणोमाणं । मोहतिगिच्छा य कया विरियायारो य अनुचिण्णो ॥
गाथा-[४२०] नि	अनुकंपायरियाई दोसा पइरिक्कजयणसंसट्ठं । पुरिसे काले खमणे पढमालिय तीसु ठाणेसु ॥
गाथा-[४२१] भा	चोयगवयणं अप्पाऽणुकंपिओ ते य मे परिच्चत्ता । आयरियअनुकंपाए परलोए इह पसंसणया ॥
गाथा-[४२२] भा	एवंपि अपरिचत्ता काले खवणे य असहुपुरिसे य । कालो गिम्हे उ भवे खमगो वा पढमबिइएहिं ॥
गाथा-[४२३] भा	जइ एवं संसट्ठं अप्पत्ते दोसिणाइणं गहणं । लंबणभिव्खा दुविहा जहण्णमुक्कोस तिअपणए ॥
गाथा-[४२४] नि	एगत्थ होइ मत्तं बइयंमि पडिग्गहे दवं होइ । राउग्गायरियाई भत्ते बिइए उ संसत्तं ॥
गाथा-[४२५] नि	जइ रित्तो तो दव मत्तगंमि पढमालियाए करणं तु । संसत्तगहण दवदुल्लहे य तत्थेव जं पत्तं ॥
गाथा-[४२६] नि	अंतरपल्लीगहीयं पढमागहियं व सव्व भुंजेज्जा । धुवलंभसंखडीयं व जं गहियं दोसिणं वावि ॥
गाथा-[४२७] नि	दरहिंडिए व भाणं भरियं भोच्चा पुणोवि हिंडिज्जा । कालो वाऽइक्कमई भुंजेज्जा अंतरा सव्वं ॥
गाथा-[४२८] नि	एसो उ विही भणिओ तंमि वसंताण होइ खेत्तंमि । पडिलेहणंपि इत्तो वोच्छं अप्पक्खरमहत्थं ॥
गाथा-[४२९] नि	दुविहा खलु पडिलेहा छउमत्थाणं व केवलीणं व । अब्भितर बाहिरिआ दुविहा दव्वे य भावे य ॥
गाथा-[४३०] नि	पाणेहि उ संसत्ता पडिलेहा होइ केवलीणं तु । संसत्तमसंसत्ता छउमत्थाणं तु पडिलेहा ॥
गाथा-[४३१] नि	संसज्जइ धुवमेअं अपेहियं तेण पुव्व पडिलेहे । पडिलेहिअंपि संसज्जइत्ति संसत्तमेव जिणा ॥
गाथा-[४३२] नि	नाऊण वेयणिज्जं अइबहुअं आउअं च वोयागं । कम्मं पडिलेहेउं वच्चंति जिणा समुग्घायं ॥
गाथा-[४३३] नि	संसत्तमसंसत्ता छउमत्थाणं तु होइ पडिलेहा । चोयग जह आरक्खी हिंडिताहिंडिया चेव ॥
गाथा-[४३४] नि	तित्थयरा रायाणो साहू आरक्खि मंडगं च पुरं । तेणसरिसा य पाणा तिगं च रयणा भवो दंडो ॥
गाथा-[४३५] नि	किं कय किं वा सेसं किं करणिज्जं तवं च न करेमि । पुव्वावरत्तकाले जागरओ भावपडिलेहा ॥
गाथा-[४३६] नि	ठाणे उवगरणे या थंडिलउवथंममग्गपडिलेहा । किंमाई पडिलेहा पुव्वणहे चेव अवरणहे ॥
गाथा-[४३७] भा	ठाणनिसीयतुयट्ठणउवगरणाईण गहणनिक्खेवे । पुव्वं पडिलेहे चक्खुणा उ पच्छा पमज्जेज्जा ॥
गाथा-[४३८] भा	उट्ठनिसीयतुयट्ठण ठाणं तिविहं तु होइ नायव्वं । उट्ठं उच्चाराई गुरुमूलपडिक्कमागम्म ॥

- गाथा-[४३९] भा** पक्खे उस्सासाई पुरतो अविणीय मग्गओ वाऊ ।
निक्खम पवेसवज्जण भावासण्णो गिलाणाई ॥
- गाथा-[४४०] भा** भारे वेयणखमगुण्हमुच्छपरियावळिंदणे कलहो ।
अव्वाबाहे ठाणे सागारपमज्जाणा जयणा ॥
- गाथा-[४४१] भा** संडास पमज्जित्ता पुणोवि भूमिं पमज्जिआ निसिए ।
राओ य पुव्वमणिअं तुयट्टणं कप्पई न दिवा ॥
- गाथा-[४४२] भा** अद्धाणपरिस्संतो गिलाणवुद्धा अनुणवेत्ताणं ।
संथारुत्तरपट्टो अत्थरण निवज्जणाऽऽलोगं ॥
- गाथा-[४४३] भा** उवगरणाईयाणं गहणे निक्खेवणे य संकमणे ।
ठाण निरिक्खपमज्जण काउं पडिलेहए उवहिं ॥
- गाथा-[४४४] भा** उवगरण वत्थपाए वत्थे पडिलेहणं तु वोच्छामि ।
पुव्वण्हे अवरण्हे मुहंनंतगमाइ पडिलेहा ॥
- गाथा-[४४५] नि** उट्ठं चिरं अतुरिअं सव्वं ता वत्थ पुव्व पडिलेहे ।
तो भिइअं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥
- गाथा-[४४६] भा** वत्थे काउट्ठमि य परवयण ठिओ गहाय दसियंते ।
तं न भवति उक्कुडुओ तिरिअं पेहे जह विलित्तो ॥
- गाथा-[४४७] भा** घेत्तु थिरं अतुरिअं तिभाग बुद्धीयं चक्खुगा पेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥
- गाथा-[४४८] नि** अणच्चाविअं अवलिअं अणाणुबंधि अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा पाणी पाणमज्जणं ॥
- गाथा-[४४९] भा** वत्थे अप्पाणंमि य चउह अणच्चाविअं अवलिअं च ।
अनुबंधि निरंतरया तिरिउट्ठऽह य घट्टणा मुसली ॥
- गाथा-[४५०] नि** आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी विक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥
- गाथा-[४५१] भा** वितहकरणे चतुरिअं अण्णं अण्णं व गेम्हणाऽऽरमडा ।
अंतो व होज्ज कोणा निसियण तत्थेव संमद्दा ॥
- गाथा-[४५२] भा** मोसलि पुव्वुद्धिद्दा पप्फोडण रेणुगुंडिए चेव ।
विक्खेवं तुक्खेवो वेइयपणगं व छट्ठोसा ॥
- गाथा-[४५३] नि** पसिढिल पलंब लोला एगामोसा अणेगरूवघुणा ।
कुणइ पमाणपमायं संकियगणणोवगं कुज्जा ॥
- गाथा-[४५४] भा** पसिढिलपघणं अतिराइयं च विसमगहणं व कोणं वा ।
भूमीकरलोलणया कट्ठणगहणेकूकआमोसा ॥
- गाथा-[४५५] भा** घुणणा तिण्ह परेणं बहूणि वा घेत्तु एक्कई घुणइ ।
खोडणपमज्जणासु य संकियगणणं करि पमाई ॥
- गाथा-[४५६] नि** अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं सेसाणि य अप्पसत्थाणि ॥
- गाथा-[४५७] भा** नवि ऊणा नवि रिता अविवच्चासा उ पढमओ सुद्धो ।
सेसा होइ असुद्धा उवरिल्ला सत्त जे भंगा ॥
- गाथा-[४५८] नि** खोडपमज्जणवेलाउ चेव ऊणाहिया मुणेयव्वा ।
अरुणावासग पुव्वं परोप्परं पाणिपडिलेहा ॥
- गाथा-[४५९] नि** एते उ अणाएसा अंधारे उग्गएविहु न दीसे ।
मुहरयनिसिज्जवोले कप्पतिग दुवट्ट वुइ सूरो ॥

गाथा-[४६०] नि	पुरिसुवहिविच्चासो सागरिए करिज्ज उवहिवच्चासं । आपुच्छित्ताणं गुरुं पडुच्चमाणेयरे वितहं ॥
गाथा-[४६१] नि	पडिलेहणं करेत्तो मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा । देइ व पच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥
गाथा-[४६२] नि	पुढवीआउक्काएतेऊवावणस्सइतसाणं । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपि विराहओ होइ ॥
गाथा-[४६३] नि	घडगाइपलोदणया मट्टिय अगणी य बीय कुंथाई । उदगगया व तसेयर ओमुय संघट्ट झावणया ॥
गाथा-[४६४] प्र	इय दव्वओ उ छण्हंपि विराहओ भावओ इहरहावि । उवउत्तो पुण साहू संपत्तीए अवहओ अ ॥
गाथा-[४६५] नि	पुढवीआउक्काएतेऊवाऊवणस्सइतसाणं । पडिलेहणमाउत्तो छण्हंणाराहओ होइ ॥
गाथा-[४६६] नि	जोगो जोगो जिणसासणंमि दुक्खक्खया पउंजंते । अण्णोणमवाहाए असवत्तो होइ कायव्वो ॥
गाथा-[४६७] नि	जोगे जोगे जिणसासणंमि दुक्खक्खया पउंजंते । एक्केक्कंमि अनंता वट्ठंता केवली जाया ॥
गाथा-[४६८] नि	एवं पडिलेहंता अईयकाले अनंतगा सिद्धा । चोयगवयणं सययं पडिलेहेमो जओ सिद्धी ॥
गाथा-[४६९] नि	सेसेसु अयट्ठंतो पडिलेहंतोवि देसमाराहे । जइ पुण सव्वाराहणमिच्छसि तो णं निसामेहि ॥
गाथा-[४७०] नि	पंचिंदिएहिं गुत्तो मणमाईतिविहकरणमाउत्तो । तवनियमसंजमंभि अ जुत्तो आराधओ होइ ॥
गाथा-[४७१] भा	इंदियविसयनिरोहो पत्तेसुवि रागदोसनिग्गहणं । अकुसलजोगनिरोहो कुसलोदय एगभावो वा ॥
गाथा-[४७२] भा	अब्भितरबाहिरं तवोवहाणं दुवालसविहं तु । इंदियतो पुव्वुत्तो नियमो कोहाइओ बिइओ ॥
गाथा-[४७३] भा	पुढविदगअगणिमारुअवणस्सइबितिचउक्कपंचिंदी । अज्जीव पोत्थगाइसु गहिएसु असंजमो जेणं ॥
गाथा-[४७४] भा	पहेत्ता संजमो वुत्तो उपेहितावि संजमो । पमज्जेत्ता संजमो वुत्तो परिट्ठावेत्तावि संजमो ॥
गाथा-[४७५] भा	ठाणाइ जत्थ चेए पुव्वं पडिलेहिऊण चेएज्जा । संजयगिहिचोयणचोयणे य वावारओवेहा ॥
गाथा-[४७६] भा	उवगरणं अइरेणं पाणाई वाऽवहट्ठ संजमणं । सागारिएऽपमज्जण संजम सेसे पमज्जणया ॥
गाथा-[४७७] भा	जोगतिगं पुव्वभणिअं समत्तपडिलेहणाए सज्झाओ । चरिमाए पोरिसीए पडिलेह तआ उ पाय दुगं ॥
गाथा-[४७८] नि	पोरिसि पमाणकालो निच्छयववहारिओ जिणक्खाओ । निच्छयओ करणजुओ ववहारमतो परं वोच्छं ॥
गाथा-[४७९] नि	अयणाईयदिणगणे अट्ठगुणेगट्ठिभाइए लद्धं । उत्तरदाहिणमाई पोरिसि पयसुज्झपक्खेवा ॥
गाथा-[४८०] प्र	अट्ठेगसट्ठिभागा खयवुट्ठी होइ जं अहोरत्ते । तेणट्ठगुणक्कारो एगट्ठी सूरतेएणं ॥

गाथा-[४८१] नि	आसाढे मासे दो पया पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
गाथा-[४८२] नि	अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेणं तु दुअंगुलं । वड्डए हायए यावि मासेणं चउरंगुलं ॥
गाथा-[४८३] नि	आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य । फग्गुणवइसाहेसु य बद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥
गाथा-[४८४] नि	जेट्टामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा । अट्ठहिं बीअतियंमि य तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥
गाथा-[४८५] नि	उवउज्जिऊण पुव्वं तल्लेसो जइ करेइ उवओगं । सोएण चक्खुणा घाणओ य जीहाए फासेणं ॥
गाथा-[४८६] भा	पडिलेहणियाकाले फिडिए कल्लाणगं तु पच्छित्तं । पायस्स पासु बेट्टो सोयादुवउत्त तल्लेसो ॥
गाथा-[४८७] नि	मुहणंतएण गोच्छं गोच्छगगहिअंगुलीहिं पडलाइं । उक्कुडुयभावणवत्थे पलिमंथाईसु तं न भवे ॥
गाथा-[४८८] नि	चउकोण भाणकण्णं पमज्ज पाएसरीय तिगुणं तु । माणस्स पुप्फगं तो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे ॥
गाथा-[४८९] नि	मूसयरयउक्केरे घणसंताणए इय । उदए मट्ठिआ चेव एमेया पडिवत्तिओ ॥
गाथा-[४९०] नि	नवगनिवेसे दूराउ उक्केरो मूसएहिं उक्किण्णो । निद्धमहि हरतणू वा ठाणं भेत्तूण पविसेज्जा ॥
गाथा-[४९१] नि	कोत्थलगारिअधरगं घणसंताणाइया व लग्गेज्जा । उक्केरं सट्ठाणं हरतणु संचिट्ठ जा सुक्को ॥
गाथा-[४९२] नि	इयरेसु पोरिसितिगं संचिक्खावेत्तु तत्तिअंछिंदे । सव्वं दावि विगिंचइ पोरानं मट्ठिअं ताहे ॥
गाथा-[४९३] नि	पत्तं पमज्जिऊणं अंतो बाहिं सइं तु पप्फोडे । केइ पुण तिणिण वारा चउरंगुल भूमि पडणमया ॥
गाथा-[४९४] नि	विंटीअबंधणधरणे अगणी तेणे य दंडियक्खोभे । उउबद्ध धरणबंधण वासासु अबंधणा ठवणा ॥
गाथा-[४९५] भा	रयताण माण धरणा उउबद्धे निक्खिवेज्ज वासासु । अगणीतेण मएण व रायक्खोभे विराहणया ॥
गाथा-[४९६] भा	परिगलमाणा हीरेज्ज डहणा मेया तहेव छक्काया । गुत्तो व सयं डज्जे हीरेज्ज व जं च तेण विणा ॥
गाथा-[४९७] भा	वासासु नत्थि अगणी नेव य तेणा उ दंडिया सत्था । तेण अबंधणठवणा एवं पडिलेहणा पाए ॥
गाथा-[४९८] नि	अणावायमसंलोए अणवाए चेव होइ संलोए । आवायमसंलोए आवाए चेव संलोए ॥
गाथा-[४९९] नि	तत्थावायं दुविहं सपक्खपरपक्खओ य नायव्वं । दुविहं होइ सपक्खे संजय तह संजईणं च ॥
गाथा-[५००] नि	संविग्गमंसविग्गा संविग्ग मणुण्णएयरा चेव । असंविग्गावि दुविहा तप्पक्खियएअरा चेव ॥
गाथा-[५०१] नि	परपक्खेविय दुविहं माणुस तेरिच्छिअं च नायव्वं । एक्केक्कंपि य तिविहं पुरिसित्थिनपुंसगे चेव ॥

- गाथा-[५०२] नि** पुरिसावायं तिविहं दंडिअ कोडुंबिए य पागइए ।
ते सोयऽसोयवाई एमेविट्थी नपुंसा य ॥
- गाथा-[५०३] नि** एए चेव विभागा परतित्थीणंपि होइ मणुयाणं ।
तिरिआणंपि विभागा अओ परं कित्तइस्सामि ॥
- गाथा-[५०४] नि** दित्तादित्ता तिरिआ जहण्णमुक्कोसमज्झिमा तिविहा ।
एमेविट्थिनपुंसा दुगुंछिअदुगुंछिआ नेया ॥
- गाथा-[५०५] नि** गमण मणुण्णे इयरे वितहायरणंमि होइ अहिगरणं ।
पउरदवकरण दट्ठुं कुसील सेहऽण्णहाभावो ॥
- गाथा-[५०६] नि** जत्थऽम्हे वच्चामो जत्थ य आयरइ नाइवग्गो णे ।
परिभव कामेमाणा संकेयगदिन्नया वावि ॥
- गाथा-[५०७] नि** दव अप्प कलुस असई अवण्ण पडिसेह विप्परीणामो ।
संकाईया दोसा पंडित्थिगाहे य जं वऽण्णं ॥
- गाथा-[५०८] नि** आहणणाई दित्ते गरहिअतिरिएसु संकमाईया ।
एमेव य संलोए तिरिए वज्जेत्तु मणुयाणं ॥
- गाथा-[५०९] नि** कलुसदवे असई य व पुरिसालोए हवंति दोसा उ ।
पंडित्थीसुवि एए खद्धे वेउव्वि मुच्छा य ॥
- गाथा-[५१०] नि** आवायदोस तइए बिइए संलोयओ भवे दोसा ।
ते दोवि नत्थि पढमे तहिं गमणं तत्थिमा मेरा ॥
- गाथा-[५११] नि** कालमकाले सण्णा कालो तइयाइ सेसयमकालो ।
पढमा पोरिसि आपुच्छ पाणगमपुप्फियऽण्णदिसिं ॥
- गाथा-[५१२] नि** अइरेगगहण उग्गाहिएण आलोय पुच्छिउं गच्छे ।
एसा उ अकालंमी अणहिंडिय हिंडिया कालो ॥
- गाथा-[५१३] नि** कप्पेरुणं पाए एक्केक्कस्स उ दुवे पडिगहए ।
दाउं दो दो गच्छे तिण्हऽट्ठ दवं तु घेत्तूणं ॥
- गाथा-[५१४] नि** अजुगलिया अतुरंता विकहारहिया वयंति पढमं तु ।
निसिइत्तु डगलगहणं आवडणं वच्चमासज्ज ॥
- गाथा-[५१५] नि** अणावायमसंलोए परस्सणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥
- गाथा-[५१६] नि** विट्थिण्णे दूरमो गाढे नासण्णे बिलघज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥
- गाथा-[५१७] नि** एगदुगतिगचउक्कगपंचछसत्तट्ठणवगदसगेहिं ।
संजोगा कायव्वा मंगसहस्सा चउव्वीसं ॥
- गाथा-[५१८] प्र** उभयमुहं रासिदुगं हेट्ठिल्लाणंतरेण भय पढमं ।
लद्धहरासिविभत्ते तस्सुवरिगुणं तु संजोगा ॥
- गाथा-[५१९] भा** आयापवयणसंजम तिविहं उग्घाइमं तु नायव्वं ।
आरामं वच्च अगणी पिट्ठण असुई य अन्नत्थ ॥
- गाथा-[५२०] भा** विसम पलोट्ठण आया इयरस्स पलोट्ठणंमि छक्काया ।
झुसिरंमि विच्छुगाई उभयक्कमणे तसाईया ॥
- गाथा-[५२१] भा** जे जंमि उउंमि कया पयावणाईहिं थंडिला ते उ ।
होंतियरंमि चिरकया वासा वुच्छेय बारसगं ॥
- गाथा-[५२२] भा** हत्थायामं चउरस्स जहण्णं जोयणे बिछक्कियरं ।
चउरंगुलप्पमाणं जहण्णयं दूरमोगाढं ॥

- गाथा-[५२३] भा** दव्वासणं भवणाइयाण तहियं तु संजमायाए ।
आयापवयणसंजमदोसा पुण भावआसन्ने ॥
- गाथा-[५२४] भा** होंति बिले दो दोसा तसेसु बीएसु वावि ते चेव ।
संजोगओ अ दोसा मूलगमा होंति सविसेसा ॥
- गाथा-[५२५] नि** दिसिपवण गामसूरियछायाए पमज्जिऊण तिव्खुत्तो ।
जस्सोगहोत्ति काऊण वोसिरे आयमेज्जा वा ॥
- गाथा-[५२६] भा** उत्तरपुव्वा पुज्जा जम्माए निसियरा अहिवडंति ।
धाणाऽरिसा य पवणे सूरियगामे अवण्णो उ ॥
- गाथा-[५२७] भा** संसत्तग्गहणी पुण छायाए निगयाए वोसिरइ ।
छायासइ उण्हंमिवि वोसिरिय मुहुत्तयं विट्ठे ॥
- गाथा-[५२८] नि** उवगरणं वामे ऊरुगंमि मत्तं च दाहिणे हत्थे ।
तत्थऽन्नत्थ व पुंछे तिहि आयमणं अदूरंमि ॥
- गाथा-[५२९] नि** पढमासइ अमणुत्तेयराण गिहियाण वावि आलोए ।
पत्तेयमत्त कुरुकुय दवं व पउरं गिहत्थेसु ॥
- गाथा-[५३०] नि** तेण परं पुरिसाणं असोयवाईण वच्च आवायं ।
इत्थिनपुंसालोए परंमुहो कुरुकुया सा उ ॥
- गाथा-[५३१] नि** तेण परं आवायं पुरिसेअरइत्थियाण तिरियाणं ।
तत्थविअ परिहरेज्जा दुगुंछिए दित्तचित्ते य ॥
- गाथा-[५३२] नि** ततो इत्थिनपुंसा तिविहा तत्थवि असोयवाईसु ।
तहिअं तु सद्दकरणं आउलगमणं कुरुकुया य ॥
- गाथा-[५३३] नि** अव्वोच्छिन्ना तसा पाणा पडिलेहा न सुज्झई ।
तम्हा हट्ठपहट्ठस्स अवट्ठंभो न कप्पई ॥
- गाथा-[५३४] नि** संचर कुंथुद्देहिअलूयावेहे तहेव दाली अ ।
घरकोइलिआ सप्पे बिस्संभर उंदुरे सरडे ॥
- गाथा-[५३५] भा** संचारगा चउद्दिसि पुव्विं पडेलहिएविं अन्नंति ।
उद्देहि मूल पडणे विराहणा तदुभए भेओ ॥
- गाथा-[५३६] भा** लूयाइचमढणा संजमंमि आयाए विच्छुगाईया ।
एवं घरकोइलिआ अहिउंदुरसरडमाईसु ॥
- गाथा-[५३७] नि** अतरंतस्स उ पासा गाढं दुक्खंति तेणऽवट्ठंभे ।
संजयपट्ठी थंभे सेलछुहाकुडुविट्ठीए ॥
- गाथा-[५३८] नि** पंथं तु वच्चमाणा जुगंतरं चक्खुणा व पडिलेहा ।
अइदूरचक्खुपाए सुहुमतिरिच्छागय न पेहे ॥
- गाथा-[५३९] नि** अच्छासन्ननिरोहे दुक्खं दुट्ठंपि पायसंहरणं ।
छक्कायविओरमणं सरीर तह भत्तपाणे य ॥
- गाथा-[५४०] भा** उड्डमुहो कहरत्तो अवयक्खंतो वियक्खणाणो य ।
बातरकाए वहए तसेतरे संजमे दोसा ॥
- गाथा-[५४१] भा** निरवेक्खो वच्चंतो आवडिओ खाणुकंटविसमेसु ।
पंचण्ह इंदियाणं अन्नतरं सो विराहेज्जा ॥
- गाथा-[५४२] भा** भत्ते वा पाणे वा आवडियपडियस्स भिन्नपाए वा ।
छक्कायविओरमणं उड्डाहो अप्पणो हाणी ॥
- गाथा-[५४३] भा** दहि धय तक्कं पयमंबिलं व सत्थं तसेतराण भवे ।
खद्धंमि य जणवाओ बहुफोडो जं च परिहाणी ॥

- गाथा-[५४४] नि** पत्तं च मग्गमाणे हवेज्ज पंथे विराहणा दुविहा ।
दुविहा य भवे तेणा परिकम्मे सुत्तपरिहाणी ॥
- गाथा-[५४५] नि** एसा पडिलेहणविही कहिया भे धीरपुरिसपन्नता ।
संजमगुणङ्कुगाणं निग्गंथाणं महरिसीणं ॥
- गाथा-[५४६] नि** एयं पडिलेहणविहिं जुंजंता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमनंतं ॥
- गाथा-[५४७] नि** पिंडं व एसणं वा एत्तो वोच्छं गुरूवएसणं ।
गवेसणगहणघासेसणाए तिविहाए विसुद्धं ॥
- गाथा-[५४८] नि** पिंडस्स उ निक्खेवो चउक्कओ छक्कओ य कायव्वो ।
निक्खेवं काऊणं परूवणा तस्स कायव्वा ॥
- गाथा-[५४९] नि** नामं ठवणापिंडो दव्वपिंडो य भावपिंडो य ।
एसो खलु पिंडस्स उ निक्खेवो चउविहो होइ ॥
- गाथा-[५५०] नि** गोणं समयकयं वा जं वावि हवेज्ज तदुभएण कयं ।
तं बिंति नाम पिंडं ठवणापिंडं अओ वोच्छं ॥
- गाथा-[५५१] नि** अक्खे वराडए वा कट्टे व चित्तकम्मे वा ।
सब्भावमसब्भावा ठवणापिंडं वियाणाहि ॥
- गाथा-[५५२] नि** तिविहो य दव्वपिंडो सच्चित्तो मीसओ य अच्चित्तो ।
अच्चित्तो य दसविहो सच्चित्तो मीसओ नवहा ॥
- गाथा-[५५३] नि** पुढवी आउक्काए तेऊवाऊवणस्सई चेव ।
बिअतिअचउरो पंचिंदिया य लेवो य दसमो उ ॥
- गाथा-[५५४] नि** पुढविव्काओ तिविहो सच्चित्तो मीसओ य अचित्तो ।
सच्चित्तो पुण दुविहो निच्छयववहारिओ चेव ॥
- गाथा-[५५५] नि** निच्छयओ सच्चित्तो पुढविमहापव्वयाण बहुमज्झे ।
अच्चित्तमीसवज्जो सेसो ववहारसच्चित्तो ॥
- गाथा-[५५६] नि** खीरदुमहेट्टु पंथे कट्टोल्ला इंधणे य मीसो य ।
पोरिसि एगदुगतिगं बहुइंधणमज्झयोवे अ ॥
- गाथा-[५५७] नि** सीउण्हखारखत्ते अग्गीलोणूस अंबिले नेहे ।
वक्कंतजोगिणं पओयणं तेणिमं होति ॥
- गाथा-[५५८] नि** अवरद्धिग विसबंधे लवणेण व सुरमिउवलएणं च ।
अच्चित्तस्स उ गहणं पओयणं होइ जं वऽन्नं ॥
- गाथा-[५५९] नि** ठाणनिसीयतुयट्टणउच्चाराईणि चेव उस्सग्गो ।
घट्टगडगलगलेवो इमाइ पओयणं बहुहा ॥
- गाथा-[५६०] नि** घणउदही घणवलया करगसमुद्दहाण बहुमज्झे ।
अह निच्छयसच्चित्तो ववहारनयस्स अगडाई ॥
- गाथा-[५६१] नि** उसिणोदगमणुवत्ते दंडे वासे य पडिअमेत्ते य ।
मोत्तूण एसतिगं चाउलउदगं बहु पसन्नं ॥
- गाथा-[५६२] नि** आएसतिगं बुब्बुय बिंदू तह चाउला न सिज्झंति ।
मोत्तूण तिण्णिऽवेए चाउलउदगं बहु पसन्नं ॥
- गाथा-[५६३] नि** सीउण्हखारखत्ते अग्गीलोणूस अंबिले नेहे ।
वक्कंतजोगिणं पओयणं तेणिमं होति ॥
- गाथा-[५६४] नि** परिसेयपियणहत्थाइधोयणा चीरधोयणा चेव ।
आयमण माणधुवणे एमाइ पओयणं बहुहा ॥

- गाथा-[५६५] नि** उउबद्धधुवण बाउस बंभविणासो अठाणठवणं च ।
संपाइमवाउवहो पलवण आतोपघातो य ॥
- गाथा-[५६६] नि** अइभार चुडण पणए सीयल पावरण अजीर गेलन्ने ।
ओमावण कायवहो वासासु अधोवणे दोसा ॥
- गाथा-[५६७] नि** अप्पत्ते चिय वासे सव्वं उवहिं धुवंति जयणाए ।
असइए व दवस्स उ जहन्नओ पायनिज्जोगो ॥
- गाथा-[५६८] नि** आयरियगिलाणाणं मइला मइला पुणोवि धोवंति ।
मा हु गुरूण अवन्नो लोगंमि अजीरणं इयरे ॥
- गाथा-[५६९] नि** पायस्स पडोयारं दुन्निसज्ज तिपट्ट पोति रयहरणं ।
एते न उ विस्सामे जयणा संकामणा धुवणा ॥
- गाथा-[५७०] नि** अब्भित्तरपरिभोगं उवरिं पाउणइ नातिदूरे य ।
तिन्नि य तिन्नय एक्कं निसिउं काउं पडिच्छेज्जा ॥
- गाथा-[५७१] नि** केई एक्केक्कनिसिं संवासेउं तिहा पडिच्छंति ।
पाउणिय जइ न लगंति छप्पया ताहे धोवेज्जा ॥
- गाथा-[५७२] नि** निव्वोदगस्स गहणं केई माणेसु असुइ पडेसेहो ।
गिहिमायणेसु गहणं ठिय वासे मीसिअं छारो ॥
- गाथा-[५७३] नि** गुरुपच्चक्खाणगिलाणसेहमाईण धोवणं पुव्वं ।
तो अप्पणा पुव्वमहाकडे य इतरे दुवे पच्छा ॥
- गाथा-[५७४] नि** अच्छोडपिट्टणासु तं न धुवे धावे पतावणं न करे ।
परिभोगमपरिभोगे छायातव पेह कल्लाणं ॥
- गाथा-[५७५] नि** इट्टगपागाईणं बहुमज्झे विज्जुयाइ निच्छइओ ।
इंगालाई इयरो मुम्मुरमाई य मिस्सो उ ॥
- गाथा-[५७६] नि** ओदणवंजणपाणग आयामुसिणोदगं च कुम्मासा ।
डगलगसरक्खसूई पिप्पलमाई य परिभोगो ॥
- गाथा-[५७७] नि** सयलयधणतणुवाया अतिहिम अतिदुद्दिणे य निच्छिइओ ।
ववहार पाय इ माई अक्कंतादी य अच्चित्तो ॥
- गाथा-[५७८] नि** हत्थसयमेग गंता दइउ अचित्तो बिइय संमीसो ।
तइयंमि उ सचित्तो वत्थी पुण पोरिसिदिणेहिं ॥
- गाथा-[५७९] नि** दइएण वत्थिणा वा पओयणं होज्ज वाउणा मुणिणो ।
गेलन्नंमि व होज्जा सचित्तमीसे परिहरेज्जा ॥
- गाथा-[५८०] नि** सव्वो वऽणंतकाओ सच्चित्तो होइ निच्छयनयस्स ।
ववहाराउ अ सेसो मीसो पव्वयरोट्टाई ॥
- गाथा-[५८१] नि** संथारपायदंडगखोमिअकप्पाइ पीढफलगाई ।
ओसहभेसज्जाणि य एमाइ पओयणं तरुसु ॥
- गाथा-[५८२] नि** बियतियचउरो पंचिंदिया य तिप्पभिइं जत्थ उ समेति ।
सट्ठाणे सट्ठाणे सो पिंडो तेण कज्जमिणं ॥
- गाथा-[५८३] नि** बेइंदियपरिभोगो अक्खाण ससंखसिप्पमाईणं ।
तेइंदियाण उद्देहिगाइ जं वा वए विज्जो ॥
- गाथा-[५८४] नि** चउरिंदियाण मक्खियपरिहारो आसमक्खिया चेव ।
पंचिंदिअपिंडंमि उ अव्ववहारी उ नेरइया ॥
- गाथा-[५८५] नि** चम्मट्ठिदंतनहरोमसिंगअमिलाइछगणगोमुत्ते ।
खीरदाहिमाइयाणं पंचिंदिअतिरिअपरिभोगो ॥

गाथा-[५८६] नि	सच्चित्तो पव्ववण पंथुवदेसे य भिक्खदाणाई । सीसट्ठिय अच्चित्ते मीसट्ठि सरक्खपहपुच्छा ॥
गाथा-[५८७] नि	खमगाइकालकज्जातिएसु पुच्छेज्ज देवयं किंचि । पंथे सुभासुभे वा पुच्छेज्ज व दिव्वमुवओगो ॥
गाथा-[५८८] नि	अह होइ लेवपिंडो संजोगेणं नवण्ह पिंडाणं । नायव्वो निप्फन्नो परूवणा तस्स कायव्वा ॥
गाथा-[५८९] नि	अव्वक्कालिअलेवं भणंति लेवेसणा नवि अ दिट्ठा । ते वत्तव्वा लेवो दिट्ठो तेलुक्कदंसीहिं ॥
गाथा-[५९०] भा	आयापवयणसंजमउवघाओ दीसई जओ तिविहो । तम्हा वदंति केई न लेवगहणं जिणा बिंति ॥
गाथा-[५९१] भा	रहपडणउत्तिमंगाइभंजणं घट्टणे य करघाओ । अह आयविराहणया जक्खुल्लिहणे पवयणंमि ॥
गाथा-[५९२] भा	गमणगमणे गहणा तिट्ठाणे संयमे विराहणया । महिसरिउम्मुगहरिआ कुंथू वासं रओ व सिया ॥
गाथा-[५९३] भा	दोसाणं परिहारो चोयग जयणाइ कीरई तेसिं । पाए उ अलिप्पंते दोसा हुंति नेगगुणा ॥
गाथा-[५९४] भा	उड्ढाई विरसंमी भुंजमाणस्स हुंति आयाए । दुग्गंमि भायणंमि य गरहइ लोगो पवयणंमि ॥
गाथा-[५९५] भा	पवयणघाया अन्नवि होंति जयणा उ कीरई तेसिं । आयमणमोयणाई लेवे तव मच्छरो को णु ॥
गाथा-[५९६] नि	खंडंमि मगियंमि य लोणे दिन्नंमि अवयवविणासो । अनुकंपाई पाणंमि होइ उदगस्स उ विणासो ॥
गाथा-[५९७] नि	पूयलिअलग्गअगणी पलीवणं गाममाइणो होज्जा । रोट्टपणगा तरुंभी भिगुंकुंथादी व छट्ठंमि ॥
गाथा-[५९८] नि	पायगगहणंमी देसियंमि लेवेसणाणि खलु वुत्ता । तम्हा आणयणा लिंपणा य पायस्स जयणाए ॥
गाथा-[५९९] नि	हत्थोवघाय गंतूण लिंपणा सोसणा य हत्थंपि । सागारिए पभु जिंघणा य छक्कायजयणा य ॥
गाथा-[६००] भा	चोदगवयणं गंतूण लिंपणा आणणे बहू दोसा । संपाइमाइघाओ अतिउव्विरिए य उस्सग्गो ॥
गाथा-[६०१] भा	एवंपि भाणमेओ वियावडे अत्तणो य उवघाओ । नीसंकियं च पायंमि गिण्हणे इहरहा संका ॥
गाथा-[६०२] प्र	जइ ते हत्थुवघाओ आणिज्जंतम्मि होइ लेवम्मि । पडिलेहणाइ चिट्ठा तम्हा उ न काइ कायव्वा ॥
गाथा-[६०३] भा	चोएइ पुणो लेवं आणेउं लिंपिऊण तो हत्थे । अच्छउ धारेमाणो सद्दवनिक्खेवपरिहारी ॥
गाथा-[६०४] भा	एवं होउवघाओ आताए संजमे पवयणे य । मुच्छाई पवडंते तम्हा उ न सोसए हत्थे ॥
गाथा-[६०५] नि	दुविहा य होंति पाया जुन्ना य नवा य जे उ लिप्पंति । जुन्ने दाएऊणं लिंपइ पुच्छा य इयरेसिं ॥
गाथा-[६०६] नि	पाडिच्छगसेहाणं नाऊणं कोइ आगमणमाई । दढलेवेवि उ पाए लिंपइ मा एसु देज्जेज्जा ॥

गाथा-[६०७] भा	अहवावि विभूसाए लिंपइ जा सेसगाण परिहाणी । अपडिच्छणे य दोसा सेहे काया अओ दाए ॥
गाथा-[६०८] नि	पुव्वण्हं लेवदाणं लेवग्गहणं सुसंवरं काउं । लेवस्स आणणालिंपणे य जयणाविही वोच्छं ॥
गाथा-[६०९] भा	पुव्वण्ह लेव गहणं काहंति चउत्थगं करेज्जाहि । असहू वासिअभत्तं अकारऽलंभे य दितियरे ॥
गाथा-[६१०] नि	कयकित्तिकम्मो छंदेण छंदिओ भणइ लेवऽहं घेत्तुं । तुबअभंपि अत्थि अट्ठो आमं तं कित्तिअं किं वा ॥
गाथा-[६११] नि	सेसेवि पुच्छिऊणं कयउस्सग्गो गुरुं पणमिऊणं । मल्लगरूवे गिण्हइ जइ तेसिं कप्पिओ होइ ॥
गाथा-[६१२] नि	गीयत्थपरिग्गाहिअ अयाणओ रूवमल्लए घेत्तुं । छारं च तत्थ वच्चइ गहिए तसपाणरक्खट्ठा ॥
गाथा-[६१३] नि	वच्चंतेण य दिट्ठं सागारिदुचक्कगं तु अब्भासे । तत्थेव गहो गहणं न होइ सो सागरिअपिंडो ॥
गाथा-[६१४] नि	गंतुं दुचक्कमूलं अनुन्नवेत्ता पहुंति साहीणं । एत्थ य पहुत्ति भणिए कोई गच्चे निवसमीवे ॥
गाथा-[६१५] नि	किं देमिन्ति नरवई तुज्झं खरमक्खिआ दुच्चक्केत्ति । सो अ पसत्थो लेवो एत्थ य भद्देतरे दोसा ॥
गाथा-[६१६] नि	तम्हा दुचक्कवइणा तस्संदिट्ठेण वा अनुन्नाए । कडुगंधजाणणट्ठा जिंघे नासं तु अफुसंता ॥
गाथा-[६१७] नि	हरिए बीए चले जुत्ते वच्चे साणे जलट्टिए । पुढवी संपाइमा सामा महवाते महियाऽमिए ॥
गाथा-[६१८] भा	हरिए बीएसु तहा अनंतपरंपरेविय चउक्को । आया दुपयं च पतिट्ठियंति एत्थंपि चउभंगो ॥
गाथा-[६१९] भा	दव्वे भावे य चलं दव्वंमि दुपइट्ठिअं तु जं दुपयं । आया य संजमंमि अ दुविहा उ विराहणा तत्थ ॥
गाथा-[६२०] भा	भावचलं गंतुमणं गोणाई अंतराइयं तत्थ । जुत्तेवि अंतरायं वित्तस चलणे य आयाए ॥
गाथा-[६२१] भा	वच्छो भएण नासइ भंडिक्खोभेण आयवावत्ती । आया पवयण साणे काया य भएण नासंति ॥
गाथा-[६२२] भा	जो चेव य हरिएसुं सो चेव गमो उ उदगपुढवीसु । संपाइमा तसगणा सामाए होइ चउभंगो ॥
गाथा-[६२३] भा	वाउंमि वायमाणेसु संपयमाणेसु वा तसगणेसु । नाणुन्नायं गहणं अभियस्स य मा विगिंचणया ॥
गाथा-[६२४] नि	एयट्ठोसविमुक्कं घेत्तु छारेण अक्कमित्ताणं । चीरेण बंधिऊणं गुरुमूल पडिक्कमालोए ॥
गाथा-[६२५] नि	दंसिअछंदिअगुरुसेसएसु ओमत्थियस्स भाणस्स । काउं चीरं उवरिं रूयं च छुभेज्ज तो लेवं ॥
गाथा-[६२६] नि	अंगुट्ठपएसिणिमज्झिमाए घेत्तुं घणं तओ चीरं । आलिंपिऊण भाणे एक्कं दो तिण्णि वा घट्टे ॥
गाथा-[६२७] नि	अन्नोऽन्नं अंकंमि उ अन्नं घट्टेइ वारवारेणं । आणेइ तमेव दिणं दवं रएउं अभत्तट्ठी ॥

गाथा-[६२८] नि	अभतट्टियाण दाउं अन्नेसिं वा अहिंडमाण्णं । हिंडेज्ज असंथरणे असहू घेतुं अरइयं तु ॥
गाथा-[६२९] नि	न तरेज्जा जइ तिण्णि हिंडावेउं तओ य छारेणं । उच्चुण्णेउं हिंडइ अन्ने य दवं सि गेण्हंति ॥
गाथा-[६३०] नि	लेत्थारियाणि जाणि उ घट्टगमाईणि तत्थ लेवेणं । संजमफाइनिमित्तं ताई मूईइ मुंडेज्जा ॥
गाथा-[६३१] नि	एवं लेवग्गहणं आणयणं लिंपणा य जयणा य । भणियाणि अतो वोच्छं परिकम्मविहिं तु लेवस्स ॥
गाथा-[६३२] नि	लित्ते छगणिअछारो घणेण चीरेणऽबंधिउं उण्हे । अंछण परियत्तणं घट्टणे य धोवे पुणो लेवो ॥
गाथा-[६३३] भा	दाउं सरयत्ताणं पत्ताबंधं अबंधणं कुज्जा । साणाइरक्खणट्ठा पमज्ज छाउण्हसंकमणा ॥
गाथा-[६३४] भा	तद्धिवसं पडिलेहा कुंभमुहाईण होइ कायव्वा । छन्ने य निसं कुज्जा कयकज्जाणं विउस्सग्गो ॥
गाथा-[६३५] नि	अट्टगहेउं लेवाहियं तु सेसं सरूवगं पीसे । अहवावि नत्थि कज्जं सरूवमुज्झे तओ विहिणा ॥
गाथा-[६३६] नि	पढमचरिमा सिसिरे गिम्हे अब्धं तु तासि वज्जेज्जा । पायं ठवे सिणेहातिरक्खणट्ठा पवेसो वा ॥
गाथा-[६३७] नि	उवओगं च अभिक्खं करेइ वासाइरक्खणट्ठाए । वावारेइ व अन्ने गिलाणमाईसु कज्जेसु ॥
गाथा-[६३८] नि	एक्को व जहन्नेणं दुग तिग चत्तारि पंच उक्कोसा । संजमहेउं लेवो वज्जित्ता गारवविभूसा ॥
गाथा-[६३९] नि	अनुवट्टंते तहवि हु सव्वं अवणितु तो पुणो लिंपे । तज्जाय सचोप्पडगं घट्टगरइयं ततो धोवे ॥
गाथा-[६४०] नि	तज्जायजुत्तिलेवो खंजणलेवो य होइ बोद्धव्वो । मुद्दिअनावाबंधो तेणयबंधेण पडिकुट्ठो ॥
गाथा-[६४१] नि	जुत्ती उ पत्थराई पडिकुट्ठो सो उ सन्निही जे णं । दय सुकुमार असन्निहि खंजणलेवो अओ भणिओ ॥
गाथा-[६४२] नि	संजमहेउं लेवो न विमूसाए वदंति तित्थयरा । सइ असइ य दिट्ठंतो सइ साहम्मे उयणओ उ ॥
गाथा-[६४३] नि	भिज्जिज्ज लिप्पमाणं लित्तं वा असइए पुणो बंधो । मुद्दिअनावाबंधो न तेणएणं तु बंधिज्जा ॥
गाथा-[६४४] नि	खरअयसिकुसुंभसरिसव कमेण उक्कोसमज्झिमजहन्ना । नवणीए सप्पिवसा गुडेण लोणेणऽलेवो उ ॥
गाथा-[६४५] नि	पिंड निकाय समूहे संपिंडण पिंडणा य समवाए । समोसरण निचय उवचय चए य जुम्मे य रासी य ॥
गाथा-[६४६] नि	दुविहो य भावपिंडो पसत्थओ होइ अप्पसत्थो य । दुगसत्तट्टचउक्कग जेणं वा बज्झए इयरो ॥
गाथा-[६४७] नि	तिविहो होइ पसत्थो नाणे तह दंसणे चरित्ते य । मोत्तूण अप्पसत्थे पसत्थपिंडेण अहिगारो ॥
गाथा-[६४८] भा	लित्तंमि भायणंमि उ पिंडस्स उवग्गहो उ कायव्वो । जुत्तस्स एसणाए तमहं वोच्छं समासेणं ॥

गाथा-[६४९] नि	नामं ठवणा दविए भावंमि य एसणा मुणेयव्वा । दव्वंमि हिरण्णाई गवेसगहभुंजणा भावे ॥
गाथा-[६५०] नि	पमाण काले आवस्सए य संघाडए य उवकरणे । मत्तग काउस्सगो जस्स य जोगो सपडिवक्खो ॥
गाथा-[६५१] भा	दुविहं होइ पमाणं कालं भिक्खा पवेसमाणं च । सन्ना भिक्खायरिआ भिक्खे दो काल पढमद्धा ॥
गाथा-[६५२] भा	आरेण भद्दपंता भद्दग उट्ठवण मंडण पदोसा । दोसीणपउरकरणं ठवियगदोसा य भद्दंमि ॥
गाथा-[६५३] भा	अद्दागऽमंगलं वा उब्भावण खिंसणा हणण पंते । फिडिउग्गमे य ठविया भद्दगचारी किलिस्सणया ॥
गाथा-[६५४] भा	भिक्खस्सविय अवेला ओसक्कऽहिसक्कणे भवे दोसा । भद्दगपंतातीया तम्हा पत्ते चरे काले ॥
गाथा-[६५५] भा	आवस्सग सोहेउं पविसे भिक्खस्सऽसोहणे दोसा । उग्गाहिअवोसिरणे दवअसईए य उड्डाहो ॥
गाथा-[६५६] भा	अइदूरगमणफिडिओ अलहंतो एसणंपि पेल्लेज्जा । छड्डावण पंतावण धरणे मरणं व छक्काया ॥
गाथा-[६५७] नि	एगाणियस्स दोसा इत्थी साणे तहेव पडिणीए । भिक्खऽविसोहि महव्वय तम्हा सवितिज्जए गमणं ॥
गाथा-[६५८] भा	संघाडगअग्गहणे दोसा एगस्स इत्थियाउ भवे । साणे भिक्खुवओगे संजमआएगयरदोसा ॥
गाथा-[६५९] भा	दोण्णि उ बुद्धरिसतरा एगोत्ति हणे पदुट्ठपडिणीए । तिघरगहणे असोही अग्गहण पदोसपरिहाणी ॥
गाथा-[६६०] भा	पाणिवहो तिसु गहणे पउंजणे कौटलस्स बितियं तु । तेणं उच्छुद्धाई परिग्गहोऽणे सणग्गहणे ॥
गाथा-[६६१] भा	विहवा पउत्थवइया पयारमलमंति दट्ठुमेगाणिं । दारपिहाणय गहणं इच्छमणिच्छे य दोसा उ ॥
गाथा-[६६२] नि	गारविए काहीए माइल्ले अलस लुद्ध निद्धम्मे । दुल्लभ अत्ताहिट्ठिय अमणुन्ने वा असंघाडो ॥
गाथा-[६६३] भा	संघाडगरायणिओ अलद्धि ओमो य लद्धिसंपन्नो । जेट्ठग पडिग्गहगं मुह य गारवकारणा एगो ॥
गाथा-[६६४] भा	काहीउ कहेइ कहं बिइओ वारेइ अहव गुरुकहणं । एवं सो एगागी माइल्लो भद्दगं भुंजे ॥
गाथा-[६६५] भा	अलसो चिरं न हिंडइ लुद्धो ओहासए विगईओ । निद्धम्मोऽणेसणाई दुल्लहभिक्खे व एगागी ॥
गाथा-[६६६] भा	अत्ताहिट्ठियजोगी असंखडीओ वऽणिट्ठ सव्वेसिं । एवं सो एगागी हिंडइ उवएसऽनुवदेसा ॥
गाथा-[६६७] भा	सव्वोवगरणमाया असहू आयारमंडगेण सह । नयणं तु मत्तगस्सा न य परिभोगो विणा कज्जे ॥
गाथा-[६६८] भा	आपुच्छणत्ति पढमा बिइया पडिपुच्छणा य कायव्वा । आवस्सिया य तइया जस्स य जोगो चउत्थो उ ॥
गाथा-[६६९] नि	आयरियाईणऽट्ठा ओमगिलाणट्ठया य बहुसोऽवि । गेलन्नखमगपाहुण अतिप्पएऽतिच्छिए वावि ॥

गाथा-[६७०] नि	अनुकंपापडिसेहो कयाइ हिंडेज्ज वा न वा हिंडे । अणभोगि गिलाणट्टा आवस्सगऽसोहइत्ताणं ॥
गाथा-[६७१] नि	आसन्नाउ नियत्ते कालि पहुप्पंति दूरपत्तोवि । अपहुप्पंते तो च्चिय एगु धरे दोसिरे एगो ॥
गाथा-[६७२] नि	भावासन्नो समणुन्न अन्नओसन्नसङ्खवेज्जधरे । सल्लपरवण वेज्जो तत्थेव परोहडे वावि ॥
गाथा-[६७३] प्र	एएसिं असईए रायपहे दो धराण वा मज्झे । हत्थं हत्थं मुत्तुं मज्झे एगु धरे वोसिरे एगो ॥
गाथा-[६७४] नि	उग्गह काइयवज्जं छंडण ववहारु लब्भए तत्थ । गारविए पन्नवणा तव चेव अनुग्गहो एस ॥
गाथा-[६७५] नि	जइ दोण्ह एग भिक्खा न य वेल पहुप्पए तओ एगो । सव्वेवि अतलाभी पडिसेहमणुन्न पियधम्मे ॥
गाथा-[६७६] नि	अमणुन्न अन्नसंजोइया उ सव्वेवि नेच्छण विवेगो । बहुगुणतदेक्कदोसे एसणबलवं नउ विगिंचे ॥
गाथा-[६७७] नि	इत्थीगहणे धम्मं कहेइ वयठवण गुरुसमीवंमि । इह चेवोवर रज्जू भएण मोहोवसम तीए ॥
गाथा-[६७८] नि	साणा गोणा इयरे परिहरऽणाभोग कुड्डकडनीसा । वारइ य दंडएणं वारावे वा अगारेहिं ॥
गाथा-[६७९] नि	पडिणीयगेहवज्जण अणभोगपविट्ठ बोलनिक्खमणं । मज्झे तिण्ह धराणं उवओग करेउ गेण्हेज्जा ॥
गाथा-[६८०] नि	वेंटल पुट्ठो न याणे आयत्रातीणि वज्जए ठाणे । सुद्धं गवेस उंछं पंचऽइयारे परिहरंतो ॥
गाथा-[६८१] नि	जहणेण चोलपट्टो वीसरणालू गहाय गच्छेजा । उस्सगग काउ गमणे मत्तयऽगहणे इमे दोसा ॥
गाथा-[६८२] नि	आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लहे सहसलाभे । संसत्तभत्तपाणे मत्तगगहणं अनुन्नायं ॥
गाथा-[६८३] भा	पाउग्गायरियाई कह गिण्हउ मत्तए अगहियंमि । जा एसि विराहणया दवमाणे जं दवेण विणा ॥
गाथा-[६८४] भा	दुल्लहदव्वं च सिया धयाइ गिण्हे उवग्गहकरं तु । पउरऽन्नपाणलंभो असंथरे कत्त य सिया उ ॥
गाथा-[६८५] भा	संसत्तभत्तपाणे मत्तग सोहेउ पक्खिवे उवरिं । संसत्तगं च नाउं परिट्ठवे सेसरक्खट्ठा ॥
गाथा-[६८६] नि	गेलन्नकज्जतुरिओ अणभोगेणं च लित्त अग्गहणं । अणभोग गिलाणट्टा उस्सग्गादीणि नवि कुज्जा ॥
गाथा-[६८७] नि	जस्स य जोगमकाऊण निग्गमो न लभई तु सच्चित्तं । न य वत्थपायमाई तेण्णं गहणे कुणसु तम्हा ॥
गाथा-[६८८] नि	सो आपुच्छि अनुन्नाओ सग्गामे हिंड अहव परगामे । सग्गामे सइकाले पत्ते परगामे वोच्छामि ॥
गाथा-[६८९] नि	पुरतो जुगमायाए गंतूणं अन्नगामबाहिठिओ । तरुणे मज्झिम थेरे नव पुच्छाओ जहा हेट्ठा ॥
गाथा-[६९०] नि	पायपमज्जणपडिलेहणा उ माणदुग देसकालंमि । अप्पत्तेऽविव पाए पमज्ज पत्ते य पायदुगं ॥

गाथा-[६९१] नि	समणं समणिं सावग साविय गिहि अन्नतित्थि बहि पुच्छे । अत्थीह समण सुविहिया सिट्ठे तेसालयं गच्छे ॥
गाथा-[६९२] नि	समणुत्तेसु पवेसो बाहिं ठविऊण अन्न किइकम्मं । खग्गूडे सन्नेसुं ठवणा उच्छोभवंदणयं ॥
गाथा-[६९३] नि	गेलन्नाइ अबाहा पुच्छिय सवकारणं च दीवित्ता । जयणाए ठवणकुले पुच्छइ दोसा अजयणाइ ॥
गाथा-[६९४] नि	दाणे अभिगमसट्ठे संमत्ते खलु तहेव मिच्छत्ते । मामाए अचियत्ते कुलाइं जयणाइ दायंति ॥
गाथा-[६९५] नि	सागारि वणिम सुणए गोणे पुत्ते दुगुंछियकुलाइं । हिंसागं मामागं सव्वपयत्तेण वज्जेज्जा ॥
गाथा-[६९६] नि	बाहाए अंगुलीय य लट्ठीइ व उज्जुओ ठिओ संतो । न पुच्छेज्ज न दाएज्जा पच्चावाया भवे दोसा ॥
गाथा-[६९७] नि	अगणीण व तेणेहि व जीवियववरोवणं तु पडिणीए । खरओ खरिया सुणहा नट्ठे वट्ठक्खुरे संका ॥
गाथा-[६९८] नि	पडिकुट्टकुलाणं पुण पंचविहा थूभिआ अभिन्नाणं । भग्गघरगोपुराई रुक्खा नाणाविहा चेव ॥
गाथा-[६९९] नि	ठवणा मिलक्खुनेट्ठं अचियत्तघरं तहेव पडिकुट्ठं । एय गणधरमेरं अइक्कमंतो विराहेज्जा ॥
गाथा-[७००] नि	छक्कायदयावंतोऽवि संजओ दुल्लहं कुणइ बोहिं । आहारे नीहारे दुगुंछिए पिंडगहणे य ॥
गाथा-[७०१] नि	जे जहिं दुगुंछिया खलु पच्चावणवसहिभत्तपाणेसु । जिणवयणे पडिकुट्ठा वज्जेयव्वा पयत्तेणं ॥
गाथा-[७०२] नि	अट्ठारस पुरिसेसुं वीसं इत्थीसु दस नपुंसेसुं । पव्ववणाए एए दुगुंछिया जिणवरमयंमि ॥
गाथा-[७०३] नि	दोसेण जस्स अयसो आयासो पवयणे य अग्गहणं । विप्परिणामो अप्पच्चओ य कुच्छा य उप्पज्जे ॥
गाथा-[७०४] नि	पवय नमणपेहंतस्स तस्स निद्धंधस्स लुद्धस्स । बहुमोहस्स भगवया संसारोऽनंतओ भणिओ ॥
गाथा-[७०५] नि	जो जह व तह व लद्ध गिण्हइ आहारउवहिमाईयं । समणगुणमुक्कजोगी संसारपवट्ठओ भणिओ ॥
गाथा-[७०६] नि	एसणमनेसणं वा कह ते नाहिंति जिणवरमयं वा । कुरिणंमिव पोयाला जे मुक्का पव्वइयमेत्ता ॥
गाथा-[७०७] नि	गच्छंमि केइ पुरिसा सउणी जह पंजंतरनिरुद्धा । सारणवारणचइया पासत्थगया पविहरंति ॥
गाथा-[७०८] नि	तिविहोवघायमेयं परिहरमाणो गवेसए पिंडं । दुविहा गवेसणा पुण दव्वे भावे इमा दव्वे ॥
गाथा-[७०९] नि	जियसत्तुदेविचित्तसमपविसणं कणगपिट्ठपासणया । डोहल दुब्बल पुच्छा कहणं आणा य पुरिसाणं ॥
गाथा-[७१०] नि	सीवन्निसरिसमोदगकरणं सीवन्निरुक्खहेट्ठेसु । आगमण कुरंगाणं पसत्थअपसत्थउवमा उ ॥
गाथा-[७११] नि	विइयमेयं कुरंगाणं जया सीवन्नि सीदई । पुरावि वाया वायंति न उणं पुंजगपुंजगा ॥

गाथा-[७१२] नि	हत्थिगहणंमि गिम्हे अरहट्टेहिं भरणं तु सरसीणं । अच्चुदएण नलवणा अभिरूढा गयकुलागमणं ॥
गाथा-[७१३] नि	विइयमेयं गयकुलाणं जहा रोहंति नलवणा । अन्नयावि झरंति सरा न एवं बहुओदगा ॥
गाथा-[७१४] नि	ण्हाणाईसु विरइयं आरंभकडं तु दानमाईसु । आयरियनिवारणया अपसत्थितरे-उवणओ उ ॥
गाथा-[७१५] नि	धम्मरुइ अज्जवयरे लंभो वेउव्वियस्स नभगमणं । जेट्टामूले अट्ठम उवरिं हेट्टा व देवाणं ॥
गाथा-[७१६] भा	आयावणऽट्टमेणं जेट्टामूलंमि धम्मरुइणो उ । गमणऽन्नगामभिक्षट्टया य देवस्स अनुकंपा ॥
गाथा-[७१७] भा	कोंकणरूवविउव्वण अंबिल छड्डेमऽहं पियसु पाणं । छड्डेहित्तिय बिइओ तं गिण्ह मुणित्ति उवओगो ॥
गाथा-[७१८] भा	तण्हाछुहाकिलंतं दट्ठणं कुंकणो भणइ साहुं । उज्झामि अंबकंजिय अज्जो गिण्हाहि णं तिसिओ ॥
गाथा-[७१९] भा	सोऊण कोंकणस्स य साहु वयणं इमं विचिंतेइ । गविसणविहिए निउणं जह भणिअं सव्वदंसीहिं ॥
गाथा-[७२०] भा	गविसणगहणकुडंगं नाऊण मुणी उ मुणियपरमत्थो । आहडरक्खणहेउं उवउंजइ भावओ निउणं ॥
गाथा-[७२१] भा	उक्कोसदव्व खेत्त च अरण्णं कालओ निदाहो उ । भावे हट्ठपहट्ठो हिट्ठा उवरिं च उवओगो ॥
गाथा-[७२२] भा	दट्ठण तस्स रूवं अच्छिनिवेसं च पायनिक्खेवं । उवउंजिऊण पुव्विं गुज्झिगमिणमोत्ति वज्जेहइ ॥
गाथा-[७२३] भा	सत्ताहवद्दले पुव्वसंगई वणियविरूवुक्खडणं । आमंतण खुड्डु गुरू अनुणवणं बिंदु उवओगो ॥
गाथा-[७२४] नि	एसा गवेसणविही कहिया मे धीरपुरिसपन्नत्ता । गहणेसणेपि एत्तो वोच्छं अप्पक्खरमहत्थं ॥
गाथा-[७२५] नि	नामं ठवणा दविए भावे गहणेसणा मुणेयव्वा । दव्वे वानरजूहं भावंमि य ठाणमाईणि ॥
गाथा-[७२६] नि	परिसडियपंडुपत्तं वणसंडं दट्ठुं अन्नहिं पेसे । जूहवई पडियरिए जूहेण समं तहिं गच्छे ॥
गाथा-[७२७] नि	सयमेवालोएउं जूहवई तं दणं समं तेहिं । वियरइ तेसि पयारं चरिऊण य ते दहं गच्छे ॥
गाथा-[७२८] नि	ओयरंतं पयं दट्ठुं उत्तरंतं न दीसइ । नालेण पियह पाणीयं नेस निक्कारणो दहो ॥
गाथा-[७२९] नि	ठाणे य दायए चेव गमणे गहणागमे । पत्ते परियत्ते पाडिए य गुरुर्यं तिहा भावे ॥
गाथा-[७३०] भा	आया पवयण संजम तिविहं ठाणं तु होइ नायव्वं । गोणाइ पुढविमाई निद्धमणाई पवयणंमि ॥
गाथा-[७३१] नि	गोणे महिसे आसे पेल्लण आहणण मारणं भवइ । दरगहियमाणभेदो छड्डुणि भिक्षस्स छक्काया ॥
गाथा-[७३२] नि	चलकुड्डुपडणकंटगबिलस्स व पासि होइ आयाए । निक्खमपवसवज्जण गोणे महिसे य आसे य ॥

गाथा-[७३३] नि	पुढविदगअगणिमारुयतरुतसवज्जंमि ठाणि ठाइज्जा । दिंती व हेट्ठ उवरिं जहा न घट्टेइ फलमाई ॥
गाथा-[७३४] नि	पासवणे उच्चारे सिणाण आयमणठाण उक्कुरुडे । निद्धमणमसुइमाई पवयणहाणी विवज्जेज्जा ॥
गाथा-[७३५] नि	अवत्तमपहु थेरे पंडे मत्ते य खित्तचित्ते य । दित्ते जक्खाइट्टे करवणछिन्नें ध नियले य ॥
गाथा-[७३६] नि	तद्दोसगुव्विणीबालवच्छकंडंतपीसमज्जंती । कत्तंती पिजंती मइया दगमाणइणो दोसा ॥
गाथा-[७३७] भा	कप्पट्टिगअप्पाहणदिन्ने अन्नोन्नगहणपज्जंतं । खंतियमग्गणदिन्नं उड्ढाहपदोसचारभडा ॥
गाथा-[७३८] भा	अप्पभु मयगाईया उभएगतरे पदोस पहुकुज्जा । थेरे चलंत पडणं अप्पमुदोसा य ते चेव ॥
गाथा-[७३९] भा	आपयरोमयदोसा अभिक्खगहणंमि खुब्भण नपुंसे । लोगदुगुंछा संका हरिसगा नूणमेतेऽवि ॥
गाथा-[७४०] भा	अवयास भाणभेदो वमणं असुइत्ति लोगउड्ढाहो । खित्ते य दित्तचित्ते जक्खाइट्टे य दोसा उ ॥
गाथा-[७४१] भा	करछिन्न असुइ चरणे पडणं अंधिल्लए य छक्काया । नियलाऽसुइ पडणं वा तद्दोसी संकमो असुइ ॥
गाथा-[७४२] भा	गुव्विणि गब्भे संघट्टणा उ उट्ठंति निविसमाणीय । बालाई मंसउंडग मज्जाराई विराहेज्जा ॥
गाथा-[७४३] भा	बीओदगसंघट्टण कंडणपीसंत भज्जणे डहणं । कत्तंती पिजंती हत्थे लित्तंभि उदगवहो ॥
गाथा-[७४४] नि	भिक्खामेत्ते अवियालणं तु बालेण दिज्जमाणंमि । संदिट्टे वा गहणं अइबहुयवियालऽणुन्नाओ ॥
गाथा-[७४५] नि	अप्पहुसंदिट्टे वा भिक्खामित्ते व गहणऽसंदिट्टे । थेरपहू थरथरंते धरणं अहवा दढसरीरे ॥
गाथा-[७४६] नि	पंडग अप्पडिसेवी मत्तो सड्ढो व अप्पसागरिए । खित्ताइ भद्दगाणं करचर विट्ठऽप्पसागरिए ॥
गाथा-[७४७] नि	सड्ढो व अन्नरुंभण अंधे सवियारणा य बद्धंमि । तद्दोसए अभिन्ने वेला थणजीवियं थेरा ॥
गाथा-[७४८] नि	उक्खित्तऽपच्चावाए कंडे पीसे वऽछूढ मज्जंती । सुक्कं व पीसमाणी बुद्धीय विभावए सम्मं ॥
गाथा-[७४९] भा	मुसले उक्खित्तंमि य अपच्चवाए य पीस अच्चित्ते । भज्जंती अच्छूढे भुंजंती जा अणारद्ध ॥
गाथा-[७५०] नि	कत्तंतीए थूलं विक्खिण लोढण जतिय निट्ठवियं । पिजंण असोयवाई मयणागहणं तु एएसिं ॥
गाथा-[७५१] नि	गमणं च दायगस्सा हेट्ठा उदरिं च होइ नायव्वं । संजमआयविराहण तस्स सरीरे य मिच्छत्तं ॥
गाथा-[७५२] भा	वच्चंती छक्काया पमद्दए हिट्ठ तिरियं च । फलवल्लिरुक्खसाला तिरिया मणुया य तिरियं तु ॥
गाथा-[७५३] भा	कंटगमाई य अहे उप्पिं अहिमादि लंबणे आया । तस्स सरीरविणासो मिच्छत्तुड्ढाह वोच्छेओ ॥

गाथा-[७५४] नि	नीयदुवारुग्घाडणकवाडठिय देह दारमाइन्ने । इड्डिरपत्थियलिंदे गहणं पत्तस्स ऽपडिलेहा ॥
गाथा-[७५५] भा	नियमा उ दिट्ठगाही जिणमाई गच्छनिग्गया होंति । थेरावि दिट्ठगाही अदिट्ठिकरेंति उवओगं ॥
गाथा-[७५६] भा	नीयदुवारुवओगे उड्डाहि अवाउडा पदोसो य । हियनट्ठंमि य संका एमेव कवाडउग्घाडे ॥
गाथा-[७५७] भा	देहऽन्नसरीरेण व दारं पिहिअं जणाउलं वावि । इड्डिरपत्थियलिंदेण वावि पिहियं तहिं वावि ॥
गाथा-[७५८] भा	एतेहिऽदीसमाणे अगगहणं अह व कुज्ज उवओगं । सोतेण चक्खुणा घाणओ य जीहाए फासेणं ॥
गाथा-[७५९] भा	हत्थं मत्तं च धुवे सद्दो उदकस्स अहव मत्तस्स । गंधे व कुलिगाई तत्थेव रसो फरिसबिंदू ॥
गाथा-[७६०] भा	सो होइ दिट्ठगाही जो एते जुंजई पदे सव्वे । निस्संकिय निग्गमणं आसंकपयंमि संचिक्खे ॥
गाथा-[७६१] नि	आगमणदायगस्सा हेट्ठा उवरिं च होइ जह पुव्विं । संजमआयविराहण दिट्ठंतो होइ वच्छेण ॥
गाथा-[७६२] नि	पत्तस्स उ पडिलेहा हत्थे मत्ते तहेव दव्वे य । उदउल्ले ससिणिद्धे संसत्ते चेव परियत्ते ॥
गाथा-[७६३] भा	तिरियं उड्डमहेविय भायणपडिलेहणं तु कायव्वं । हत्थं मत्तं दव्वं तिन्नि उ पत्तस्स पडिलेहा ॥
गाथा-[७६४] भा	मा ससिणिद्धोदउल्ले तसाउलं गिण्ह एगतर दट्ठुं । परियत्तियं च मत्तं ससिणिद्धाईसु पडिलेहा ॥
गाथा-[७६५] नि	पडिओ खलु दट्ठव्वो कित्तिम साहाविओ य जो पिंडो । संजमआयविराहण दिट्ठंतो सिट्ठिकव्वट्ठो ॥
गाथा-[७६६] नि	गरविसअट्ठियकंटय विरुद्धदन्नंमि होइ आयाए । संजमओ छक्काया तम्हा पडियं विगिंचिज्जा ॥
गाथा-[७६७] नि	अणभोगेण भएण य पडिणी उम्मीस भत्तपाणंमि । दिज्जा हिरण्णमाई आवज्जण संकणा दिट्ठे ॥
गाथा-[७६८] नि	उक्खेवे निक्खेवे महल्लया लुद्धया वहो दाहो । अचियत्ते वोच्छेओ छक्कायवहो य गुरुमत्ते ॥
गाथा-[७६९] भा	गुरुदव्वेण व पिहिअं सयं च गुरुयं हवेज्ज जं दव्वं । उक्खेवे निक्खेवे कडिभंजण पाय उवरिं वा ॥
गाथा-[७७०] भा	महल्लेण देहि मा डहरएण भिन्ने अहो इमो लुद्धो । अमएगतरे व वहो दाहो अच्चुण्ह एमेव ॥
गाथा-[७७१] भा	बहुगहणे अचियत्तं वोच्छेओ तदन्नदव्व तस्सविय । छक्कायाण य वहणं अइमत्ते तंमि मत्तंमि ॥
गाथा-[७७२] नि	तिविहो य होइ कालो गिम्हो हेमंत तह य वासासु । तिविहो य दायगो खलु वी पुरिस नपुंसओ चेव ॥
गाथा-[७७३] नि	एक्किक्कोविअ तिविहो तरुणो तह मज्झिमो य थेरो य । सीयतणुओ नपुंसो सोम्हित्थी मज्झिमो पुरिसो ॥
गाथा-[७७४] नि	पुरकम्मं उदउल्लं ससिणिद्धं तंपि होइ तिविहं तु । इक्किक्ककंपिय तिविहं सच्चित्ताचित्तमीसं तु ॥

- गाथा-[७७५] नि** आइदुवे पडिसेहो पुरओ कय जं तु तं पुरेकम्मं ।
उदउल्लबिंदुसहिअं ससिणिद्धे मग्गणा होइ ॥
- गाथा-[७७६] नि** ससिणिद्धंपिय तिविहं सच्चित्ताचित्तमीसगं चेव ।
अच्चित्तं पुण ठप्पं अहिगारो मीससच्चित्ते ॥
- गाथा-[७७७] नि** पव्वाण किंचि अव्वाणमेव किंचिच्च ओहणुव्वाणं ।
पाएण हि य तं सव्वं एक्कक्कहाणी य वुद्धी य ॥
- गाथा-[७७८] नि** सत्तविभागेण करं विमायइत्ताण इत्थिमाईणं ।
निनुन्नयइयरेविय रेहा पव्वे करतले य ॥
- गाथा-[७७९] नि** जाहे य उन्नयाइं उव्वाणाइं हवंति हत्थस्स ।
ताहे तल पव्वाणा लेहा पुण होंतऽणुव्वाणा ॥
- गाथा-[७८०] नि** तरुणित्थि एक्कभागे पव्वाणे होइ गहण गिम्हासु ।
हेमंते दोसु भवे तिसु पव्वाणेषु वासासु ॥
- गाथा-[७८१] नि** एमेव मज्झिमाए आढत्तं दोसु ठायए चउसु ।
तिसु आढत्तं थेरी नवरि ट्ठाणेषु पंचसु उ ॥
- गाथा-[७८२] नि** एमेव होइ पुरिसो दुगाइछट्ठाणपज्जवसिएसुं ।
अपुणं तु तिभागइं सत्तमभागे अवसिते उ ॥
- गाथा-[७८३] नि** दुविहो य होइ भावो लोइय लोउत्तरो समासेणं ।
एक्किक्ककोविय दुविहो पसत्थओ अप्पसत्थो य ॥
- गाथा-[७८४] नि** सज्झिलगा दो वणिया गामं गंतूण करिसणारंभो ।
एगस्स देहमंडणबाउसिआ भारिया अलसा ॥
- गाथा-[७८५] नि** मुहधोवण दंतवणं अद्दागाईण कल्ल आवासं ।
पुव्वण्हकरणमप्पण उक्कोसयां च मज्झणहे ॥
- गाथा-[७८६] नि** तणकट्टहारगाणं न देइ न य दासपेसवग्गस्स ।
न य पेसणे विउंजइ पलाणि हिय हाणि गेहस्स ॥
- गाथा-[७८७] नि** बिइयस्स पेसवग्गं वावारे अन्नपेसणे कम्मे ।
काले देहाहारं सयं च अवजीवई इड्डी ॥
- गाथा-[७८८] नि** वन्नबलरूवहेउं आहारे जो तु लाभि लब्भंते ।
अतिरंगं न उ गिण्हइ पाउग्गगिलाणमाईणं ॥
- गाथा-[७८९] नि** जह सा हिरण्णमाइसु परिहीणा होइ दुक्खआभागी ।
एवं तिगपरिहीणा साहू दुक्खस्स आभागी ॥
- गाथा-[७९०] नि** आयरियगिलाणट्ठा गिण्ह न महंति एव जो साहू ।
नो वन्नरूवहेउं आहारे एस उ पसत्थो ॥
- गाथा-[७९१] नि** उग्गमउप्पायणएसणाए बायाल होंति अवराहा ।
सोहेउं समुयाणं पडुपन्ने वच्चए वसहिं ॥
- गाथा-[७९२] नि** सुन्नधरदेउले वा असई य उवस्सयस्स वा दारे ।
संसत्तकंटगाई सोहेउमुवस्सगं पविसे ॥
- गाथा-[७९३] नि** संसत्तं तत्तो च्विय परिट्ठवेत्ता पुणो दवं गिण्हे ।
कारण मत्तगहियं पडिगहे छोदु पविसणया ॥
- गाथा-[७९४] नि** गामे य कालमाणे पडुच्चमाणे हवंति भंगऽट्ठ ।
काले अपडुप्पंते नियत्तई सेसए भयणा ॥
- गाथा-[७९५] नि** अण्णं च वए गामं अण्णं भाणं व गेण्ह सइ काले ।
पढमे बितिए छप्पंचमे य भय सेस य नियत्ते ॥

गाथा-[७९६] नि	वोसिट्टुमागयाणं उव्वासिय मत्तए य भूमितियं । पडिलेहियमत्थमणं सेसऽत्थमिए जहन्तो उ ॥
गाथा-[७९७] नि	भुत्ते वियारभूमी गयागयाणं तु जह य ओगाहे । चरमाए पोरिसीए उक्कोसो सेस मज्झिमओ ॥
गाथा-[७९८] नि	पायप्पमज्जण निसीहिया य तिन्नि उ करे पवेसंमि । अंजलि ठाणविसोही दंडग उवहिस्स निक्खेवो ॥
गाथा-[७९९] भा	एवं पडुपन्ने पविसओ उ तिन्नि व निसीहिया होंति । अग्गद्वारे मज्झे पवेस पाए य सागरिए ॥
गाथा-[८००] भा	हत्थुस्सेहो सीसप्पणामणं वाइओ नमोक्कारो । गुरुभायणे पणामो वायाए नमो न उस्सेहो ॥
गाथा-[८०१] भा	उवरिं हेट्ठा य पमज्जिऊण लट्ठिं ठवेज्ज सट्ठाणे । पट्ठं उवहिस्सुवरिं भायणवत्थाणि भाणेसु ॥
गाथा-[८०२] भा	जइ पुण पासवणं से हवेज्ज तो उग्गहं सपच्छागं । दाउं अन्नस्स सचोलपट्ठओ काइयं निसिरे ॥
गाथा-[८०३] नि	चउरंगुल मुहपत्ती उज्जुयए वामहत्थि रयहरणं । वोसट्ठचत्तदेहो काउस्सगं करेज्जाहिं ॥
गाथा-[८०४] भा	चउरंगुलमप्पत्तं जाणुगहेट्ठा छिवोवरिं नाहिं । उभओ कोप्परधरिअं करेज्ज पट्ठं च पडलं वा ॥
गाथा-[८०५] नि	पुव्वुद्धिट्ठे ठाण ठाउं चउरंगुलंतरे काउं । मुहपोत्ति उज्जुहत्थे वामंमि य पायपुंछणयं ॥
गाथा-[८०६] नि	काउस्सगंमि ठिओ चित्ते समुयाणिए अईआरे । जा निग्गमप्पवेसो तत्थ उ दोसे मणे कुज्जा ॥
गाथा-[८०७] नि	ते उ पडिसेवणाए अनुलोमा होंति वियडणाए य । पडिसेववियडणाए एत्थ उ चउरो भवे भंगा ॥
गाथा-[८०८] नि	वक्खित्तपराहुत्ते पमत्ते मा कयाइ आलोइ । आहारं च करेतो नीहारं या जइ करेइ ॥
गाथा-[८०९] भा	कहणाईवक्खित्ते विकहाइ पमत्त अन्नओ व मुहे । अंतरमकारए वा नीहारे संक मरणं वा ॥
गाथा-[८१०] नि	अव्वक्खित्ताउत्तं उवसंतमुवट्ठिअं च नाऊणं । अनुन्नवेत्तु मेहावी आलोएज्जा सुसंजए ॥
गाथा-[८११] भा	कहणाइ अवक्खित्ते कोहाइ अणाउले तदुवउत्ते । संदिसहति अनुन्नं काऊण विदिन्नमालोए ॥
गाथा-[८१२] नि	नट्ठं वलं चलं भासं मूयं तह ढड्डरं च वज्जेज्जा । आलोएज्ज सुविहिओ हत्थं मत्तं च वावारं ॥
गाथा-[८१३] भा	करपायभमुहिसीसऽच्छिउट्ठुमाईहिं नट्ठिअं नाम । वलणं हत्थसरीरे चलणं काए य भावे य ॥
गाथा-[८१४] भा	गारत्थियभासाओ य वज्जए भूय ढड्डरं च सरं । आलोए वावारं संसट्ठियरे व करमत्ते ॥
गाथा-[८१५] नि	एयद्दोसविमुक्कं गुरुणो गुरुसम्मयस्स वाऽऽलोए । जं जह गहियं तु भवे पढमाओ जा भवे चरिमा ॥
गाथा-[८१६] नि	काले य पडुप्पंते उच्चा व्वा ओ वावि ओहमालोए । वेला गिलाणगस्स व अइच्छइ गुरू व उच्चाओ ॥

गाथा-[८१७] नि	पुरकम्मं पच्छकम्मे अप्पेऽसुद्धे य ओहमालोए । तुरियकरणंमि जं से न सुज्झई तत्तिअं कहए ॥
गाथा-[८१८] नि	आलोइत्ता सव्वं सीसं सपडिग्गहं पमज्जित्ता । उड्डमहो तिरियंमी पडिलेहे सव्वओ सव्वं ॥
गाथा-[८१९] भा	उड्डं पुप्फफलाई तिरियं मज्जारिसाणडिंभाई । खीलगदारुगआवडणरक्खणट्ठा अहो पेहे ॥
गाथा-[८२०] भा	ओणमओ पवडेज्जा सिरओ पाणा सिरं पमज्जेज्जा । एमेव उग्गहंमिवि मा संकुडणे तसविणासो ॥
गाथा-[८२१] भा	काउं पडिग्गहं करयलंमि अद्धं च ओणमित्ताणं । भत्तं वा पाणं वा पडिदंसिज्जा गुरुसगासे ॥
गाथा-[८२२] भा	ताहे य दुरालोइय भत्तपाण एसणमेसणाए उ । अट्टस्सासे अहवा अनुग्गाहादी उ झाएज्जा ॥
गाथा-[८२३] नि	विणएण पट्टवित्ता सज्झायं कुणइ तो मुहुत्ताणं । पुव्व भणिया य दोसा परिस्समाई जढा एवं ॥
गाथा-[८२४] नि	दुविहो य होइ साहू मंडलिउवजीवओ य इयरो य । मंडलिमुवजीवंतो अच्छइ जा पिंडिया सव्वे ॥
गाथा-[८२५] नि	इयरोवि गुरुसगासं गंतूण भणइ संदिसह भंते । पाहुणगखलवगअतरंतबालवुड्ढाण सेहाणं ॥
गाथा-[८२६] नि	दिण्णे गुरूहिं तेसिं सेसं भुंजेज्ज गुरुअनुत्तायं । गुरुणा संदिट्ठो वा दाउं सेसं तओ भुंजे ॥
गाथा-[८२७] नि	इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहविय पयओ निमंतए साहू । परिणामविसुद्धीए अ निज्जरा होअगहिएवि ॥
गाथा-[८२८] नि	भरहेरवयविदेहे पन्नरससुवि कम्मभूमिगा साहू । एक्कंमि हीलियंमी सव्वे ते हीलिया हुंति ॥
गाथा-[८२९] नि	भरहेरवयविदेहे पन्नरसुवि कम्मभूमिगा साहू । एक्कंमि पूइयंमी सव्वे ते पूइया हुंति ॥
गाथा-[८३०] नि	अह को पुणाइ नियमो एक्कंमिवि हीलियंमि ते सव्वे । होंति अवमाणिया पूइए य संपूइया सव्वे ॥
गाथा-[८३१] नि	नाणं व दंसणं वा तवो य तहसंजमो य साहुगुणा । एक्के सव्वेसुवि हिलिएसु तेहिलिया हुंति ॥
गाथा-[८३२] नि	एमेव पूइयंमिवि एक्कंमिवि पूइया जइगुणा उ । थोवं बहुं निवेसं इइ नच्चा पूयए मइमं ॥
गाथा-[८३३] नि	तम्हा जइ एस गुणो एक्कंमिवि पूइयंमि ते सव्वे । भत्तं वा पाणं वा सव्वपयत्तेण दायव्वं ॥
गाथा-[८३४] नि	वेयावच्चं निययं करेह उत्तमगुणे धरित्ताणं । सव्वकिल पडिवाई वेयावच्चं अपडिवाई ॥
गाथा-[८३५] नि	पडिभग्गस्स भयस्स व नासि चरणं सुयं अनुण्णाए । न हु वेयावच्चचिअं सुहोदयं नासए कम्मं ॥
गाथा-[८३६] नि	लाभेण जोजयंतो जइणो लाभंतराइयं हणइ । कुणमाणो य समाहिं सव्वसमाहिं लहइ साहू ॥
गाथा-[८३७] नि	भरहो बाहुबलीविय दसारकुलनंदणो य वसुदेवो । वेयावच्चाहरणा तम्हा पडितप्पह जईणं ॥

गाथा-[८३८] नि	होज्ज न व होज्ज लंभो फासुगआहारउवहिमाईणं । लंभो य निज्जराए नियमेणं अओ उ कायव्वं ॥
गाथा-[८३९] नि	वेयावच्चे अब्भुट्टियस्स सद्धाए काउकामस्स । लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अदीणमनसस्स ॥
गाथा-[८४०] नि	एसा गहणेसणविही कहिया मे धीरपुरिसपन्नत्ता । घासेसणंपि इत्तो वुच्छं अप्पक्खरमहत्थं ॥
गाथा-[८४१] नि	दव्वे भावे घासेसणा उ दव्वंमि मच्छआहारणं । गलमंसुंडगभक्खण गलस्स पुच्छेण घट्टणया ॥
गाथा-[८४२] नि	अह मंसंभि पहीणे झायंतं मच्छियं भणइ मच्छो । किं झायसि तं एवं सुण ताव जहा अहिरिओऽसि ॥
गाथा-[८४३] नि	चरियं व कप्पियं वा आहरणं दुविहमेव नायव्वं । अत्थस्स साहणट्ठा इंधणमिव ओयणट्ठाए ॥
गाथा-[८४४] नि	तिबलागमुहा मुक्को तिक्खुत्तो वलयामुहे । तिसत्तक्खुत्तो जालेणं सयं छिन्नोदए दहे ॥
गाथा-[८४५] नि	एयारिसं ममं सत्तं सढं घट्टिअघट्टणं । इच्छसि गलेणं घेतुं अहो ते अहिरीयया ॥
गाथा-[८४६] नि	अह होइ भावघासेसणा उ अप्पाणमप्पणा चेव । साहू भुंजिउकामो अनुसासइ निज्जरट्ठाए ॥
गाथा-[८४७] नि	बायालीसेसणसंकडंमि गहणंमि नीव नहु छलिओ । एण्हें जह न छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥
गाथा-[८४८] नि	जह अब्भंगणलेवो सगडक्खवणाण जुत्तिओ होति । इय संजमभरवहणट्ठयाए साहूण आहारो ॥
गाथा-[८४९] नि	उवजीवि अनुवजीवी मंडलियं पुव्ववन्निओ साहू । मंडलिअसमुद्दिसगाण ताण इणमो विहिं वुच्छं ॥
गाथा-[८५०] नि	आगाढजोगवाही निज्जुढऽतट्ठिया व पाहुणगा । सेहा सपायछित्ता वाला वुड्ढेवमाईया ॥
गाथा-[८५१] नि	दुविहो खलु आलोगो दव्वे भावे य दव्वि दीवाई । सत्तविहो आलोगो सयावि जयणा सुविहियाणं ॥
गाथा-[८५२] नि	ठाण दिसि पगासणया भायण पक्खेवणे य गुरु भावे । सत्तविहो आलोगो सयावि जयणा सुविहियाणं ॥
गाथा-[८५३] भा	निक्खमपवेसमंडलिसागारियठाण परिहिय ट्ठाइ । मा एक्कासणभंगो अहिगरणं अंतरायं वा ॥
गाथा-[८५४] भा	पच्चुरसिपरंमुहपट्टिपक्ख एया दिसा विवज्जेत्ता । ईसाणगेईय व ठाएज्ज गुरुस्स गुणकलिओ ॥
गाथा-[८५५] भा	मच्छिकंठट्ठाईण जाणणट्ठा पगासमुंजणया । अट्ठियलगणदोसा वग्गुलिदोसा जढा एवं ॥
गाथा-[८५६] भा	जे चेव अंधयारे दोसा ते चेव संकडमुहंमि । परिसाडी बहुलेवाडणं च तम्हा पगासमुहे ॥
गाथा-[८५७] भा	कुक्कुडिअंडगमित्तं अविगियवयणो उ परिक्खवे कवलं । अइखद्धकारगं वा जं च अणालोइयं हुज्जा ॥
गाथा-[८५८] भा	कुक्कुडिअंडगमित्तं अविगियवयणो उ परिक्खवे कवलं । अइखद्धकारगं वा जं च अणालोइयं हुज्जा ॥

- गाथा-[८५९] नि** सो आलोइयमोई जो एए जुंजइ पए सव्वे ।
गविसणगहणग्घासेसणाइ तिविहाइवि विसुद्धं ॥
- गाथा-[८६०] नि** एवं एगस्स विही भोत्तव्वे वन्निओ समासेणं ।
एमेव अणेयाणवि जं नाणत्तं तयं वोच्छं ॥
- गाथा-[८६१] नि** अतरंतबालवुड्ढा सेहाएसा गुरू असहुवग्गो ।
साहारणोग्गहाऽलद्धिकारणा मंडली होइ ॥
- गाथा-[८६२] नि** नाउ नियट्टणकालं वसहीपालो य मायणुग्गाहे ।
परिसंठियऽच्छदवगेम्हणट्टया गच्छमासज्ज ॥
- गाथा-[८६३] नि** असई य नियत्तेसुं एक्कं चउरंगुलूणमाणेसु ।
पक्खिविय पडिग्गहगं तत्थऽच्छदयं तु गालेज्जा ॥
- गाथा-[८६४] नि** आयरियअभावियपाणगट्टया पायपोसधुवणट्टा ।
होइ य सुहं विवेगो सुह आयमणं च सागरिए ॥
- गाथा-[८६५] नि** एक्कं व दो व तिन्नि व पाए गच्छप्पमाणमासज्ज ।
अच्छदवस्स मरेज्जा कसट्टबीए विगिंचेज्जा ॥
- गाथा-[८६६] नि** मूडंगाईमक्कोडएहिं संसत्तगं च नाऊणं ।
गालेज्ज छब्भएणं सउणीधरणं व दवं तु ॥
- गाथा-[८६७] नि** इय आलोइयपट्टविअगालिए मंडलीइ सट्टाणे ।
सज्झायमंगलं कुणइ जाव सव्वे पडिनियत्ता ॥
- गाथा-[८६८] नि** कालपुरिसे व आसज्ज मत्तए पक्खिवित्तु तो पढमा ।
अहवावि पडिग्गहगं मुयंति गच्छं समासज्ज ॥
- गाथा-[८६९] नि** चित्तं बालाईणं गहाय आपुच्छिऊण आयरिअं ।
जमलजणणीसरिच्छो निवेसई मंडली थेरो ॥
- गाथा-[८७०] नि** जइ लुद्धो राइणिओ होइ अलुद्धोवि जोऽवि गीयत्थो ।
ओमोवि हु गीयत्थो मंडलिराईणि अलुद्धो ॥
- गाथा-[८७१] नि** ठाण दिसि पगासणया भायण पक्खेवणा य भाव गुरू ।
सो चेव य आलोगो नाणत्तं तदिसाठाणे ॥
- गाथा-[८७२] भा** निक्खमपवेस मोत्तुं पढमसमुद्दिस्सगाण ठायंति ।
सज्झाए परिहाणी भावासन्नेवमाईया ॥
- गाथा-[८७३] भा** पुव्वमुहो राइणिओ एक्को य गुरूस्स अभिमुहो ठाइ ।
गिण्हइ व पणामेइ व अभिमुहो इहरहाऽवन्ना ॥
- गाथा-[८७४] नि** जो पुण हवेज्ज खमओ अतिउच्चाओ व सो बहिं ठाइ ।
पढमसमुद्दिट्ठो वा सागारियक्खणट्टाए ॥
- गाथा-[८७५] नि** एक्केक्कस्स य पासंमि मल्लयं तत्थ खेलमुग्गाले ।
कट्टऽट्टिए व छुब्भइ मा लेवकडा भवे वसही ॥
- गाथा-[८७६] नि** मंडलिभायणभोयण गहणं सोही य कारणुव्वरिते ।
भोयणविही उ एसो भणिओ तेल्लुक्कदंसीहिं ॥
- गाथा-[८७७] भा** मंडलि अहराइणिआ सामायारी य एस जा भणिआ ।
पुव्वं तु अहाकडगा मुच्चंति तओ कमोणियरे ॥
- गाथा-[८७८] भा** निद्धमहुराणि पुव्वं पित्ताईपसमणट्टया भुंजे ।
बुद्धिबलवड्ढणट्टा दुक्खं तु विकिंचिउं निद्धं ॥
- गाथा-[८७९] भा** अह होज्ज निद्धमहुरणि अप्पपरिकम्मसपरिकम्मेहिं ।
भोत्तूण निद्धमहुरे फुसिअ करे मुंचऽहागडए ॥

- गाथा-[८८०] भा** कुक्कुडिअंडगमित्तं अहवा खुड्डुगलंबणासिस्स ।
लंबणतुल्ले गिण्हइ अविगियवयणो य राइणिओ ॥
- गाथा-[८८१] भा** गहणे पक्खेवंमि अ सामायारी पुणो भवे दुविहा ।
गहणे पायंमि भवे वयणे पक्खेवणा होइ ॥
- गाथा-[८८२] भा** कडपयरच्छेएणं भोत्तव्वं अहव सीहखइएणं ।
एगेहि अणेगेहिवि वज्जेत्ता धूमइंगालं ॥
- गाथा-[८८३] भा** असुरसुरं अचवचवं अदुयमविलंबिअं अपरिसाडिं ।
मणवयणकायगुत्तो भुंजइ अह पक्खिवणसोहिं ॥
- गाथा-[८८४] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जिअं ।
साहारणं अयाणंतो साहू हवइ असारओ ॥
- गाथा-[८८५] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जिअं ।
साहारणं वियाणंतो साहू हवइ ससारओ ॥
- गाथा-[८८६] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जिअं ।
साहारणं अयाणंतो साहू कुणइ तेणिअं ॥
- गाथा-[८८७] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जिअं ।
साहारणं वियाणंतो साहू पावइ निज्जरं ॥
- गाथा-[८८८] नि** अंतंतं भोक्खामित्ति बेसए भुंजए य तह चेव ।
एस ससारनिविट्ठो ससारओ उट्ठिओ साहू ॥
- गाथा-[८८९] नि** एमेव य भंगतिअं जोएयव्वं तु सार नाणार्इ ।
तेण सहिओ ससारो समुद्वणिएण दिट्ठंतो ॥
- गाथा-[८९०] नि** जत्थ पुण पडिगहगो होज्ज कडो तत्थ छुब्भए अन्नं ।
मत्तगगहिउव्वरिअं पडिगहे जं असंसट्ठं ॥
- गाथा-[८९१] नि** जं पुण गुरुस्स सेसं तं छुब्भइ मंडलीपडिगहके ।
बालादीण व दिज्जइ न छुब्भइ सेसगाणऽहिअं ॥
- गाथा-[८९२] नि** सुक्कोल्लपडिगहगे विआणिआ पक्खिवे दवं सुक्के ।
अभत्तट्ठिआण अट्ठा बहुलंभे जं असंसट्ठं ॥
- गाथा-[८९३] नि** सोही चउक्क भावे विगइंगालं च विगइधूमं च ।
रागेण सयंगालं दोसेण सधूमगं होइ ॥
- गाथा-[८९४] नि** जत्तासाहणहेउं आहारेंति जवणट्ठया जइणो ।
छायालीसं दोसेहिं सुपरिसुद्धं विगयरागा ॥
- गाथा-[८९५] नि** हियाहारा मियाहारा अप्पाहारा य जे नरा ।
न ते विज्जा तिगिच्छंति अप्पाणं ते तिगिच्छगा ॥
- गाथा-[८९६] नि** छण्हमन्नयरे ठाणे कारणंमि उ आगए ।
आहारेज्ज उ मेहावी संजए सुसमाहिए ॥
- गाथा-[८९७] नि** वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥
- गाथा-[८९८] भा** नत्थि छुहाए सरिसया वेयण भुंजेज्ज तप्पसमणट्ठा ।
छाओ वेयावच्चं न तरइ काउं अओ भुंजे ॥
- गाथा-[८९९] भा** इरियं नवि सोहेइ पेहाईयं च संजमं काउं ।
थाभो वा परिहायइ गुणऽणुप्पेहासु य असत्तो ॥
- गाथा-[९००] नि** अहवा न कुज्ज आहारं छहिं ठाणेहिं संजए ।
पच्छा पच्छिमकालंमि काउं अप्पक्खमं खमं ॥

गाथा-[९०१] भा	आयंके उवसग्गे तितिक्खया बंभचेरगुत्तीए । पाणदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥
गाथा-[९०२] भा	आयंको जरमाई राया सन्नायगा व उवसग्गा । बंभवयपालणट्ठा पाणदया वासमहियाई ॥
गाथा-[९०३] भा	तवहेउ चउत्थाई जाव उ छम्मासिओ तवो होइ । छट्ठं सरीरवोच्छेयणट्ठया होयऽणाहारो ॥
गाथा-[९०४] नि	एएहिं छहिं ठाणेहिं अणाहारो य जो भवे । धम्मं नाइक्कमे भिक्खू झाणजोगरओ भवे ॥
गाथा-[९०५] नि	भुंजंतो आहारं गुणोवयारं सरीरसाहारं । विहिणा जहोवइट्ठं संजमजोगाण वहणट्ठा ॥
गाथा-[९०६] नि	भुत्तुट्ठियावसेसो तिलंबणा होइ संलिहणकप्पो । अपहुप्पन्ने अन्नं पि छोढुं ता लंबणे ठवए ॥
गाथा-[९०७] नि	संदिट्ठा संलिहिउं पढमं कप्पं करेइ कलुसेणं । तं पाउ मुहमासे बितियच्छदवस्स गिण्हंति ॥
गाथा-[९०८] नि	दारुण वितियकप्पं बहिया मज्झट्ठिआ उ दवहारी । तो देंति तइयकप्पं दोण्हं दोण्हं तु आयमणं ॥
गाथा-[९०९] नि	होज्ज सिआ उद्धरियं तत्थ य आयं बिलाइणो हुज्जा । पडिदंसिअ संदिट्ठो बाहरइ तओ चउत्थाई ॥
गाथा-[९१०] नि	मोहचिगिच्छ विगिट्ठं गिलाण अत्तट्ठियं च मोत्तूणं । सेसे गंतुं भणई आयरिया वाहरंति तुमं ॥
गाथा-[९११] नि	अपडिहणंतो आगंतुं वंदिउं भणइ सो उ आयरिए । संदिसह भुंज जं सरति तत्तियं सेस तस्सेव ॥
गाथा-[९१२] नि	अमणंतस्स उ तस्सेव सेसओ होइ सो विवेगो उ । भणिओ तस्स उ गुरुणा एसुवएसो पवयणस्स ॥
गाथा-[९१३] नि	मुत्तंमि पढमकप्पं करेमि तस्सेव देंति तं पायं । जावतिअंति अमणिए तस्सेव विगिंचणे सेसं ॥
गाथा-[९१४] नि	विहिगहिअं विहिमुत्तं अइरेगं भत्तपाण भोत्तव्वं । विहिगहिए विहिभुत्ते एत्थ य चउरो भवे भंगा ॥
गाथा-[९१५] भा	उग्गमदोसाइजढं अहवा बीयं जहिं जहापडिअं । इय एसो गहणविही असुद्धपच्छायणे अविही ॥
गाथा-[९१६] नि	कागसियालक्खइयं दविअरसं सव्वओ परामट्ठं । एसो उ भवे अविही जहगहिअं भोयणंमि विही ॥
गाथा-[९१७] भा	उच्चणइ व विट्ठाओ काओ अहवावि विक्खिरइ सव्वं । विप्पेक्खइ य दिसाओ सियालो अन्नोन्नहिं गिण्हे ॥
गाथा-[९१८] भा	सुरही दोच्चंगट्ठा छोट्ठणं दवं तु पियइ दवियरसं । हेट्ठोवरि आमट्ठं इय एसो भुंजणे अविही ॥
गाथा-[९१९] भा	जह गहिअं तह नीयं गहणविही भोयणे विही इणमो । उक्कोसमणुक्कोसं समकयरसं तु भुंजेज्जा ॥
गाथा-[९२०] भा	तइएवि अविहिगहिअं विहिमुत्तं तं गुरूहिऽणुन्नायं । सेसा नाणुन्नाया गहणे दत्ते य निज्जुहणा ॥
गाथा-[९२१] भा	अहवावि अकरणाए उवट्ठियं जाणिऊण वल्लाणं । घट्टेउं देंति गुरू पसंगविणिवारणट्ठाए ॥

- गाथा-[९२२] भा** घासेसणा य एसा कहिया मे धीरपुरिसपन्नत्ता ।
संजमतवड्डगाणं निगंथाणं महरिसीणं ॥
- गाथा-[९२३] भा** एयं घासेसणविहिं जुंजतंता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमनंतं ॥
- गाथा-[९२४] भा** एत्तो परिट्ठवणविहिं वोच्छामि धीरपुरिसपन्नत्तं ।
जं नाऊण सुविहिया करेति दुक्खक्खयं धीरा ॥
- गाथा-[९२५] भा** मत्तट्ठिअ उव्वरिअं अहव अभत्तट्ठियाण जं सेसं ।
संबंधेणाणेण उ परिठावणिआ मुणेयव्वा ॥
- गाथा-[९२६] नि** सा पुण जायमजाया जाया मूलोत्तरेहि उ असुद्धा ।
लोभातिरेगगहिया अभिओगकया विसकया वा ॥
- गाथा-[९२७] भा** मूलगुणेहिं असुद्धं जं गहिअं भत्तपाण साहूहिं ।
एसा उ होइ जाता वुच्छं सि विहीए वोसिरणं ॥
- गाथा-[९२८] नि** एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले गुरुवड्डे ।
आलोए एगपुंजं तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥
- गाथा-[९२९] भा** लोभातिरेगगहिअं अहव असुद्धं तु उत्तरगुणेहिं ।
एसावि होति जाया वोच्छं सि विहीए वोसिरणं ॥
- गाथा-[९३०] नि** एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले गुरुवड्डे ।
आलोए दुन्नि पुंजा तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥
- गाथा-[९३१] नि** दुविहो खलु अभिओगो दव्वे भावे य होइ नायव्वो ।
दव्वंमि होइ जोगो विज्जा मंता य भावंमि ॥
- गाथा-[९३२] नि** विज्जाए होअगारी अवियत्ता सा य पुच्छए चरिअं ।
अभिमंतणोदणस्स उ अनुकंपणमुज्झणं च खरे ॥
- गाथा-[९३३] नि** बारस्स पिट्ठणंभि अ पुच्छण कहणं च होअगारीए ।
सिट्ठे चरियादंडो एवं दोसा इहंपि सिया ॥
- गाथा-[९३४] नि** जोगंमि उ अविरइया अज्झुव्वन्ना सरूवभिक्खुंभि ।
कडजोगमणिच्छंतस्स देइ भिक्खं असुभभावे ॥
- गाथा-[९३५] नि** संकाए स नियट्ठो दाऊण गुरुस्स काइयं निसिरे ।
तेसिंपि असुभभावो पुच्छा उ ममापि उज्झयणा ॥
- गाथा-[९३६] नि** एमेव विसकयंमिवि दाऊण गुरुस्स काइयं निसिरे ।
गंधाई विन्नाए उज्झगमविही सियालवहे ॥
- गाथा-[९३७] नि** एवं विज्जाजोए विससंजुत्तस्स वावि गहियस्स ।
पाणच्चएवि नियमुज्झणा उ वोच्छं परिट्ठवणं ॥
- गाथा-[९३८] नि** एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले गुरुवड्डे ।
छारेण अक्कमित्ता तिट्ठाणं सावणं कुज्जा ॥
- गाथा-[९३९] नि** दोसेण जेण दुट्ठं तु भोयणं तस्स सावणं कुज्जा ।
एवं विहिवोसट्ठे वेराओ मुच्चई साहू ॥
- गाथा-[९४०] नि** जावइयं उवउज्जइ तत्तिअमित्ते विगिंचणा नत्थि ।
तम्हा पमाणगहणं अइरेगं होज्ज उ इमेहिं ॥
- गाथा-[९४१] नि** आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लभे सहसदाणे ।
एवं होइ अजाया इमा उ गहणे विही होइ ॥
- गाथा-[९४२] नि** जइ तरुणो निरुवहओ भुंजइ तो मंडलीइ आयरिओ ।
असहुस्स वीसुगहणं एमेव य होइ पाहुणए ॥

- गाथा-[९४३] नि** सुत्तत्थथिरीकरणं विणओ गुरुपूय सेहबहुमाणो ।
दाणवतिसद्धवुद्धी बुद्धिबलवद्धणं चेव ॥
- गाथा-[९४४] नि** एएहिं कारणेहिं उ केइ सहुस्सवि वयंति अनुकंपा ।
गुरुअनुकंपाए पुण गच्छे तित्थे य अनुकंपा ॥
- गाथा-[९४५] नि** सति लाभे पुण दव्वे खेत्ते काले य भावओ चेव ।
गहणं तिसु उक्कोसं पावे जं जस्स अनुकूलं ॥
- गाथा-[९४६] भा** कलमोतणो उ पयसा उक्कोसो हाणि कोद्वुब्भज्जी ।
तत्थवि मिउतुप्पतरयं जत्थ व जं अच्चियं दोसु ॥
- गाथा-[९४७] नि** लाभे सति संघाडो गेण्हइ एगो उइहरहा सव्वे ।
तस्सऽप्पणो य पज्जत्त गेण्हणा होइ अतिरेगं ॥
- गाथा-[९४८] नि** गेलन्ननियमगहणं नाणत्तोमासियंपि तत्थ भवे ।
ओमासियमुव्वरिअं विगिंचए सेसगं भुंजे ॥
- गाथा-[९४९] नि** दुल्लभदव्वं व सिआ घयाइ घेत्तूण सेस मुज्जंति ।
थोवं देमि व गेण्हामि यत्ति सहसा भवे मरियं ॥
- गाथा-[९५०] नि** एएहिं कारणेहिं गहियमजाया उ सा विगिंचणया ।
आलोगंमि तिपुंजा अब्बाणे निग्गयातीणं ॥
- गाथा-[९५१] नि** एक्को व दो व तिन्नि व पुंजा कीरंति किं पुण निमित्तं ।
विहमाइनिग्गयाणं सुद्धेयरजाणणट्ठाए ॥
- गाथा-[९५२] नि** एवं विगिंविउं निग्गयस्स सन्ना हवेज्ज तं तु कहं ।
निसिरेज्जा अहव धुवं आहारा होइ नीहारो ॥
- गाथा-[९५३] नि** थंडिल्ल पुव्वभणियं पढमं निदोस दोसु जयणाए ।
नवरं पुण नाणत्तं भावासन्नाए वोसिरणं ॥
- गाथा-[९५४] भा** अणावायमसंलोयं अणवायालोय ततिय विवरीयं ।
आवातं संलोगं पुव्वुत्ता थंडिला चउरो ॥
- गाथा-[९५५] नि** अणावायमसंलोगं निदोसं बितियचरिमजयणाए ।
पउरदवकुरुकयादी पत्तेयं मत्तगो चेव ॥
- गाथा-[९५६] नि** तइएवि य जयणाए नाणत्तं नवरि सद्दकरणंमि ।
भावासन्नाए पुण नात्तमिणं सुणसु वोच्छं ॥
- गाथा-[९५७] नि** जदि पढमं न तरेज्जा तो बितियं तस्स असइए तइयं ।
तस्स असई चउत्थे गामे दारे य रत्थाए ॥
- गाथा-[९५८] नि** साही पुरोहडे वा उवस्साए मत्तगंमि वा निसिरे ।
अच्चुक्कडंमि वेगे मंडलिपासंमि वोसिरइ ॥
- गाथा-[९५९] नि** तिण्णि सल्ला महाराय अस्सिं देहे पइट्ठिया ।
वायमुत्तपुरीसाणं पत्तयेगं न धारए ॥
- गाथा-[९६०] नि** राया विज्जंमि मए विज्जसुयं भणइ किंच ते अहियं ।
अहियंति वायकम्मे विज्जे हसणा य परिकहणा ॥
- गाथा-[९६१] नि** एसा परिट्ठवणविही कहिया मे धीरपुरिसपन्नत्ता ।
सामायारी एतो वुच्छं अप्पक्खरमहत्थं ॥
- गाथा-[९६२] नि** सन्नातो आगतो चरमपोरिसिं जाणिऊण ओगाढं ।
पडिलेहणमप्पत्तं नाऊण करेइ सज्झायं ॥
- गाथा-[९६३] नि** पुव्वुद्धिट्ठो य विही इहंपि पडिलेहणाइ सो चेव ।
जं एत्थं नाणत्तं तमहं वुच्छं समासेणं ॥

गाथा-[९६४] नि	पडिलेहगा उ दुविहा भत्तट्टिएयरा य नायव्वा । दोण्हविय आइपडिलेहणा उ मुहन्नंतग सकायं ॥
गाथा-[९६५] नि	तत्तो गुरु परिन्ना गिलाणसेहाति जे अभत्तट्टी । संदिसह पाय मत्ते य अप्पणो पट्टगं धरिमं ॥
गाथा-[९६६] नि	पट्टग मत्तय सयमोग्गहो य गुरुमाइया अनुन्नवणा । तो सेस पायवत्थे पाउंछणगं च भत्तट्टी ॥
गाथा-[९६७] नि	जस्स जहा पडिलेहा होइ कया सो तहा पढइ साहू । परियट्टेइ व पयओ करेइ वा अन्नवावारं ॥
गाथा-[९६८] नि	चउभागवसेसाए चरिमाए पडिक्कमित्तु कालस्स । उच्चारे पासवणे ठाणे चउवीसइं पेहे ॥
गाथा-[९६९] नि	अहियासिया उ अंतो आसन्ने मज्झि तह य दूरे य । तिन्नेव अणहियासी अंतो छच्छच्च बाहिरओ ॥
गाथा-[९७०] नि	एमेव य पासवणे बारस चउवीसइं तु पेहिता । कालस्सवि तिन्नि भवे अह सूरु अत्थमुवयाई ॥
गाथा-[९७१] नि	जइ पुण निव्वाघाओ आवासं तो करेति सव्वेवि । सङ्काइकहणवाघायताए पच्छा गुरू ठंति ॥
गाथा-[९७२] नि	सेसा उ जहासत्ती आपुच्छित्ताण ठंति सट्ठाणे । सुत्तत्थझरणहेउं आयरिए ठियंमि देवसियं ॥
गाथा-[९७३] नि	जो होज्ज उ असमत्थो बालो वुड्ढो गिलाण परितंतो । सो आवस्सगजुत्तो अच्छेज्जा निज्जरापेही ॥
गाथा-[९७४] नि	आवासगं तु काउं जिणवरदिट्ठं गुरूवएसेणं । तिन्नि वुई पडिलेहा कालस्स विही इमो तत्थ ॥
गाथा-[९७५] नि	दुविहो य होइ कालो वाघातिम एयरो य नायव्वो । वाघाओ घंघसालाए घट्टणं सट्ठकहणं वा ॥
गाथा-[९७६] नि	वाघाते तइओ सिं दिज्जइ तस्सेव ते निवेयंति । निव्वाघाते दुन्नि उ पुच्छंती काल वेच्छामो ॥
गाथा-[९७७] नि	आपुच्छण किइकम्मं आवस्सिय खलियपडियवाघाओ । इंदिय दिसा य तारा वासमसज्झाइयं चेव ॥
गाथा-[९७८] नि	जइ पुण वच्चंताणं छीयं जोइं च तो निययंति । निव्वाघाते दोन्नि उ अच्छंति दिसा निरिक्खंता ॥
गाथा-[९७९] नि	गोणादि कालभूमीए होज्ज संसप्पगा व उट्टेज्जा । कविहसियवासविज्जुक्कगज्जिए वावि उवघातो ॥
गाथा-[९८०] नि	सज्झायमचिंतंता कणगं दट्ठूण तो नियत्तंति । वेलाए दंडधारी मा बोलं गंडए उवमा ॥
गाथा-[९८१] नि	आघोसिए बहूहिं सुयंमि सेसेसु निवडइ दंडो । अह तं बहूहिं न सुयं दंडिज्जइ गंडो ताहे ॥
गाथा-[९८२] नि	कालो सज्झाय तहा दोवि समप्पंति जह समं चेव । तह तं तुलंति कालं चरिमदिसं वा असज्झागं ॥
गाथा-[९८३] नि	पियधम्मो दढधम्मो संविग्गो चेवऽवज्जमीरू य । खेयन्नो य अभीरूकालं पडिलेहए साहू ॥
गाथा-[९८४] नि	आउत्तपुव्वभणिए अणपुच्छा खलियपडियवाघाते । घोसंतमूढसंकियइंदियविसएवि अमणुन्ने ॥

- गाथा-[९८५] नि** निसीहिया नमोक्कारे काउस्सगो य पंचमंगलए ।
पुव्वाउत्ता सव्वे पट्टवणचउक्कनाणत्तं ॥
- गाथा-[९८६] नि** वोवावसेसियाए सज्झाए ठाइ उत्तराहुतो ।
चउवीसगदुमपुप्फियपुव्वग एक्केक्कयदिसाए ॥
- गाथा-[९८७] नि** ममासंतमूढसंकियइंदियविसए य होइ अमणुन्ने ।
बिंदू य छीयऽपरिणय सगणे वा संकियं तिण्हं ॥
- गाथा-[९८८] भा** मूढो व दिसऽज्झयणे मासंतो वावि गिण्हइ न सुज्झे ।
अन्नं च दिसज्झयणं संकंतोऽणिट्ठविसयं वा ॥
- गाथा-[९८९] नि** जो वच्चंतंमि विही आगच्छंतंमि होइ सो चेव ।
जं एत्थं नाणत्तं तमहं वुच्छं समासेणं ॥
- गाथा-[९९०] नि** निसीहिया नमुक्कारं आसज्जावडणपडणजोइक्खे ।
अपमज्जिय भीए वा छीए छिन्ने व कालवहो ॥
- गाथा-[९९१] नि** आगम इरियावहिया मंगल आवेयणं तु मरु नायं ।
सव्वेहिवि पट्टविएहि पच्छा करणं अकरणं वा ॥
- गाथा-[९९२] नि** सन्निहियाण वडारो पट्टविय पमाय नो दए कालं ।
बाहिठिए पडियरए पविसइ ताहे व दंडधरो ॥
- गाथा-[९९३] नि** पट्टविय वंदिए या ताहे पुच्छेइ किं सुयं भंते ।
तेवि य कहंति सव्वं जं जेण सुयं व दिट्ठं वा ॥
- गाथा-[९९४] नि** एक्कस्स व दोण्ह व संकियंमि कीरइ न कीरइ तिण्हं ।
सगणंमि संकिए परणगंमि गंतुं न पुच्छंति ॥
- गाथा-[९९५] नि** कालचउक्के नाणत्तयं तु पादोसियंमि सव्वेवि ।
समयं पट्टवयंती सेसेसु समं व विसमं वा ॥
- गाथा-[९९६] नि** इंदियमाउत्ताणं हणंति कणगा उ सत्त उक्कोसं ।
वासासु य तिन्नि दिसा उउबद्धे तारगा तिन्नि ॥
- गाथा-[९९७] भा** कणगा हणंति कालं ति पंच सतेव धिं गिम्ह सिसिरवासे ।
उक्का उ सरेहागा रेहारहितो भवे कणतो ॥
- गाथा-[९९८] नि** सव्वेवि पढमजामे दोन्नि उ वसमा उ आइमा जामा ।
तइओ होइ गुरूणं चउत्थओ होइ सव्वेसिं ॥
- गाथा-[९९९] भा** वासासु य तिण्णि दिसा हवंति पामाइयम्मि कालंमि ।
सेसेसु तीसु चउरो उउंमि चउरो छउदिसिंपि ॥
- गाथा-[१०००] भा** तिसु तिण्णि तारगा उ उदुंमि पाभाइए अदिट्ठेऽवि ।
वासासु अतारागा चउरो छन्ने निविट्ठोवि ॥
- गाथा-[१००१] नि** ठाणासति बिंदूसु गेण्हइ बिट्ठोवि पच्छिमं कालं ।
पडियरइ बाहिं एक्को एक्को अंतट्ठिओ गिण्हे ॥
- गाथा-[१००२] नि** पाओसियअट्ठरत्ते उत्तरदिसि पुव्व पेहए कालं ।
वेरत्तियंमि भयणा पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥
- गाथा-[१००३] नि** सज्झायं काऊणं पढमबितियासु दोसु जागरणं ।
अन्नं वावि गुणंती सुणंति ज्ञायंति वाऽसुद्धे ॥
- गाथा-[१००४] नि** जो चेव अ सयणविही नेगाणं वन्निओ वसहिदारे ।
सो चेव इहंपि भवे नाणत्तं नयरि सज्झाए ॥
- गाथा-[१००५] नि** एसा सामायारी कहिया मे धीरपुरिसपन्नत्ता ।
एत्तो उवहिपमाणं वुच्छं सुद्धस्स जह धरणा ॥

- गाथा-[१००६] नि** उवही उवग्गहे संगहे य तह पग्गहुग्गहे चेव ।
भंडग उवगरणे या करणेऽवि य हुंति एगट्ठा ॥
- गाथा-[१००७] नि** ओहे उवग्गहंमि य दुविहो उवही उ होइ नायव्वो ।
एक्केक्कोऽविय दुविहो गणणाए पमाणतो चेव ॥
- गाथा-[१००८] नि** पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया ।
पडलाइं रयत्ताणं च गुच्छओ पायनिज्जोगो ॥
- गाथा-[१००९] नि** तिन्नेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपत्ती ।
एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥
- गाथा-[१०१०] नि** एए चेव दुवालस मत्तग अइरेग चोलपट्टो य ।
एसो चउद्दसविहो उवही पुण थेरकप्पम्मि ॥
- गाथा-[१०११] नि** जिणा बारसरूवाइं थेरा चउद्दसरूविणो ।
अज्जाणं पन्नवीसं तु अओ उड्डं उवग्गहो ॥
- गाथा-[१०१२] नि** तिन्नेव य पच्छागा पडिग्गहो चेव होइ उक्कोसो ।
गुच्छग पत्तगठवणं मुहनंतग केसरि जहन्नो ॥
- गाथा-[१०१३] नि** पडलाइ रयत्ताणं पत्ताबंधो य चोलपट्टो य ।
रयहरणमत्तओऽवि य थेराणं छव्विहो मज्झो ॥
- गाथा-[१०१४] नि** पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवणं च पायकेसरिया ।
पडलाइ रयत्ताणं च गोच्छओ पायनिज्जोगो ॥
- गाथा-[१०१५] नि** तिन्नेव य पच्छागा रयहरणं चेव होइ मुहपत्ती ।
तत्तो य मत्तगो खलु चउगसमो कमढगो चेव ॥
- गाथा-[१०१६] नि** उग्गह नंतगपट्टो अद्धोरुग वलणिया य बोद्धव्वा ।
अब्भितर बाहिरियं सणियं तह कंचुगे चेव ॥
- गाथा-[१०१७] नि** उक्कच्छिय वेकच्छी संघाडी चेव खंधकरणी य ।
ओहोवहिंमि एए अज्जाणं पन्नवीसं तु ॥
- गाथा-[१०१८] भा** नायनिमो उग्गह णंतगो उ सो गुज्झदेसरक्खट्ठा ।
सो उ पमाणेणो गो घणमसिणो देहमासज्ज ॥
- गाथा-[१०१९] भा** पट्टोवि होइ एक्को देहपमाणेण सो उ मइयव्वो ।
छायंतोग्गहणंतं कडिबंधो मल्लकच्छा वा ॥
- गाथा-[१०२०] भा** उद्धोरुगो उ ते दोवि गेण्हिउं छायए कडिविभागं ।
जाणुपमाणा चलणी असीविया लंखियाएव्व ॥
- गाथा-[१०२१] भा** अंतो नियंसणी पुण लीणतरा जाव अद्धजंघाओ ।
बाहिर खलुगपमाणा कडीय दोरेण पडिबद्धा ॥
- गाथा-[१०२२] भा** छाएइ अनुक्कमइ उरोरुहं कंचुओ य असीविओ य ।
एमेव य ओकच्छिय सा नवरं दाहिणे पासे ॥
- गाथा-[१०२३] भा** वेकच्छिया उ पट्टो कंचुयमुक्कच्छियं व छाएइ ।
संघाडीओ चउरो तत्थ दुहत्था उवसयंमि ॥
- गाथा-[१०२४] भा** दोण्णि तिहत्थायामा भिक्खट्ठा एग एग उच्चारे ।
ओसरणे चउहत्था निसन्नपच्छायणी मसिणा ॥
- गाथा-[१०२५] भा** संधकरणी य चउहत्थवित्थडा वावविहुयरक्खट्ठा ।
खुज्जकरणी उ कीरइ रूववईणं कुडहहेउं ॥
- गाथा-[१०२६] प्र** संघाइमे अरो वा सव्वोवेसो समासओ उवही ।
पासगबद्धमझूसिरो जं चाइन्नं तयं एयं ॥

- गाथा-[१०२७] प्र** जिणा बारसरूवाणि०
- गाथा-[१०२८] प्र** उक्कोसगो जिणाणं छउव्विहो मज्झिमोवि एमेव ।
जहनो चउव्विहो खलु इत्तो थेराण वुच्छामि ॥
- गाथा-[१०२९] प्र** उक्कोसो थेराणं चउव्विहो छव्विहो अ मज्झिमओ ।
जहन्नो चउव्विहो खलु इत्तो अज्जाण वुच्छामि ॥
- गाथा-[१०३०] नि** उक्कोसो अट्ठविहो मज्झिमओ होइ तेर सविहो उ ।
जहन्नो चउव्विहोविय तेण परमुवग्गहं जाण ॥
- गाथा-[१०३१] नि** एगं पायं जिणकप्पियाण थेराण मत्तओ बिइओ ।
एयं गणणपमाणं पमाणमाणं अओ वुच्छं ॥
- गाथा-[१०३२] नि** तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च माणस्स मज्झिमपमाणं ।
इत्तो हीण जहन्नं अरेगतंरं तु उक्कोसं ॥
- गाथा-[१०३३] नि** इणमण्णं तु पमाणं नियगाहाराउ होइ निप्फन्नं ।
कालपमाणपसिद्धं उदरपमाणेण य वयंति ॥
- गाथा-[१०३४] नि** उक्कोसतिसामासे दुगाउअट्ठाणमागओ साहू ।
चउरंगुलूणमरियं जं पज्जत्तं तु साहुस्स ॥
- गाथा-[१०३५] नि** एयं चेव पमाणं सविसेसयरं अनुग्गहपवत्तं ।
कंतारे दुब्भिकखे रोहगमाईसु भइयव्वं ॥
- गाथा-[१०३६] भा** वेयावच्चगरो वा नंदीमाणं धरे उवग्गहियं ।
सो खलु तस्स विसेसो पमाणजुत्तं तु सेसाणं ॥
- गाथा-[१०३७] नि** दिज्जाहि भाणपूरंति रिद्धिमं कोवि रोहमाईसु ।
तत्थवि तस्सुवओगो सेसं कालं तु पडिकुट्ठो ॥
- गाथा-[१०३८] नि** पायस्स लक्खणमलक्खणं च भुज्जो इमं वियाणित्ता ।
लक्खणजुत्तस्स गुणा दोसा य अलक्खणस्स इमे ॥
- गाथा-[१०३९] नि** वट्ठं समचउरंसं होइ थिरं थावरं च वण्णं च ।
हुंडं यायाइद्धं भिन्नं च अघारणिज्जाइं ॥
- गाथा-[१०४०] नि** संठियंमि भवे लाभो पतिट्ठा सुपतिट्ठिते ।
निव्वणे कित्तिमारोगं वन्नद्धे नाणसंपया ॥
- गाथा-[१०४१] नि** हुंडे चरित्तभेदो सबलंमि य चित्तविब्भमं जाणे ।
दुप्पत खीलसंठाणे गणे च चरणे च नो ठाणं ॥
- गाथा-[१०४२] नि** पउमुप्पले अकुसलं सव्वणे वणमादिसे ।
अंतो बहिं च दड्ढंमि मरणं तत्थ उ निदिसे ॥
- गाथा-[१०४३] नि** अकरंडगम्मि भाणे हत्थो उट्ठं जहा न घट्टेइ ।
एयं जहन्नयमुहं वत्थुं पम्पा विसालं तु ॥
- गाथा-[१०४४] नि** छक्कायरक्खणट्ठा पयग्गहणं जिणेहिं पन्नत्तं ।
जे य गुणा संभोए हवंति ते पायगहणेवि ॥
- गाथा-[१०४५] नि** अतरंतबालवुड्ढासेहाएसा गुरू असहुवग्गो ।
साहारणोग्गहाऽलद्धिकारणा पादगहणं तु ॥
- गाथा-[१०४६] नि** पत्ताबंधपमाणं पाणपमाणेण होइ कायव्वं ।
जह गंठिमि कयंमि कोणा चउरंगुला हुंति ॥
- गाथा-[१०४७] नि** पत्तट्ठवणं तह गुच्छओ य पायपडिलेहणीआ य ।
तिण्हंपि य प्पमाणं विहत्थि चउरंगुलं चेव ॥

- गाथा-[१०४८] नि** रयमादिरक्खणट्ठा पत्तट्ठवणं विऊ उवइसंति ।
होइ पमज्जणहेउं तु गोच्छओ भाणवत्थाणं ॥
- गाथा-[१०४९] नि** पायपमज्जणहेउं केसरिया पाए पाए एक्केक्का ।
गोच्छग पत्तट्ठवणं एक्केक्कं गणणमाणेणं ॥
- गाथा-[१०५०] नि** जेहिं सविया न दीसइ अंतरिओ तारिसा भवे पडला ।
तिन्नि व पंच व सत्त व कयलीगब्भोवमा मसिणा ॥
- गाथा-[१०५१] नि** गिम्हासु तिन्नि पडला चउरो हेमंत पंच वासासु ।
उक्कोसगा उ एए एत्तो पुण मज्झिमे वुच्छं ॥
- गाथा-[१०५२] नि** गिम्हासु हुंति चउरो पंच य हेमंति छच्च वासासु ।
एए खलु मज्झिमया एत्तो उ जहन्नो वुच्छं ॥
- गाथा-[१०५३] नि** गिम्हासु पंच पडला छप्पुण हेमंति सत्त वासासु ।
तिविहंमि कालछेए पायावरणा भवे पडला ॥
- गाथा-[१०५४] नि** अट्ठाइज्जा हत्था दीहा छत्तीस अंगुले रुद्धा ।
बितियं पडिग्गहाओ ससरीराओ य निप्फन्नं ॥
- गाथा-[१०५५] नि** पुप्फफलोदयरयरेणुसउणपरिहारपायरक्खट्ठा ।
लिंगस्स य संवरणे वेदोदयरक्खवणे पडला ॥
- गाथा-[१०५६] नि** माणं तु रयत्ताणे भाणपमाणेण होइ निप्फन्नं ।
पायाहिणं करेतं मज्झे चउरंगुलं कमइ ॥
- गाथा-[१०५७] नि** मूसयरजउक्केरे दासे सिण्हा रए य रक्खट्ठा ।
होति गुणा रयताणे पादे पादे य एक्केक्कं ॥
- गाथा-[१०५८] नि** कप्पा आयपमाणा अट्ठाइज्जा उ वित्थडा हत्था ।
दो चेव सोत्तिया उन्निओ य तइओ मुणेयव्वो ॥
- गाथा-[१०५९] नि** तणगहणाणलसेवानिवारणा धम्मसुक्कझाणट्ठा ।
दिट्ठं कप्पगहणंगिलामरणट्ठया चेव ॥
- गाथा-[१०६०] नि** धणं मूले थिरं मज्झे अगगे मद्दवजुत्तया ।
एंगंगियं अज्झुसिरं पोरायामं तिपासियं ॥
- गाथा-[१०६१] भा** अप्पोल्लं मिउ पम्हं च पडिपन्नं हत्थपूरिमं ।
रयणीपमाणमित्तं कुज्जा पोरपरिग्गहं ॥
- गाथा-[१०६२] नि** बत्तीसंगुलदीहं चउवीसं अंगुलाइं दंडो से ।
अट्ठंगुला दसाओ एगयरं हीणमहियं वा ॥
- गाथा-[१०६३] नि** उण्णिणं उट्ठियं वावि कंबलं पायपुंछणं ।
तिपरील्लमणिस्सट्ठं रयहरणं तु धारए एगं ॥
- गाथा-[१०६४] नि** आयाणे निक्खेवे ठाणनिसीयणतुयट्ठसंकोए ।
पुव्वं पमज्जणट्ठा लिंगट्ठा चेव रयहरणं ॥
- गाथा-[१०६५] नि** चउरंगुलं विहत्थी एयं मुहनंतगस्स उ पमाणं ।
बितियं मुहप्पमाणं गणणपमाणेण एक्केक्कं ॥
- गाथा-[१०६६] नि** संपातिमरयरेणूपमज्जणट्ठा वयंति मुहपुत्तिं ।
नासं मुहं च बंधइ तीए वसहिं पमज्जंतो ॥
- गाथा-[१०६७] नि** जो मागहओ पत्थो सविसेसतरं तु मत्तयपमाणं ।
दोसुवि दव्वग्गहणं वासावासासु अहिगारो ॥
- गाथा-[१०६८] नि** सूवोदणस्स भरिओ दुगाउद्धाणमागओ साहू ।
भुंजइ एगट्ठाणे एयं किर मत्तयपमाणं ॥

- गाथा-[१०६९] नि** संपाइमतसपाणा धूलिसरिक्खे य सरक्खा परिगलंतमि ।
पुढविदगअगणिमारुयउद्धंसण खिंसणा डहरे ॥
- गाथा-[१०७०] नि** आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुल्लभे सहसदाणे ।
संसत्तभत्तपाणे मत्तगपरिभोगऽणुन्नाओ ॥
- गाथा-[१०७१] नि** एक्कंमि उ पाउगं गुरुणो बितिओगहे य पडिकुट्टं ।
गिण्हइ संघाडेगो धुवलंभे सेस उभयंपि ॥
- गाथा-[१०७२] नि** असई लाभे पुण मत्तए व सव्वे गुरुण गेण्हंति ।
एसेव कमो नियमा गिलाणसेहाइएसुंपि ॥
- गाथा-[१०७३] नि** दुल्लभदव्वं व सिया घयाइं तं मत्तएसु गेण्हंति ।
लद्धेवि उ पज्जत्ते असंयरे सेसगट्ठाए ॥
- गाथा-[१०७४] नि** संसत्तभत्तपाणेसु वावि देसेसु मत्तए गहणं ।
पुव्वं तु भत्तपाणं सोहेउ छुहंति इयरेसु ॥
- गाथा-[१०७५] नि** दुगुणो चउगुणो वा हत्थो चउरंस चोलपट्टो उ ।
थेरज्जुवाणाणट्ठा सण्हे वुल्लंमि य विभासा ॥
- गाथा-[१०७६] नि** वेउव्वि वाउडे वातिएऽहिं खद्धपज्जणणे चेव ।
तेसिं अनुगहत्था लिंगुदयट्ठा य पट्टो उ ॥
- गाथा-[१०७७] नि** संवारुत्तरपट्टो अट्ठाइज्जा य आयया हत्था ।
दोण्हंपिय वित्थारो हत्थो चउरंगुलं चेव ॥
- गाथा-[१०७८] नि** पाणादिरेणुसारक्खणट्ठया होंति पट्टगा चउरो ।
छप्पइयरक्खणट्ठा तत्थुवरिं खोमियं कुज्जा ॥
- गाथा-[१०७९] नि** रयहरणपट्टमेत्ता अदसागा किंचि वा समतिरेगा ।
एकगुणा उ निसेज्जा हत्थपमाणा सपच्छागा ॥
- गाथा-[१०८०] नि** वासोवग्गहिओ पुण दुगुणो उवही उ वासकप्पाई ।
आयासंजमहेउं एक्कगुणो सेसओ होइ ॥
- गाथा-[१०८१] नि** जं पुण संपमाणाओ ईसिं हीणाहियं व लंभेज्जा ।
उभयंपि अहाकडयं न संघणा तस्स छेदो वा ॥
- गाथा-[१०८२] नि** दंडए लट्ठिया चेव चम्मए चम्मकोसए ।
चम्मच्छेदण पट्टेवि चिलिमिली धारए गुरू ॥
- गाथा-[१०८३] नि** जं चण्ण एवमादी तवंसजमसाहगं जइजणस्स ।
ओहाइरेगगहियं ओवग्गहियं वियाणाहि ॥
- गाथा-[१०८४] नि** लट्ठी आयपमाणा विलट्ठिचउरंगुलेणं परिहीणा ।
दंडो बाहुपमाणो विदंडओ कक्खमेत्तो उ ॥
- गाथा-[१०८५] नि** एक्कपव्वं पसंसंति दुपव्वा कलहकारिया ।
तिपव्वा लाभसंपन्ना चउपव्वा मारणंतिया ॥
- गाथा-[१०८६] नि** पंचपव्वा उ जा लट्ठी पंथे कलहनिवारणी ।
छच्चापव्वा य आयंको सत्तपव्वा अरोगिया ॥
- गाथा-[१०८७] नि** चउरंगुलपइट्ठाणा अट्ठंगुलसमूसिया ।
सत्तपव्वा उ जा लट्ठी मत्ता ता गयनिवारिणी ॥
- गाथा-[१०८८] नि** अट्ठपव्वा असंपत्ती नवपव्वा जसकारिया ।
दसपव्वा उ जा लट्ठी तहियं सव्वसंपया ॥
- गाथा-[१०८९] नि** वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दट्ठा य ।
लट्ठी य उब्भसुक्का वज्जेयव्वा पयत्तेण ॥

- गाथा-[१०९०] नि** विसमेसु य पव्वेसुं अनिप्फन्नेसु अच्छिसु ।
फुडिया फरुसवन्ना य निस्सारा चेव निंदिया ॥
- गाथा-[१०९१] नि** तणूई पव्वमज्झेसु थूला पोरेसु गंठिला ।
अथिरा असारजरढा साणपाया य निंदिया ॥
- गाथा-[१०९२] नि** धणवद्धमाणपव्वा निद्धा वन्नेण एगवन्ना य ।
धणमसिणवट्टपोरा लट्ठिपसत्था जइजणस्स ॥
- गाथा-[१०९३] नि** दुट्ठपसुसाणसावयचिक्खलविसमेसु उदगमज्झेसु ।
लट्ठी सरीरक्खातवसंजमसाहिया भणिया ॥
- गाथा-[१०९४] नि** मोक्खट्ठा नाणाई तणू तयट्ठा तयट्ठिया लट्ठी ।
दिट्ठो जहोवयारो कारणतक्कारणेसु तहा ॥
- गाथा-[१०९५] नि** जं जज्जइ उवकारे उवगरणं तं सि होइ उवगरणं ।
अतिरेगं अहिगरणं अजतो अजयं परिहरंतो ॥
- गाथा-[१०९६] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जियं ।
उवहिं धारए भिक्खू पगासपडिलेहणं ॥
- गाथा-[१०९७] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जियं ।
उवहिं धारए भिक्खू जोगाणं साहणट्ठया ॥
- गाथा-[१०९८] नि** उग्गमउप्पायणासुद्धं एसणादोसवज्जियं ।
उवहिं धारए भिक्खू अप्पदुट्ठो अमुच्छिओ ॥
- गाथा-[१०९९] नि** अज्झत्थ विसोहिए उवगरणं बाहिरं परिहरंतो ।
अपरिग्गहीति भणिओ जिणेहिं तेलुक्क दंसिहीं ॥
- गाथा-[११००] नि** उग्गम उपायणा सुद्धं एसणा दोसवज्जियं ।
उवहिं धारए भिक्खू सदा अज्झत्थसोहिए ॥
- गाथा-[११०१] नि** अज्झत्थविसोहीए जीवनिक्काएहिं संथडे लोए ।
देसियमहिंसत्तं जिणेहिं तेलोक्कदंसीहिं ॥
- गाथा-[११०२] नि** उच्चालियंमि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए ।
वावज्जेज्ज कुलिंगी मरिज्ज तं जोगमासज्ज ॥
- गाथा-[११०३] नि** न य तस्स तन्निमित्तो बंधो सुहुमोवि देसिओ समए ।
अणवज्जो उ पओगेण सव्वभावेण सो जम्हा ॥
- गाथा-[११०४] नि** नाणी कम्मस्स खयट्ठमुट्ठिओऽणुट्ठितो य हिंसाए ।
जयइ असढं अहिंसत्थमुट्ठिओ अवहओ सो उ ॥
- गाथा-[११०५] नि** तस्स असंचेअयओ संचेययतो य जाइं सत्ताइं ।
जोगं पप्प विणस्संति नत्थि हिंसाफलं तस्स ॥
- गाथा-[११०६] नि** जो य पमत्तो पुरिसो तस्स य जोगं पडुच्च जे सत्ता ।
वावज्जंते नियमा तेसिं सो हिंसओ होइ ॥
- गाथा-[११०७] नि** जोवि न वावज्जती नियमा तेसिंपि हिंसओ सो उ ।
सावज्जो उ पओगेण सव्वभावेणं सो जम्हा ॥
- गाथा-[११०८] नि** आया चेव अहिंसा आया हिंसत्ति निच्छओ एसो ।
जो होइ अप्पमत्तो अहिंसओ हिंसओ इयरो ॥
- गाथा-[११०९] नि** जो य पओगं जुंजइ हिंसत्थं जो य अन्नभावेणं ।
अमणो उ जो पउंजइ इत्थ विसेसो महं वुत्तो ॥
- गाथा-[१११०] नि** हिंसत्थं जुंजंतो सुमहंदोसो अनंतरं इयरो ।
अमणो य अप्पदोसो जोगनिमित्तं च विन्नेओ ॥

- गाथा-[११११] नि** रत्तो वा दुट्ठो वा मूढो वा जं पउंजइ पओगं ।
हिंसावि तत्थ जायइ तम्हा सो हिंसओ होइ ॥
- गाथा-[१११२] नि** न य हिंसामित्तेणं सावज्जेणावि हिंसओ होइ ।
सुद्धस्स उ संपत्ती अफला भणिया जिणवरेहिं ॥
- गाथा-[१११३] नि** जा जयमाणस्स भवे विराहणा सुत्तविहिसमग्गस्स ।
सा होइ निज्जरफला अज्झत्थविसोहिजुत्तस्स ॥
- गाथा-[१११४] नि** परमरहस्समिसीणं समत्तगणिपिडगझरितसाराणं ।
परिणामियं पमाणं निच्छयमवलंबमाणं ॥
- गाथा-[१११५] नि** निच्छयमवलंबता निच्छयओ निच्छयं अयाणंता ।
नासंति चरणकरणं बाहिरकरणालसा केई ॥
- गाथा-[१११६] नि** एवमिणं उवगरणं धारेमाणो विहीइ सुपरिसुद्धं ।
हवति गुणाणायतणं अविहि असुद्धे अणाययणं ॥
- गाथा-[१११७] नि** सावज्जमणायतणं असोहिठाणं कुसीलसंसग्गी ।
एगट्ठा होंति पदा एते विवरीय आययणा ॥
- गाथा-[१११८] नि** वज्जेत्तु अणायतणं आयतणगवेसणं सया कुज्जा ।
तं तु पुण अणाययणं नायव्वं दव्वभावेणं ॥
- गाथा-[१११९] नि** दव्वे रुद्धाइधरा अणायतणं भावओ दुविहमेव ।
लोइय लोगुत्तरियं तहियं पुण लोइयं इणमो ॥
- गाथा-[११२०] नि** खरिया तिरिक्खजोणी तालायर समण माहण सुसाणे ।
वग्गुरिय वाह गुम्मिय हरिएस पुलिंद मच्छंधा ॥
- गाथा-[११२१] नि** खणमवि न खमं गंतुं अणायतणसेवणा सुविहियाणं ।
जं गंधं होइ वणं तगंधं मारुओ वाइ ॥
- गाथा-[११२२] नि** जे अन्ने एवमादी लोगंमि दुगुंछिया गरहिया य ।
समणाण व समणीण व न कप्पई तारिसे वासो ॥
- गाथा-[११२३] नि** अह लोउत्तरियं पुणऽणायतणं भावतो मुणेयव्वं ।
संजमजोगाणं करेंति हाणि समत्यावि ॥
- गाथा-[११२४] नि** अंबस्स य निबस्स य दुण्हंपि समागयाइं मूलाइं ।
संसग्गीए विणट्ठो अंबो निबंतणं पत्तो ॥
- गाथा-[११२५] नि** सुचिरंपि अच्छमाणो नलयंबो उच्छुवाडमज्झंमि ।
कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते ॥
- गाथा-[११२६] नि** सुचिरंपि अच्छमाणो वेरुलिओ कायमणीय ओमीसे ।
न उवेइ कायभावं पाहन्नगुणेण नियएण ॥
- गाथा-[११२७] नि** भावुगअभावुगाणि य लोए दुविहाइं हुंति दव्वाइं ।
वेरुलिओ तत्थ मणी अभावुगो अन्नदव्वेणं ॥
- गाथा-[११२८] नि** ऊणगसयभागेणं बिंबाइं परिणमंति तब्भावं ।
लवणागराइसु जहा वज्जेह कुसीलसंसग्गीं ॥
- गाथा-[११२९] नि** जीवो अणाइनिहणो तब्भावणभाविओ य संसारे ।
खिप्पं सो भाविज्जइ मेलणदोसाणुभावेणं ॥
- गाथा-[११३०] नि** जह नाम महुरसलिलं सागरसलिलं कमेण संपत्तं ।
पावइ लोणियभावं मेलणदोसाणुभावेणं ॥
- गाथा-[११३१] नि** एवं खु सीलमंतो असीलमंतेहिं मेलिओ संतो ।
पावइ गुणपरिहाणीं मेलणदोसाणुभावेणं ॥

- गाथा-[११३२] नि** नाणस्स दंसणस्स य चरणस्स य जत्थ हइ उवघातो ।
वज्जेज्जऽवज्जभीरूं अणाययणवज्जओ खिप्पं ॥
- गाथा-[११३३] नि** जत्थ साहम्मिया बहवे भिन्नचित्ता अणारिया ।
मूलगुणपडिसेवी अणायतणं तं वियाणाहि ॥
- गाथा-[११३४] नि** जत्थ साहम्मिया बहवे भिन्नचित्ता अणारिया ।
उत्तरगुणपडिसेवी अणायतणं तं वियाणाहि ॥
- गाथा-[११३५] नि** जत्थ साहम्मिया बहवे भिन्नचित्ता अणारिया ।
लिंगवेसपडिच्छन्ना अणायतणं तं वियाणाहि ॥
- गाथा-[११३६] नि** आययणंपिय दुविहं दव्वे भावे य होइ नायव्वं ।
दव्वंमि जिणघराइ भावंमि य होइ तिविहं तु ॥
- गाथा-[११३७] नि** जत्थ साहम्मिया बहवे सीलमंता बहुस्सुया ।
चरित्तायारसंपन्ना आययणं तं वियाणाहि ॥
- गाथा-[११३८] नि** सुंदरजणसंसग्गी सीलदरिद्विपि कुणइ सीलद्धं ।
जह मेरुगिरिजायं तणंपि कणगतणमुवेइ ॥
- गाथा-[११३९] नि** एवं खलु आययणं निसेवमाणस्स हुज्ज साहुस्स ।
कंटगपहे व छलणा रागदोसे समासज्ज ॥
- गाथा-[११४०] नि** पडिसेवणा य दुविहा मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
मूलगुणे छट्ठाणा उत्तरगुणि होइ तिगमाई ॥
- गाथा-[११४१] नि** हिंसाऽलिय चोरिक्के मेहुन्न परिग्गहे य निसिमत्ते ।
इय छट्ठाणा मूले उग्गमदोसा व इयरंमि ॥
- गाथा-[११४२] नि** पडिसेवणा मइलणा भंगो य विराहणा य खलणा य ।
उवघाओ य असोही सलीकरणं च एगट्ठा ॥
- गाथा-[११४३] नि** छट्ठाणा तिगठाणा एगतरे दोसु वावि छलिएणं ।
कायव्वा उ विसोही सुद्धा दुक्खक्खयट्ठाए ॥
- गाथा-[११४४] नि** आलोयण उ दुविहा मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य ।
एक्केक्का चउकन्ना दुवग्ग सिद्धावसाणा य ॥
- गाथा-[११४५] नि** आलोयणा वियडणा सोही सब्भावदायणा चेव ।
निंदण गरिह विउट्टण सल्लुद्धरणंति एगट्ठा ॥
- गाथा-[११४६] नि** एत्तो सल्लुद्धरणं वुच्छामी धीरपुरिसपन्नत्तं ।
जं नाऊणं सुविहिया करंति दुक्खक्खयं धीरा ॥
- गाथा-[११४७] नि** दुविहा य होइ सोही दव्वसोही य भावसोही य ।
दव्वंमि वत्थमाई भावे मूलुत्तरगुणेसु ॥
- गाथा-[११४८] नि** छत्तीसगुणसमन्नागएण तेणवि अवस्स कायव्वा ।
परसक्खिया विसोही सुट्ठुवि ववहारकुसलेणं ॥
- गाथा-[११४९] नि** जह सुकुसलोऽवि विज्जो अन्नस्स कहेइ अप्पणो वाहिं ।
सोऊण तस्स विज्जस्स सोवि परिकम्ममारभइ ॥
- गाथा-[११५०] नि** एवं जाणंतेणवि पायच्छित्तविहिमप्पणो सम्मं ।
तहविय पागडतरयं आलोएतव्वयं होइ ॥
- गाथा-[११५१] नि** गंतूण गुरुसकास काऊण य अंजलिं विणयमूलं ।
सव्वेण अत्तसोही कायव्वा एस उवएसो ॥
- गाथा-[११५२] नि** नहु सुज्झई ससल्लो जह भणियं सासणे घुयरयाणं ।
उद्धरियसव्वसल्लो सुज्झइ जीवो पुयकिलेसो ॥

- गाथा-[११५३] नि** सहसा अण्णाणेण व मीएण व पिल्लिएण व परेण ।
वसणेणायंकेण व मूढेण व रागदोसेहिं ॥
- गाथा-[११५४] नि** जंकिंचि कयमकज्जं न हु तं लब्भा पुणो समायरिउं ।
तस्स पडिक्कमियव्वं न हु तं हियएण वोढव्वं ॥
- गाथा-[११५५] नि** जह बालो जंपंतो कज्जमकज्जं व उज्जुयं भणइ ।
तं तह आलोएज्जा मायामयविप्पमुक्को उ ॥
- गाथा-[११५६] नि** तस्स य पायच्छित्तं जं मग्गविऊ गुरू उवइसंति ।
तं तह आयरियव्वं अणवत्थपसंगभीएणं ॥
- गाथा-[११५७] नि** नवि तं सत्थं व विसं व दुप्पउत्तो व कुणइ वेयालो ।
जंतं व दुप्पउत्तं सप्पो वपमाइणो कुद्धो ॥
- गाथा-[११५८] नि** जं कुणइ भावसल्लं अनुद्धियं उत्तमट्ठकालंमि ।
दुल्लभहोहीयपत्तं अनंतसंसारियत्तं व ॥
- गाथा-[११५९] नि** तो उद्धरंति गारवरहिता मूलं पुणब्भवलयाणं ।
मिच्छादंसणसल्लं मायासल्लं नियाणं च ॥
- गाथा-[११६०] नि** उद्धरियसव्वसल्लो आलोइयनिंदिओ गुरुसगासे ।
होइ अतिरेगलहुओ ओहरियभरोव्व भारवहो ॥
- गाथा-[११६१] नि** उद्धरियसव्वसल्लो भत्तपरिन्नाए धणियमाउत्तो ।
मरणाराहणजुत्तो चंदगवेज्झं समाणेइ ॥
- गाथा-[११६२] नि** आराहणाइ जुत्तो सम्मं काऊण सुविहिओ कालं ।
उक्कोसं तिन्नि भवे गंतूण लभेज्ज निव्वाणं ॥
- गाथा-[११६३] नि** एसा सामायारी कहिया मे धीरपुरिसपन्नता ।
संजमतवड्ढगाणं निगंथाणं महरिसीणं ॥
- गाथा-[११६४] नि** एयं सामायारिं जुंजंता चरणकरणमाउत्ता ।
साहू खवंति कम्मं अणेगभवसंचियमणंतं ॥
- गाथा-[११६५] नि** एसा अनुगहत्था फुडवियडविसुद्धवंजणाइन्ना ।
इक्कारसहि सएहिं एगुणवन्नेहिं संमता ॥

* निज्जुत्ति गाहा-८१२

* भास-गाहा-३२२

* पक्खेव गाहा-३१

डो. मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधिता: संपादिता:
४१ ओहनिज्जुत्ति समत्ता